Maple EDUCATION

ANSWER KEY

सामाजिक अध्ययन

CLASS 6 To 8

Written By :
Anuja Arora

PURPLE STROKE

© All Rights Reserved Information contained in this book has been published by MAPLE EDUCATION (A UNIT OF PARI PUBLICATION) has been obtained by its authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of the knowledge. However, the publisher and its authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.
Warm Welcome for your suggestions and guidelines to improve the book for bright educational INDIA.

Quality Books For Better Education

PARI

PUBLICATION

A HOUSE OF CHILDREN BOOKS

Today A Reader...
Tomorrow A Leader.

Selection Book House

LEADING PUBLISHERS OF CHILDREN BOOKS

E-mail : pari_publication@yahoo.com

सामाजिक अध्ययन

Class - 6

अध्याय- 1. इतिहास : स्त्रोत तथा साक्ष्य

(क) (1) इतिहास प्राचीन घटनाओं का वास्तविक विवरण होता है। हमारे अतीत के जन-जीवन, विविध स्थानों एवं विविध घटनाओं का कालक्रमानुसार दस्तावेज होता है। (2) प्रारम्भ में इतिहास के अंतर्गत केवल धनाढ्य वर्ग के लोगों, शक्तिशाली राजाओं और उनके राज्यों, युद्धों आदि के विषय में ही जाना जाता था। किंतु अब इसके क्षेत्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि अनेक पक्ष सम्मिलित हो गए हैं। (3) मानव इतिहास का वह युग जिसकी कोई लिखित जानकारी उपलब्ध नहीं है, प्रागैतिहासिक काल कहलाता है। (4) प्राचीन काल 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर ईसा की सातवीं शताब्दी तक माना गया है। (5) पुरातात्विक स्त्रोत तीन प्रकार के होते हैं- अभिलेख, स्मारक और प्राचीन वस्तुएँ जैसे बर्तन, आभूषण, सिक्के आदि। (6) सिक्कों से विविध राजाओं के शासन, पुरानी अर्थव्यवस्था, राज्य के विस्तार एवं व्यापार तथा वाणिज्य की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। (7) धार्मिक साहित्य जैसे वेद, स्मृति, उपनिषद, पुराण, महाभारत, भगवद्गीता, रामायण आदि। राजाओं व सम्राटों, उनके राज्यों तथा समकालीन जन-जीवन के विषय में जानकारी देते हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. इतिहास की जानकारी के स्रोत है – पुरातात्विक स्रोत और साहित्यिक स्रोत। पुरातात्विक स्रोत तीन प्रकार के के होते है। (अ) अभिलेख – पत्थरों, धातुओं, शैलों, स्तम्भों की दीवारें, किलों की दीवारें, महलों, मंदिरों एवं मिट्टी या ताँबे की पट्टियों पर उपस्थित हस्तलेख आदि अभिलेख के रूप में जाने जाते है। इनसे राजाओं के नाम, उनसे संबंधित तिथियों, उनके राज्यों के विस्तार, शासन के दौरान घटित घटनाओं आदि की जानकारी प्राप्त होती है। (ब) स्मारक – ऐतिहासिक स्मारको के अन्तर्गत पुराने भवन या इमारतें, किले, महल, मंदिर, स्तूप आदि आते है। ये सभी वस्तुएँ है जो अतीत की सजीव तस्वीर प्रस्तुत करती है। ऐतिहासिक स्मारक चाहे खंडहर बन चुके हो अथवा सुरक्षित अवस्था में हो हमें इनके माध्यम से प्राचीन जन-जीवन की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। (स) अन्य वस्तुएँ – विविध प्रकार की प्राचीन वस्तुओं जैसे – बर्तन, धातु के पत्र, वस्त्र, आभूषण, सिक्के आदि भी ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करने के महत्वपूर्ण स्रोत है। सिक्कों द्वारा हमें विविध राजाओं के शासन, पुरानी अर्थव्यवस्था, राज्य के विस्तार तथा वाणिज्य की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। 2. इतिहास के साहित्यिक स्रोत हैं – अतीत के हस्तलिखित प्रमाण पांडुलिपि कहलाते हैं। ऐसे प्रमाण हमें विविध रुपों से प्राप्त होते है। जैसे – ताड़ वृक्ष की पत्तियाँ, भोजवृक्ष की छाल, पारंपरिक कागज आदि। (अ) धार्मिक साहित्य – ऐसे लेख जिनमे धार्मिक प्रावधान सम्मिलित पाए जाते है, धार्मिक साहित्य के अंतर्गत आते है। भारत के धार्मिक साहित्य के अंतर्गत ब्राह्मण साहित्य जैसे – वेद, स्मृति, पुराण, महाभारत, रामायण, भगवद गीता आदि आते है। (ब) लौकि साहित्य – धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक कृतियों में भी ऐतिहासिक घटनाओं, परंपराओं एवं अन्य जानकारियों के कोष है। पाणि के अष्टाधायी एवं पंतजलि के महाभाष्य से बहुमूल्य ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। (स) विदेशियों के वृतांत – यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स ने अपने इतिहास में भारत का उल्लेख किया है। यूनान के राजदूत मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में भारत का विस्तार से वर्णन किया है। **(ख)** (1) इतिहास हमारे अतीत के जन-जीवन, स्थानों एवं घटनाओं का कालक्रमानुसार दस्तावेज है। **इतिहास का महत्त्व :-** यह हमारे अतीत के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम अपने पूर्वजों के संघर्ष, उनके अनुभवों एवं उपलब्धियों के विषय में जान पाते हैं। इतिहास हमें राजाओं, उनके राज्यों तथा समकालीन जन-जीवन के विषय में जानकारी उपलब्ध कराता है। इतिहास हमें मानवीय संस्कृति एवं सभ्यता के सतत विकास की जानकारी उपलब्ध कराता है। विविध भाषाओं के स्त्रोतों तथा समाज की आधारभूत संरचना को समझने में सहायता करता है। इसके अध्ययन से हमें सामाजिक बुराइयों जैसे दास प्रथा, नस्लवाद, जातिवाद, निरक्षरता आदि तथा उनके दुष्परिणामों का ज्ञान होता है। इसके अध्ययन से हमें सहिष्णुता, बंधुतत्व, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व तथा सार्वभौम्य सौहार्द जैसे गुण प्राप्त होते हैं। **(2) इतिहास की जानकारी के अनेक स्त्रोत हैं** जैसे - (1) पुरातात्विक स्त्रोत- अभिलेख, स्मारक आदि (2) साहित्यिक स्त्रोत- धार्मिक, लौकिक एवं विदेशी यात्रियों के वृत्तांत आदि। **पुरातात्विक स्त्रोत** - समय गुजरने के साथ-साथ प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष धरती की गहराइयों में दफन हो गए। ऐसे अवशेषों को पुरातत्त्व वैज्ञानिक खोदकर बाहर निकालते हैं एवं उनका गंभीरता से अध्ययन करते हैं। **पुरातात्विक स्त्रोत तीन प्रकार के होते हैं :- (क) अभिलेख** - पत्थरों, धातुओं, शैलों, स्तंभों की दीवारें, किलों की दीवारें, महलों, मंदिरों एवं मिट्टी या ताँबे की पट्टियों पर उपस्थित हस्तलेख आदि अभिलेख के रूप में जाने जाते हैं। इनसे राजाओं के नाम, उनसे संबंधित तिथियों, उनके राज्यों के विस्तार, शासन के दौरान घटित घटनाओं आदि की जानकारी प्राप्त होती है। **(ख) स्मारक** - ऐतिहासिक स्मारक जैसे पुराने भवन, किले, महल, मंदिर, स्तूप आदि चाहे खंडहर बन चुके हों अथवा सुरक्षित अवस्था में हों हमें इनके माध्यम से प्राचीन जन-जीवन की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। **(ग) प्राचीन वस्तुएँ** - वस्तुएँ जैसे बर्तन, धातु के पत्र, वस्त्र, आभूषण सिक्के आदि भी ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते हैं। ऐसी वस्तुएँ हमें खुदाई के दौरान प्राप्त होती हैं। सिक्कों द्वारा हमें विविध राजाओं के शासन, पुरानी अर्थव्यवस्था, राज्य के विस्तार तथा वाणिज्य की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। **(3) साहित्यिक स्त्रोत** - अतीत के हस्तलिखित प्रमाण पांडुलिपि कहलाते हैं। ऐसे प्रमाण हमें विविध रूपों से प्राप्त होते हैं जैसे ताड़ वृक्ष की छाल, पारंपरिक कागज आदि। **धार्मिक साहित्य** - ऐसे लेख जिनमें धार्मिक प्रावधान सम्मिलित पाए जाते हैं, धार्मिक साहित्य के अंतर्गत आते हैं। भारत के धार्मिक साहित्य के अंतर्गत ब्राह्मण साहित्य जैसे वेद, स्मृति, पुराण, महाभारत, रामायण, भगवद्गीता आदि आते हैं। **लौकिक साहित्य** - धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक कृतियों में भी ऐतिहासिक घटनाओं, परंपराओं एवं अन्य जानकारियों के कोष हैं। पाणिनि के अष्टाध्यायी एवं पतंजलि के महाभाष्य

से बहुमूल्य ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। **विदेशियों के वृत्तांत** - यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स ने अपने ''इतिहास'' में भारत का उल्लेख किया है। इसी तरह चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में रहने वाले यूनान के राजदूत मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक ''इंडिका'' में भारत का विस्तार से वर्णन किया है। (4) इतिहासकार के माध्यम से हम वर्तमान में व्याप्त अनेक प्रकार की समस्याओं को गहनता से समझ सकते हैं तथा उनका हल निकाल सकते हैं। समाज में फैली बुराइयों तथा उनके दुष्परिणामों को मिटा कर हम स्वच्छ समाज एवं बेहतर विश्व का निमार्ण कर सकते हैं। इतिहास के अध्ययन से हमें सहिष्णुता, बंधुत्व, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व तथा सार्वभौम गुण प्राप्त होते हैं, जो हमारी प्रवृति का अंग बनकर हमें विश्व शांति एवं मानव जाति के शांतिपूर्ण विकास की ओर अग्रसर करते हैं। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** 1. व 2. य 3. र 4. द 5. ब 6. अ 7. स **(ङ)** 1. स 2. स 3. स **(च)** छात्र स्वयं करें। **परियोजना कार्य** – छात्र परियोजना कार्य स्वयं करें।

अध्याय- 2 मानव की विकास यात्रा

(क) (1) आदिमानव के औजार पत्थरों, हड्डियों, सींगों और लकड़ियों से बने होते थे। (2) आदिमानव जंगली पौधे, फल, मीठी जड़ें या बेर तथा कच्चा मांस खाकर जीवन बिताते थे। (3) पुरा पाषाण युग का प्रारंभ लगभग 5,00,000 ई. पू. में हुआ तथा 10,000 ई. पू. तक जारी रहा था। (4) नव पाषाण काल 10,000 ई. पू. से 4,000 ई. पू. तक का माना जाता है। (5) कृषि की खोज और पहिए का आविष्कार नव पाषाण काल में हुआ। (6) अग्नि की खोज पुरा पाषाण युग में हुई थी। (7) आवास तथा भोजन की खोज में आदिमानव निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता रहता था। इसी कारण आदिमानव को खानाबदोश या घुमंतू कहा जाता था। **(ख)** 1. आदिमानव आखेटक और घुमंतु प्राणी था। वह भोजन उत्पन्न करना नहीं जानता था। जंगली पौधे, मीठी जड़ें या बेर ही उसका प्राकृतिक भोजन था। धीरे-धीरे उसने जंगली जानवरों का शिकार करना सीखा तथा उनका कच्चा मांस खाना प्रारंभ किया। उसका आवास भी असुरक्षित था। अत: सुरक्षा की भावना ने इन्हें समूह में रहना सिखाया। सर्वप्रथम आदिमानव ने नुकीले पत्थरों का प्रयोग अपने औजारों के रूप में किया। बाद में हड्डियों, सींगों और लकड़ियों के हथियार बनाने लगे। 2. अग्नि की खोज के द्वारा आदिमानव को ऊष्मा और प्रकाश का ज्ञान हुआ। वह अग्नि का प्रयोग स्वयं को गरम रखने, अंधेरी गुफाओं में प्रकाश करने, सोते समय जंगली जानवरों को डराने तथा भोजन को भूनने के लिए करने लगा। आदिमानव अग्नि से इतना प्रभावित हुआ कि वह उसकी पूजा करने लगा। 3. मानव ने बुद्धि द्वारा नव पाषाण काल में पहिए का आविष्कार किया। एक गिरे हुए वृक्ष के गोल तने को काटकर तथा उसे ढलान पर लुढ़कता देख आदिमानव ने पहिए का आविष्कार किया। जिसके परिणाम स्वरूप आदिमानव ने पहिए वाली गाड़ी बनाई। इसके द्वारा भारी बोझ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता था। पहिए वाली गाड़ी ने यात्रा को सुगम और आरामदेह बना दिया। पहिए का प्रयोग करके आदि मानव ने सुंदर बर्तन, कातने और बुनने का कार्य भी प्रारंभ किया। 4. तीर कमान और हाँसिया जैसे औजारों का आविष्कार नव पाषाण काल में हुआ। हाँसिए से मानव अपनी फसलें काटता था तथा मूठ वाली कुल्हाड़ी द्वारा बढ़ईगिरी के विकास में उनकी मदद की। 5. ईसा के 4,000 ई. पू. के पश्चात् ताम्र-पाषाण काल आरंभ हुआ। मानव ने सर्वप्रथम तांबे की खोज की। तांबा पहली धातु थी जिसे मानव ने खोजा और इसका प्रयोग करना सीखा। ताम्र के बाद मानव ने टिन, जिंक और सीसा खोजा। उन्होंने पाया कि तांबा एक नर्म धातु है इसलिए उन्होंने तांबे को जिंक और सीसे के साथ मिश्रित करना सीखा। वे इस मिश्र धातु को कांसा कहते थे। कांसे और तांबे का उपयोग बर्तन और हथियार बनाने के लिए किया जाता था। आग, पहिए, कृषि और धातु की खोज के साथ ही मानव फूस की झोंपड़ियों में एक व्यवस्थित जीवन जीने लगा। पारिवारिक भावना का विकास हुआ। धीरे-धीरे यही झोंपड़ियों का झूंड गाँवों और बस्तियों का रूप ग्रहण करता चला गया। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **(ङ)** 1. च 2. ङ 3. घ 4. ग 5. ख 6. क **(च)** 1. अ 2. अ **(छ)** 1. आखेटक, घुमंतू 2. सूर्य, चन्द्रमा 3. नुकीले पत्थरों 4. पशुओं को पकड़ा 5. नव पाषाण **(ज)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **परियोजना कार्य** – छात्र स्वयं करें।

पाठ- 3 नगरीय संस्कृति का उद्‌भव : हड़प्पा की सभ्यता

(क) 1. हड़प्पा संस्कृति मध्य सिंधु नदी की घाटी में विकसित हुई। 2. 2600 ई. पू. में हड़प्पा तथा अन्य स्थानों पर पूर्णत: नगरीय सभ्यता का उदय हुआ। इसी कारण इस सभ्यता को 'प्रारंभिक हड़प्पा' या प्रारंभिक सिंधु संस्कृति कहा जाता है। 3. सिंधु घाटी सभ्यता पंजाब में सतलुज नदी पर रोपड़, राजस्थान में कालीबंगा, गुजरात में लोथल, रंगपुर तथा रोजदी, सिंध में आमरी तथा चन्हदड़ो, हरियाणा में बनावली आदि में विकसित थी। 4. सिंधु घाटी सभ्यता का ज्ञान 1921-22 ई. में भारतीय पुरातत्व द्वारा किये गए उत्खननों से हुआ। 5. सिंधु घाटी के लोग मिट्टी के बर्तन बनाते थे, कपड़े बुनते थे और लुहारगिरी करते थे। 6. हड़प्पा के लोग गाय-बैल, भेड़, बकरियाँ पालते थे। 7. कोठार गृह या अन्न भंडार गृह। **(ख)** 1. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि नगरों में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था थी। सिंधुवासी स्वच्छता के प्रति बहुत सचेत थे। उन्होंने जल निकासी के लिए भूमिगत नालियों की व्यवस्था की थी। घरों से निकलने वाली नालियों को भूमिगत नालों से जोड़ दिया जाता था। घरों के दूषित जल के बहाव के लिए ढकी हुई नालियों की व्यवस्था थी। नाले और नालियों की नियमित रूप से सफाई की जाती थी। 2. सिंधु घाटी सभ्यता के लोग नगर नियोजन में अत्यंत निपुण थे। वे नियोजित रूप से बसे हुए नगरों में निवास करते थे। नगर के दो प्रमुख भाग होते थे- (i) ऊपरी भाग या दुर्ग (ii) निचला भाग या नगर। (i) ऊपरी भाग या दुर्ग- यह नगर का ऊपरी भाग होता था, जो एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित था। यह संभवत: प्रशासनिक खंड होता था। जहाँ शासक वर्ग (पुरोहित तथा धनी व्यापारी) निवास करता था। दुर्ग मोटी तथा ऊँची दीवारों से घिरा होता था, जो इसे सिंधु की बार-बार आने वाली बाढ़ों से सुरक्षा प्रदान करता था। दुर्ग के अंदर विशाल स्नानघर, धान्य कोठार तथा सभागार स्थित थे। (ii) नगर- यह भाग आयताकार खंडों में बँटा था, जहाँ नगर के साधारण लोग रहते थे। चौड़ी सड़कें तथा गलियाँ परस्पर 90 डिग्री का कोण बनाते हुए जाल-सा बनाती थी। 3. कृषि सिंधु घाटी के लोगों का मुख्य व्यवसाय था। उनके खेत नदियों के निकट थे। उन्होंने जल आपूर्त्ति के लिए नहरें और बाँध बनाए। पशुओं को पालना भी एक प्रकार का व्यवसाय था। बैलों, साँडों, भैंसों, भेड़ों, सुअरों को पाला गया। ऊँटों और गधों को बोझ उठाने वाला पशु बनाया गया। बंदूकें तथा हथियार बनाना भी इनके व्यवसाय में शामिल था। इसके अतिरिक्त बढ़ई, लुहार, कुम्हार, खिलौने बनाने वाले और ईंट बनाने वाले शामिल थे। 4. 'मोहनजोदड़ो' का शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' है। यह नगर नौ बार नष्ट हुआ तथा पुन: बसाया गया। हड़प्पा, कालीबंगा, ढोलावीर, लोथल आदि नगर भी धीरे-धीरे नष्ट हो गए। ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा

संस्कृति की अधिकांश आबादी धीरे-धीरे गुजरात, पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर स्थानांतरित हो गई। हड़प्पा संस्कृति अचानक नष्ट नहीं हुई अपितु विनाश में कई सौ वर्ष का समय लगा। इतना ही नहीं अलग-अलग स्थानों पर संस्कृति के विनाश के कारण भी अलग-अलग थे। सिंधु घाटी के क्षेत्र में इस सभ्यता का विनाश भयंकर बाढ़ों के कारण हुआ तो सरस्वती नदी की घाटी में नदी के मार्ग बदल जाने के कारण जल की कमी से यह सभ्यता नष्ट हो गई। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों के आक्रमण से तत्कालीन सिंधु सभ्यता का लोप हो गया। 5. सिंधु के रहने वाले शांति प्रिय और प्रकृति-प्रेमी लोग थे। नगर नियोजन, जल निकासी, स्नानागर, बंदरगाह आदि उनकी अनुपम देन है। उनकी मिट्टी के बर्तनों की निर्माण कला भी अत्यंत प्रशंसनीय है। **(ग)** 1. नगर नियोजन -सिंधु घाटी सभ्यता के लोग नगर नियोजन में अत्यंत निपुण थे। वे नियोजित रूप से बसे हुए नगरों में निवास करते थे। नगर के दो प्रमुख भाग होते थे- (i) ऊपरी भाग या दुर्ग (ii) निचली भाग या नगर। (i) ऊपरी भाग या दुर्ग- यह नगर का ऊपरी भाग होता था, जो एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित था। यह संभवत: प्रशासनिक खंड होता था। जहाँ शासक वर्ग (पुरोहित तथा धनी व्यापारी) निवास करता था। दुर्ग मोटी तथा ऊँची दीवारों से घिरा था, जो इसे सिंधु की बार-बार आने वाली बाढ़ों से सुरक्षा प्रदान करता था। दुर्ग के अंदर विशाल स्नानघर, धान्य कोठार तथा सभागार स्थित थे। (ii) नगर- यह भाग आयताकार खंडों में बँटा था, जहाँ नगर के साधारण लोग रहते थे। चौड़ी सड़के तथा गलियाँ परस्पर 90 डिग्री का कोण बनाते हुए जाल-सा बनाती थी। 2. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि नगरों में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था थी। सिंधुवासी स्वच्छता के प्रति बहुत सचेत थे। उन्होंने जल निकासी के लिए भूमिगत नालियों की व्यवस्था की थी। घरों से निकलने वाली नालियों को भूमिगत नालों से जोड़ दिया जाता था। घरों के दूषित जल के बहाव के लिए ढकी हुई नालियों की व्यवस्था थी। नाले और नालियों की नियमित रूप से सफाई की जाती थी। 3. बर्तन निर्माण कला - सिंधु घाटी के कुम्हार चाक का प्रयोग करना जानते थे। इसकी मदद से वे विभिन्न आकारों और आकृतियों की वस्तुएँ बनाते थे। मिट्टी के बर्तनों को पकाकर इसकी सतह को चटख रंगों से रंगा जाता था। इन पर चिड़ियाँ, पशु और मानवीय आकृतियाँ बनाकर नक्काशी की जाती थीं। 4. मोहरें - सिंधु सभ्यता से संबंधित 2000 से अधिक मोहरें विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुईं। ये मोहरें गोलाकार या बेलनाकार होती थीं तथा मिट्टी से बनायी जाती थी। इन मोहरों पर पशुओं तथा मानव आकृतियों के चित्र अंकित हैं। ऐसा माना जाता है कि विभिन्न श्रेणियों के व्यापारी इनका प्रयोग अपने माल पर मोहर लगाने हेतु करते थे। इन मोहरों से हमें सिंधुवासियों के वस्त्र, आभूषण, धार्मिक विश्वास, व्यापारिक संबंध आदि की विस्तृत जानकारी मिलती है। एक मोहर में योगी की मुद्रा में आसीन देवता की आकृति जो जानवरों से घिरी दिखाई देती है, भगवान पशुपति के रूप में पहचानी गई है। 5. धातु कला - सिंधुवासी धातु कला में निपुण थे। वे काँस के उपकरण, हथियार, मूर्तियाँ बनाते थे। मोहनजोदड़ो में नृत्य की मुद्रा में प्राप्त एक काँस्य मूर्ति सिंधुकला का उत्कृष्ट नमूना है। 6. विशाल स्नानागार - मोहनजोदड़ो की खुदाई में एक सार्वजनिक स्नानागार पाया गया। यह 55 मी. लंबा और 35 मी. चौड़ा था। स्नानकुंड बीच में स्थित था जो 11.7 मी. लंबा और 6.9 मी. चौड़ा था। इसकी गहराई 2.4 मी. थी। इसका प्रयोग धार्मिक अवसरों या समारोहो में किया जाता था। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. ख 2. क 3. घ 4. ग **(च)** 1. ब 2. स 3. स **(छ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

पाठ- 4 आरंभिक राज्य - जनपद, महाजनपद एवं गणसंघ

(क) 1. गंगा के मैदानों में आर्यों द्वारा स्थापित किया गया एक छोटा राज्य जनपद कहलाता है। वैदिक समाज की कबीलाई सरंचना धीरे-धीरे समाप्त होती चली गई। क्षेत्रों की पहचान सत्ताधारी कबीलों के समूह के नाम पर होने लगी। कुरु, कांबोज, पांचाल, विदेह आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें जनपद कहा गया। 2. आर्यों द्वारा कुछ जनपदों को आपस में मिलाकर अथवा विजय प्राप्त करके बनाया गया। एक बड़ा राज्य महाजनपद कहलाता है। कुछ प्रमुख महाजनपद - कुरु, पांचाल, शूरसेन, मत्स्य, अंग, कौशल, काशी और मग्ध थे। 3. राजा बिम्बसार, अजातशत्रु और शिशुनाग मगध के शासक थे। 4. मुद्रा का चलन और विदेशी व्यापार ने मगध राज्य के विकास को गति प्रदान करने में सहायता की। 5. बौद्ध और जैन धर्म 600 ई.पू. के समय काल में फले फूले। 6. अजातशत्रु 7. 344 ई. पू. लगभग **(ख)** 1.राजतंत्र- ऐसा राज्य जिसका शासक वंश परम्परागत राजा हो। गणतंत्र - ऐसा राज्य जिसका वंश परम्परागत राजा नहीं हो। महाजनपद युग में समाज चार वर्णों में विभाजित हो गया था। वे थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मणों का कार्य धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराना और शिक्षा प्रदान करना होता था। क्षत्रिय लोग योद्धा हुआ करते थे। वैश्य लोग व्यापार और कृषि कार्य करते थे। शूद्रों का मुख्य कार्य अन्य उच्च वर्गों की सेवा करना था। श्रम कार्यों के विभाजन फलस्वरूप जाति व्यवस्था का जन्म हुआ। साथ ही एक अन्य वर्ग का जन्म हुआ जिसे अछूत कहा गया। इन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि ये समाज में गंदे समझे जाने वाले कार्यों को किया करते थे। कारीगरों, शिल्पकारों ने स्वयं को एक श्रेणी के रूप में संगठित कर लिया। समाज में ऊँची-जातियाँ आश्रमों द्वारा निर्देशित होती थी। जीवन में चार प्रकार की आश्रम अवस्थाएँ मानी गई हैं- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम। 3. मगध राज्य के शासकों के संबंध दूसरे राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण, राजनयिक एवं वैवाहिक थे। ये प्रजा का हाल-चाल जानने के लिए समय-समय पर राज्यों की यात्रा किया करते थे। राज्य के बड़े-बूढ़े राजा से सीधा सम्पर्क कर सकते थे। मगध के शासक अत्यन्त शान्तिप्रिय होने के कारण लोकप्रिय थे। इन्होंने आस-पास राज्यों पर विजय प्राप्त करके मगध राज्य को सुदृढ़ व शक्तिशाली बना दिया। 4. राजा बिम्बसार ने दूसरे राज्यों के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बंध स्थापित किए। इन्होंने सड़कों और पुलों का निर्माण किया। ये समय-समय पर प्रजा का हाल-चाल जानने के लिए राज्यों की यात्रा किया करते थे। बिम्बसार एक शांतिप्रिय शासक थे। अपने राज्य के मंत्रियों की एक समिति की सहायता से उन्होंने मगध पर भली-भाँति शासन किया। गाँवों के बड़े-बूढ़े उससे सीधा संपर्क कर सकते थे। वे उन अधिकारियों को दंडित किया करते थे जो अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया करते थे। 5. कृषि उत्पादन राजस्व प्राप्ति का मुख्य स्त्रोत था। कृषक अपने कुल उत्पादन का छठा भाग राजा को कर के रूप में देते थे। प्रारंभ में करों को अन्य वस्तुओं के रूप में वसूला जाता था। लेकिन मुद्रा का चलन के साथ ही करों को मुद्रा के रूप में संग्रहित किया जाने लगा। **(ग)** 1. गंगा के मैदानों में आर्यों द्वारा स्थापित किया गया एक छोटा राज्य जनपद कहलाता है। वैदिक समाज की कबीलाई सरंचना धीरे-धीरे समाप्त होती चली गई। क्षेत्रों की पहचान सत्ताधारी कबीलों के समूह के नाम पर होने लगी। कुरु, कांबोज, पांचाल, विदेह आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें जनपद कहा गया। 2. गणसंघ - 600 ई.पू. के लगभग ऐसे राज्य थे जिनका कोई वंशागत राजा नहीं था। ये राज्य गणसंघ के नाम से जाने जाते थे अर्थात् गणतंत्र। इनमें से कुछ गणसंघ थे- मिथिला के व्रज, कपिलवस्तु के शाक्य और पावा के मल्ल। 3. अजातशत्रु - अजातशत्रु बिम्बसार का पुत्र था। अजातशत्रु ने अपने

पिता का वध किया था। उसने अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए और अपने राज्य के विस्तार के लिए नीति अपनायी। दूसरे राजाओं की तरह अजातशत्रु ने भी वैवाहिक संबंध और राजनायिक संबंध बनाने की नीति जारी रखी। 4. कर प्रणाली - कृषि उत्पादन राजस्व प्राप्ति का मुख्य स्त्रोत था। कृषक अपने कुल उत्पादन का छठा भाग राजा को कर के रूप में देते थे। प्रारंभ में करों को अन्य वस्तुओं के रूप में वसूला जाता था। लेकिन मुद्रा का चलन के साथ ही करों को मुद्रा के रूप में संग्रहित किया जाने लगा। 5. आश्रमव्यवस्था समाज में ऊँची-जातियाँ आश्रमों द्वारा निर्देशित होती थी। जीवन में चार प्रकार की आश्रम अवस्थाएँ मानी गई है-ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम। 6. वैदिक धर्म - धर्म के पालन में ब्राह्मणों का वर्चस्व था। जिसमें रीति-रिवाजों और खर्चीले आयोजनों का होना सम्मिलित था। आम आदमी के द्वारा वेदों को समझना दुष्कर हो गया था क्योंकि इसकी शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। इसने मूल वैदिक धर्म का पालन करना अत्यंत दुष्कर और असाध्य बना दिया। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. स 2. द 3. ब 4. अ **(च)** 1. स 2. अ 3. ब **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

पाठ- 5 नवीन धार्मिक विचारों का प्रादुर्भाव

(क) 1. वैदिक युग में आर्यों ने चार वेदों, ब्राह्मणों, आरण्यकों तथा उपनिषदों की रचना की। इनमें उपनिषद सबसे महत्त्वपूर्ण वैदिक ग्रंथ माने जाते हैं। उपनिषदों की संख्या 108 ज्ञात है, जो 1000 ई.पू. तक के ऋषियों के विचारों को सम्मिलित करते हैं। उपनिषदों को प्राय: वेदांत कहा जाता है क्योंकि वे वैदिक युगों के अंत में लिखे गए। 2. बौद्ध धर्म की स्थापना भारत में सिद्धार्थ ने की जो गौतम बुद्ध के नाम से भी जाने जाते हैं। 3. जैन धर्म के तीन रत्न हैं - सही विश्वास करना, सच्चा और सही ज्ञान प्राप्त करना और सही आचरण करना। 4. मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग- 1. ध्यान 2. स्व.नियमन 3. स्व-निरोध **(ख)** 1. 'बृहदारण्यक' तथा 'छान्दोग्य' प्राचीनतम उपनिषद हैं, जो ईसापूर्व सातवीं या छठी शताब्दी में लिखे गए। उपनिषदों को प्राय: वेदांत कहा जाता है, क्योंकि वे वैदिक युगों के अंत में लिखे गए। उपनिषदों के अनुसार ईश्वर तथा आत्मा मूलत: समरूप हैं। दोनों में बाहरी अंतर होते हुए भी भौतिक एकता विद्यमान है। यह एकता ब्रहम तथा आत्मा के दो रूपों में स्पष्ट होती है। उपनिषद् आत्मा के पुर्नजन्म तथा कर्म के सिद्धांत की व्याख्या करते हैं। उपनिषदों ने भारतीय विचारधारा एवं दर्शन को बहुत प्रभावित किया है। 2. बौद्ध धर्म और जैन धर्म की शिक्षाएँ सरल थी और ये बहुत लोकप्रिय भी हुई। दोनों ही धर्मों का समानता में विश्वास था और उन्होंने जाति व्यवस्था को अस्वीकार किया। दोनों ही धर्म अहिंसा, कर्म (जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति) में विश्वास रखते थे। उनकी शिक्षाएँ आम आदमी की भाषा में थी अर्थात् प्राकृत् और पाली में। इन दोनों ही धर्मों के संस्थापकों ने अपने घरों का सत्य की तलाश के लिए त्याग किया था। 3. जैन एवं बौद्ध धर्मों के उदय के कारण- 1. दोनों धर्मों का उदय हिन्दू (सनातन) धर्म ही हुआ है। 2. दोनों धर्म वर्ण-व्यवस्था, छुआछूत के विरोधी थे। 3. दोनों धर्मों की भाषा आमजन की बोलचाल की भाषा (प्राकृत व पाली) थी। जिससे आमजन इनके उपदेशों को आसानी से समझता था। 4. दोनों धर्म कर्म में विश्वास करते थे। 5. दोनों धर्मों का अहिंसा एवं प्राणियों को लेशमात्र भी चोट नहीं पहुँचाने में विश्वास था। 4. बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षाएँ चार महान सत्यों पर आधारित हैं - मानव जीवन दु:खों से भरा है। इन दु:खों का मुख्य कारण तृष्णा है। इस तृष्णा का त्याग ही दु:खों का समाधान है। अष्टांगिक मार्ग का पालन करके तृष्णा को समाप्त किया जा सकता है। 5. महात्मा बुद्ध का अहिंसा अथवा पशुओं को चोट न पहुँचाने की भावना में विश्वास था। उनके अनुसार मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य निर्वाण अथवा मोक्ष प्राप्त करना है। उन्होंने जाति प्रथा को पूर्ण रूप से अस्वीकार किया। महात्मा बुद्ध ने ईश्वर का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है। वे भी हिंदुओं के अनुसार कर्म के सर्वोपरि होने पर विश्वास करते थे। बौद्ध धर्म के पवित्र लेख जिनमें महात्मा बुद्ध के उपदेश दिए गए हैं त्रिपिटक नाम से जाने जाते हैं। **(ग)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. घ 2. क 3. ङ 4. ख 5. ग **(च)** 1. ब 2. स 3. अ **(छ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

पाठ- 6 मौर्य साम्राज्य की स्थापना

(क) 1. चंद्रगुप्त के विषय में जानकारी इंडिका और अर्थशास्त्र नामक पुस्तकों में मिलती है। 2. कौटिल्य का वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था। वह चंद्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था। 3. चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। 4. सम्राट अशोक बिंदुसार के पुत्र थे। इनका जन्म 304 ई.पू. में हुआ था। बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात् 273 ई.पू. में राजकुमार अशोक उनकी गद्दी का उत्तराधिकारी बना। 5. चंद्रगुप्त का साम्राज्य पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में हिंदुकुश तक और उत्तर में हिमालय से दक्षिण में मैसूर की सीमाओं तक फैला हुआ था। 6. मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में पाँच वर्षों तक रहने वाला राजदूत था। 7. अशोक ने अनेक विहार, स्तूप एवं मठ, शिला स्तंभ, राज्यादेश के लिए शिलालेख तथा गुफाएँ बनवाई। **हॉट प्रश्न –** 1. कलिंग के युद्ध में 1,00,000 लोगों की मृत्यु हुई और 1,50,000 लोग घायल हुए अथवा कलिंग के युद्ध में बंदी बना लिए गए। 2. सम्राट अशोक द्वारा बनावाए गए स्तंभ बालू पत्थर के बने हुए थे। **(ख)** 1. मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था - राजा - मौर्य संसार के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक था। इसमें राजा ही सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हुआ करता था। मंत्रीमंडल - अपने प्रशासनिक कार्यों में राजा को मंत्रियों की समिति द्वारा सहायता मिलती थी, जो मंत्रीपरिषद के नाम से जानी जाती थी। राज्यपाल - सम्पूर्ण साम्राज्य कई प्रांतों में बँटा हुआ था। प्रत्येक प्रांत जिलों में विभाजित था। इन प्रांतों को एक राज्यपाल के अधीन प्रशासन हेतु सौंप दिया जाता था। राजुक - छोटे प्रांतों को राजुकों के अधीन सौंप दिया जाता था। मुखिया - प्रशासन के विभिन्न विभाग एक मुख्य अधिकारी के नियंत्रण में होते थे, जो मुखिया अथवा महामात्य के नाम से जाना जाता था। युक्ता - इन मुखियाओं के अधीन अधिकारियों को युक्ता कहा जाता था। 2. सम्राट अशोक द्वारा बनवाए गए स्तंभ बालू पत्थर के बने हुए और आकर्षक रूप में पॉलिश द्वारा चमकाए गए हैं। वे सूर्य के प्रकाश में सोने के समान दमकते हैं। प्रत्येक स्तंभ के शीर्ष पर एक पशु आकृति को बनाया गया है जैसे हाथी, बैल अथवा शेर। सारनाथ में पाए जाने वाले स्तंभ की ऊँचाई 23 मीटर है। इसके शीर्ष पर चार शेरों की प्रतिकृतियाँ बनाई गई हैं, जो एक-दूसरे के विपरित दिशा में बैठे हुए हैं। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित धम्म चक्र को हमारे राष्ट्रीय ध्वज में अंगीकार किया गया है। 3. मनुष्य जीवन के इतने भीषण संहार के दृश्य को देखकर सम्राट अशोक के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस युद्ध के संहार ने उसे बहुत उदास और दु:खी बना दिया। उसने प्रतिज्ञा ली कि अब वह कभी भी युद्ध नहीं करेगा और बाकी बचे जीवन को धर्म संदेश फैलाने में समर्पित कर देगा। 4. सम्राट अशोक अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करते थे और वे चाहते थे कि वह सुखी और शांतिमय जीवन व्यतीत करें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, उन्होंने धर्म, सामान्य प्रशासन और अच्छे आचरण के बारे में पत्थरों पर अभिलेखों और अध्यादेशों को जारी किया। उन्होंने अपनी प्रजा से सीधे संवाद स्थापित करने के लिए अपने अध्यादेशों और अभिलेखों का प्रयोग किया। 5.

सम्राट अशोक की मृत्यु के पश्चात् 232 ई. पू. में ही महान मौर्य साम्राज्य निम्नलिखित कारणों से बिखर गया- सम्राट अशोक के उपरांत कमजोर उत्तराधिकारी शासन को चलाने में असफल सिद्ध हुए। उसके उत्तराधिकारियों ने उसकी गद्दी का अधिकारी बनने की आपसी स्पर्धा ने राज्य को कमजोर कर दिया। राजधानी पाटलिपुत्र बहुत अधिक दूरी पर होने के कारण प्रांतीय राज्यपालों को स्वतंत्र रूप में स्वयं प्रशासन करने का प्रोत्साहन मिला। मौर्य शासन का अंतिम राजा बृहद्रथ अपनी सेना के सेनापति पुष्यमित्र के द्वारा मारा गया। उसने मगध में शुंग वंश की स्थापना की। **(ग)** 1. कौटिल्य का वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था। वह चंद्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था। 2. मेगस्थनींज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में पाँच वर्षों तक रहने वाला राजदूत था। 3. कलिंग युद्ध - कलिंग सम्राट अशोक द्वारा अपने उत्तराधिकारी के रूप में प्राप्त विशाल साम्राज्य की सीमा पर स्थित एक स्वतंत्र राज्य था। इसका दक्षिण भारत के जमीन और समुद्र से जाने वाले मार्गों पर नियंत्रण था। यह मौर्य साम्राज्य को समृद्धि प्रदान कर सकता था। सम्राट अशोक ने 261 ई.पू. में कलिंग पर आक्रमण कर दिया। कलिंग वासियों ने उससे कड़ा संघर्ष किया लेकिन अंत में पराजित हो गए। 4. बौद्ध धर्म - सम्राट अशोक के लिए बौद्ध धर्म एक प्रेम और अहिंसा सिखाने वाला धर्म था। बौद्ध धर्म के अनुसार मानव जीवन दुःखों से भरा हुआ है जिसका मुख्य कारण तृष्णा है। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. ब 2. द 3. ङ 4. स 5. अ 6. च **(च)** 1. ब 2. अ 3. अ **(छ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 7 नगरों एवं ग्रामों में जीवन : 600 ई. पू. से 300 ई.

(क) (1) भारत में द्वितीय नगरीकरण 600 ई. पू. के आसपास हुआ। (2) प्राचीन सिक्के, स्तम्भ आदि। (3) दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों के नाम हैं- मदुरै, वंजी, उरैयुर, पुहार और कोरकाई। (4) उत्तर में वाराणासी तथा पटना एवं दक्षिण में मदुरै तथा कांचीपुरम प्राचीनतम नगर हैं, जो आज भी विद्यमान है। (5) शिल्पकार गाँवों में रहते थे। (6) प्राचीन समय के स्त्रोत व्यावसायिक समुदायों और व्यापारिक संघों को इंगित करते हैं इन्हें ''श्रेणी'' कहा जाता है। **(ख)** (1) भारतीय उपमहाद्वीप में प्रथम नगरीकरण सिंधु घाटी प्रदेश में 2350 ई. पू. में प्रारंभ हुआ था। हड़प्पा संस्कृति मूलतः एक नगरीय संस्कृति थी, जिसमें नगरीय समाज बड़े नगरीय केंद्रों के चारों ओर फैले गाँवों पर निर्भर करता था। हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भारत में द्वितीय नगरीकरण 600 ई. पू. में आरंभ हुआ जिसके निर्माता उत्तर भारत में आर्य तथा दक्षिण भारत में द्रविड़ लोग थे। (2) भारत में नगरीकरण के प्रमुख चरण अर्थात् हड़प्पा युग में नर्मदा एवं ताप्ती के मुहानों तक मालवा के पठार पर नगरीय केन्द्र स्थापित हुए थे। द्रविड़ नगरीकरण का प्रादुर्भाव ईसा पूर्व पाँचवी शताब्दी में हुआ था। संगम साहित्य से ज्ञात होता है कि द्रविड़ संस्कृति का स्तर बहुत ऊँचा था। इसके बाद नगरीकरण भी उच्च कोटि का था। मदुरै, वञ्जी, उरैयुर, पुहार तथा कोरकाई प्रमुख तमिल नगर थे, जो पाण्ड्यों चोलों तथा चेरों के प्रारंभिक तमिल राज्यों की राजधानी थी। मंगस्थनीज तथा कौटिल्य ने भी मदुरै तथा काँचीपुरम नगरों का उल्लेख किया है। (3) उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य व्यापारिक सूत्र विकसित हुए और साथ ही उनके रोमन साम्राज्य के साथ भी व्यापारिक संबंध थे। व्यापारिक लोग गाँव से नगरों तक वस्तुएँ पहुँचाते थे। वे बैलगाड़ी, ऊँटों और खच्चरों के काफिले बनाकर अपनी वस्तुओं को लेकर यात्रा करते थे। इस काल के मुद्रित किए हुए तांबे और चाँदी के सिक्के पाए गए हैं। उस समय बहुत से व्यावसायिक समुदाय और व्यापारिक संघ हुआ करते थे जो अन्य देशों के साथ व्यापार में संलिप्त होते थे। (4) छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। (5) नगरों का विकास होने के साथ ही अधिकांश शिल्पकार नगरों में ही रहने लगे। कपड़ों की रंगसाजी और रेशमी कपड़ों की बुनाई जैसे- आजीविकाओं ने बहुत प्रगति कर ली थी। सुंदर और आकर्षक आभूषण बनाने की कला ने भी उन्नति प्राप्त की। इस काल में सिक्के गढ़ने का, मोतियों के आभूषण गढ़ने का और हाथी दाँत से वस्तुएँ गढ़ने का कारोबार होता था। **(ग)** छात्र स्वयं करें । **(घ)** छात्र स्वयं करें। **(ङ)** 1. द 2. स 3. ब 4. अ **(च)** 1. स 2. अ 3. अ **(छ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ **परियोजना कार्य –** छात्र स्वयं करें।

8. दूर देशों से भारत के संपर्क

(क) (1) दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के प्राचीन नाम चोल, चेर और पाण्डया थे। (2) बौद्ध धर्म भारत से प्रारंभ होकर श्रीलंका, बर्मा, थाइलैंड, इंडोनेशिया और अन्य दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में फैला। (3) चन्द्रगुप्त व बिन्दुसार (4) पेशावर और श्रीलंका (5) प्रथम चोल शासक करीकला था। उसने बहुत से राजाओं को परास्त किया जिनमें चेर और पाण्ड्या शासक भी सम्मिलित थे। (6) चेर शासकों ने रोमन राज्यों के सथ व्यापक व्यापारिक संपर्क स्थापित करके अपने राज्यों को सशक्त बनाया। **(ख)** 1. आर्थिक कारक- उत्पाद जैसे चावल, गेहूँ, मोती, रेशम, सूती सामान मसाले आदि का निर्यात होता था। धार्मिक कारक- धर्म के विस्तार में व प्रचार से सम्बन्धों में वृद्धि। कला व वास्तु शिल्प ने लोगों को अपनी और आकृषित किया। 2. व्यापारिक संबंध रोमन साम्राज्य से होते हुए मध्य एशिया, भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्वी एशिया तक फैले। इस समय के सबसे विख्यात व्यापारिक मार्गों पर कुषाणों का आधिपत्य था। जो मध्य एशिया से जाने वाले समुद्री मार्ग से लेकर सिंधु नदी के पतनों तक पर अपना वर्चस्व जमाए हुए थे। बहुत से उत्पाद जैसे चावल, गेहूँ, मोती, रेशमी, सूती, सामान, मसाले इत्यादि इस समुद्री मार्ग द्वारा निर्यात किये जाते थे। 3. बौद्ध तथा हिन्दू धर्म सुदूरवर्ती देशों में प्रचलित हुआ और वहाँ भारतीय रीति-रिवाज तथा परंपराएँ अपनायी गयी और इन धर्मों के मन्दिर स्थापित किए गए। बहुत से यूनानी शासकों ने हिन्दू धर्म अपनाया और उन्हें हल्दी ड्राज कहा गया। 4. भारत यूनानी शासक महेंद्र था। ये आक्रमणकारी यूनानी सेनापतियों के वंशज थे, जो फारस और उत्तरी अफगानिस्तान पर शासन कर रहे थे। सम्राट अशोक की मृत्यु के पश्चात् इन भारतीय यूनानियों ने भारत पर आक्रमण कर दिया और पाटलिपुत्र तक पहुँच गए। बैक्ट्रियाई शासक महेंद्र 160 ई. पू. से लेकर 120 ई. पू. तक शासक रहा। उसने कठियावाड़ और भरुच तक का भारतीय क्षेत्र अपने आधिपत्य में ले लिया। 5. सम्राट कनिष्ठ कुषाण राजवंश का सबसे महान राजा था। उनके साम्राज्य की सीमाएँ गांधार और कश्मीर से लेकर बनारस तक फैली थी। दक्षिण भारत में इसकी सीमाएँ विंध्य के पर्वतों तक जाती थी। भारत के बाहर इसके साम्राज्य की सीमाएँ अफगानिस्तान, बैक्ट्रिया, खोतान, काशगर और यारकंद तक फैली हुई थी। उसने बहुत से भारतीय शासकों को पराजित किया लेकिन इसकी सबसे बड़ी विजय चीनी सामाज्य के विरुद्ध रही। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ.)** 1. य 2. अ 3. ब 4. द 5. स 6. र **च.** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **परियोजना कार्य –** स्वयं करें।

पाठ- 9 गुप्त साम्राज्य

(क) 1. गुप्तवंश की स्थापना 'श्रीगुप्त' ने चौथी शताब्दी के अंत में की थी, जो मगध साम्राज्य के अधीन एक सामंत थे। 2. चंद्रगुप्त के पुत्र समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है। 3. समुद्रगुप्त एक महान विजेता, कलाओं और साहित्य का प्रेमी था। वह एक बहुमुखी प्रतिभावाला शासक, एक महान कवि और प्रख्यात संगीतज्ञ भी था।

उसके द्वारा मुद्रित किए गए एक सिक्के में उसको एक संगीत वाद्य वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। वह एक महान विद्ववान भी था। 4. हूण मध्य एशिया की क्रूर और बर्बर जाति थी। चंद्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् इन्होंने आक्रमण किया। 5. विक्रमादित्य ने मालवा, गुजरात और कोंकण तट के शक राजाओं को पराजित किया और गुप्त साम्राज्य की सीमाओं को अरब सागर तक पहुँचा दिया। उसने शक्री की उपाधि भी ग्रहण की। 6. समुद्रगुप्त एक महान विजेता, कलाओं और साहित्य का प्रेमी था। उसके साम्राज्य की सीमाएँ पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी से लेकर पश्चिम मे यमुना और चम्बल नदियों तक, उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैली हुई थी। 7. विक्रमादित्य को शक्री उपाधि दी गई थी। **हॉट प्रश्न –** 1. गुप्त राजवंश का प्रथम शासक श्रीगुप्त था। 2. गुप्तकाल का समूचा साम्राज्य कई प्रांतो में विभाजित था जिनको 'भूक्ति' कहा जाता था। **(ख)** 1. गुप्तकाल में विज्ञान एवं तकनीकी विकास - खगोलविद्या - आर्यभट्ट इस काल के एक प्रसिद्ध खगोलविद् और गणितज्ञ थे। उन्होंने ही प्रथमबार चंद्र और सूर्य ग्रहण के विषय में लिखा था। उन्होंने यह खोज की कि पृथ्वी अपने अक्ष पर सूर्य की परिक्रमा करती है। औषधि विज्ञान - ब्रह्मगुप्त, बाणभट्ट और धन्वन्तरि इस काल के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। धातु विज्ञान - दिल्ली के निकट महरौली में स्थित लौहस्तंभ इस बात का प्रमाण है कि इस काल में धातुकर्म का विज्ञान भी बहुत विकसित अवस्था में था। 2. गुप्तकाल में निर्मित इमारतें और मूर्तियाँ कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। इनके कार्यकाल में कला के सौंदर्य का बोध और निर्माण की उत्कृष्टता एवं शिल्प की उच्च दक्षता दिखाई देती है। ये कलाकृत्तियाँ साधारण दृष्ट्या धार्मिक कृत्यों से संबंध रखती हैं। सारनाथ में प्राप्त मूर्तियों और अभिलेखों में हिंदू और बौद्ध मंदिरों का साथ-साथ स्थापित होना दिखलाई पड़ता है। कुछ प्रसिद्ध गुप्तकाल की मूर्तियाँ और अभिलेख औरंगाबाद के निकट अंजता और एलोरा गुफाओं में राजोरी में, राजीव लोचन मंदिरों में, दिलवाड़ा के जगन्नाथ मंदिर में पाई गई हैं। 3. फाह्यान के अनुसार गुप्त शासक उदार तथा कुशल प्रशासक थे। उन्होंने प्रजा हित के अनेक कार्य किये। उन्होंने राजमार्गों पर विश्रामगृह बनावाएँ। जनता ईमानदार थी और कानूनों का पालन करती थी। शासक बौद्ध तथा ब्राह्मणों को उदारतापूर्वक दान देते थे। 4. छठी शताब्दी के मध्य तक, गुप्त साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और निम्नलिखित कारणों से विलुप्त हो गया - चंद्रगुप्त द्वितीय के उत्तराधिकारी उसका वास्तविक उत्तराधिकारी बनने के प्रयास में युद्ध करते रहे और कालांतर में अपने प्रशासन में अशक्त और अकुशल सिद्ध हुए। अधिकारियों को वेतन के स्थान पर भूमि प्रदान किये जाने के कारण वे समृद्ध हो गए और जब उन्होंने केन्द्र में राज्य को कमजोर व अशक्त पाया तब उन्होंने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। गुप्त साम्राज्य की विशालता ने इसके नियंत्रण में रखने के कार्य को दुष्कर बना दिया, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जब संचार के साधनों का इतना अधिक विकास नहीं हुआ था। निरंतर होने वाले हूणों के आक्रमण गुप्त साम्राज्य के लिए बहुत घातक सिद्ध हुए और गुप्त साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। 5. क्योंकि इस काल में प्रशासक सहृदय और उदार थे। प्रशासनिक व्यवस्था विभाजित थी। लोगों की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी थी। लोग स्वभाव से ईमानदार और कानून का पालन करते थे। यद्यपि गुप्तकाल में शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे लेकिन वे दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे। नाटककार, रचनाकार, व्याकरण, दर्शनशास्त्री और कवि जैसे कलाकार खूब फले फूले। इस काल में शिल्पकला और मूर्तिकला की उच्च दक्षता दिखाई देती है। **(ग)** 1. कालिदास - कालिदास एक प्रसिद्ध कवि और नाटककार थे। इन्होंने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नामक एक प्रसिद्ध नाटक लिखा था। 2. पंचतंत्र - बच्चों के लिए एक कहानी की पुस्तक जिसमें नैतिक ज्ञान की शिक्षा दी गई है पंचतंत्र कहलाती है। 3. आर्यभट्ट- आर्यभट्ट इस काल के एक प्रसिद्ध खगोलविद् और गणितज्ञ थे। उन्होंने ही प्रथमबार चंद्र और सूर्य ग्रहण के विषय में लिखा था। उन्होंने यह खोज की कि पृथ्वी अपने अक्ष पर सूर्य की परिक्रमा करती है। 4. फाह्यान - फाह्यान एक चीनी यात्री था, जिसकी बौद्ध धर्म में बड़ी रुचि थी। वह 399 ई. में रवाना हुआ तथा गोबी मरुस्थल को पार करता हुआ उत्तर-पश्चिम की ओर से भारत में प्रविष्ट हुआ। वह छः वर्षों तक गुप्त साम्राज्य का भ्रमण करता रहा। 5. लौह-स्तंभ 6. धन्वन्तरि - धन्वन्तरि एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. स 2. द 3. अ 4. य 5. ब **(च)** 1. ब 2. स 3.अ **(छ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

पाठ- 10 हर्ष, चालुक्य और पल्लवों का शासनकाल

(क) 1. हर्षवर्धन प्रभाकरवर्धन का पुत्र था। उन्हें 16 वर्ष की आयु में सिंहासन पर बिठा दिया गया था। वह एक विद्ववान थे तथा इन्होंने तीन संस्कृत नाटकों- रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागरनंदा की रचना की थी। 2. नालंदा गुप्त द्वारा स्थापित किये गए विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध है। 3. हवेन त्सांग एक चीनी बौद्ध यात्री था। वह भारत में बौद्ध साहित्य को एकत्रित करने के लिए और भगवान बौद्ध से संबंधित साहित्य को एकत्रित करने के लिए एवं बौद्ध धर्म स्थलों का भ्रमण करने के लिए आया था। 4. हर्षवर्धन ने तीन संस्कृत नाटकों- रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागरनंदा की रचना की थी। 5. चालुक्य वंश के संस्थापक राजा पुलकेशिन थे। 6. पल्लव शासकों में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया इनमें प्रसिद्ध मंदिर हैं महाबलीपुरम अथवा मम्मलापुरम का सात रथों वाला मंदिर जो राजा नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा बनवाया गया था। इन मंदिरों का आकार एक रथ के समान है। अत: इनको रथ मंदिर भी कहा जाता है। **(ख)** 1. एक राजधानी के रूप में कन्नौज अधिक उपर्युक्त था क्योंकि कन्नौज की केंद्रीय भौगोलिक स्थिति के कारण राज्य की बेहतर देख-रेख तथा प्रशासन संभव था तथा थानेश्वर के विपरित यह उत्तर-पश्चिम के सीमावर्ती आक्रमणों से भी सुरक्षित था। 2. हर्षवर्धन प्रारंभ में भगवान शिव और सूर्य देवता के उपासक थे। बाद में वह बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गए। बौद्ध धर्म में सुधार के लिए उन्होंने नए मठों का निर्माण करवाया और पुराने मठों की मरम्मत करवाई। वे प्रत्येक पाँच वर्षों के अंतराल के पश्चात् बौद्ध धर्म की धार्मिक, सभाओं का आयोजन कराते थे। बौद्ध भिक्षुओं को अनुदान, भूमि और धन के रूप में प्रदान किये गए। 3. चालुक्य शासक हिंदू थे लेकिन उन्होंने अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर रखी थी। उन्होंने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। बादामी में स्थित भगवान विष्णु का मंदिर, पट्टाडकल में स्थित शिव मंदिर और भगवान विष्णु का ऐबोल मंदिर अपनी धार्मिक और पौराणिक प्रभाव वाली शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है। अंजता और एलोरा के शिल्प और चित्रकारियाँ तथा वातापी का उत्कृष्ट पत्थरों पर उकेरे गए मंदिर का निर्माण चालुक्य शासक के संरक्षण में ही हुआ। 4. पल्लव शासक मंदिरों के महान निर्माता थे। पल्लव शासकों में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया इनमें प्रसिद्ध मंदिर हैं महाबलीपुरम अथवा मम्मलापुरम का सात रथों वाला मंदिर जो राजा नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा बनवाया गया था। इन मंदिरों का आकार एक रथ के समान है। अत: इनको रथ मंदिर भी कहा जाता है। ये मंदिर पत्थरों को काटकर बनाए गए मंदिरों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। 5. पल्लव काल में तमिल संतों ने भजनों की रचना की और अपने भजनों का भगवान की मूर्ति के समझ लोगों की उपस्थिति में गायन किया। इन्होंने अपनी उपासना का, लेखन का और

भक्तिपूर्ण भजनों को गाने का माध्यम तमिल भाषा को ही रखा। वे दो भगवानों- विष्णु और शिव में विश्वास रखते थे। इस भक्तिपंथ के प्रमुख प्रणेता था अल्वर और नयनार अनुयायी। तमिल संतों के उत्थान के कारण जैन धर्म और बौद्ध धर्म का दक्षिणी लोगों में प्रभाव क्षीण हुआ। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें। **(ङ)** 1. स 2. अ 3. ब 4. य 5. द 6. **(च)** 1. जीवनी रचयिता 2. बौद्ध धर्म, नालंदा विश्वविद्यालय 3. कन्नौज 4. वातापी 5. पल्लवों 6. महेन्द्र वर्मन 7. चालुक्यों **(छ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

पाठ- 11 भारत की संस्कृति एवं विज्ञान का विकास

(क) 1. वे काव्य जिनसे हमें महाभारत के युग की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का ज्ञान होता है, वे महाकाव्य कहलाते है। रामायण और महाभारत दो महान महाकाव्य हैं। 2. स्मृति ही पुराण कहलाती हैं, जैसे- महाभारत महाकाव्य इसमें भगवद्गीता भी सम्मिलित है। पुराण शब्द का आशय है प्राचीन। इसमें प्राथमिक पुराण की संख्या 18 है। 3. कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मेघदूतम् और मालविकाग्निमित्रम् इत्यादि महान काव्यों की रचना की। 4. तमिल युग में कुराल और संगम साहित्य की रचना हुई थी। 5. चिकित्सा के क्षेत्र में सुश्रुत और चरक ने मोतियाबिंद, पथरी और कई अन्य बीमारियों के लिए शल्य क्रिया करने के तरीकों का वर्णन किया था। आर्यभट्ट और धन्वन्तरि ने गुप्त युग में बीमारियों के उपचार के लिए विभिन्न तरीकों का उल्लेख किया था। 6. चीनी यात्री फाहियान 399 ई. में भारत आया था। 7. उपनिषदों की संख्या 108 है, जिसमें से ग्यारह अधिक प्रख्यात हैं जो प्रधान उपनिषदों के रूप में जाने जाते हैं। 'बृहदारण्यक' और 'छान्दोग्य' प्राचीनतम् उपनिषद हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. 'श्रुति-प्रस्थान' के नाम से वेद और उपनिषद को जाना जाता है। 2. 'टोल्काप्वियम' तमिल व्याकरण पर एक वैधानिक कार्य को कहा जाता है। **(ख)** 1. रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। यह भगवान् श्रीराम, सीता, हनुमान और रावण की कहानी है। राम और सीता भगवान विष्णु और लक्ष्मी के अवतार थे। यह एक लंबी कहानी है जिसमें राम, सीता के गुणों का गुणगान और अन्य आदर्श चरित्रों की महिमा का बखान किया गया है। 2. महाभारत कौरवों और पाण्डवों के मध्य संघर्ष की कहानी है। वे दोनों आपस में चचेरे भाई और संबंधी थे। दुर्योधन कौरवों में सबसे बड़ा पुत्र था। उसने पाण्डवों को राज्य में उनका हिस्सा देना अस्वीकार कर दिया था। इसके परिणामस्वरूप कुरुक्षेत्र में एक भयंकर युद्ध हुआ था। 3. लौकिक साहित्य धार्मिक साहित्य से पृथक है इसमें अन्य विद्याओं व नैतिक व अन्य विषयों से सम्बन्धित जानकारी मिलती है। जैसे- अर्थशास्त्र की रचना, सामाजिक उत्थान आदि से सम्बन्धित साहित्य और शिक्षण में जैसे- स्तूप - साँची, चरक - चिकित्सा। 4. स्तूप मिट्टी के टीले अथवा क्रबें जिसमें बुद्ध अथवा अन्य बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे होते हैं। जैसे खजुराहों का कण्डारिया, भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर आदि। स्तम्भ पत्थर को तराशकर बनाए जाते हैं। जैसे सारनाथ में बनाया गया शेरों के मुँह वाला केंद्रीय चिह्न मौर्यकाल की वास्तुकला का उदाहरण है। 5. पुरातन काल में भी औषधि विज्ञान बहुत विकसित अवस्था में था। महान चिकित्सक जैसे सुश्रुत और चरक ने मोतियाबिंद, पथरी और अन्य कई बीमारियों के लिए शल्य क्रिया करने के तरीकों का वर्णन किया था। आर्यभट्ट और धन्वन्तरि गुप्त युग के चिकित्सक थे। भारतीयों ने संख्याओं और दशमलव पद्धति को प्रारंभ किया था एवं शून्य की खोज की। अथर्ववेद में बीमारियों के उपचार के लिए विभिन्न तरीकों का उल्लेख मिलता है। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** छात्र स्वयं करें। **(ङ)** 1. स 2. अ 3. द 4. ब 5. य **(च)** 1. ब 2. स 3. अ **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 12 सौरमंडल में हमारी पृथ्वी की स्थिति

(क) 1. पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति लगभग 350 करोड़ वर्ष पूर्व हुई थी। 2. पृथ्वी का आकार गोल है। 3. अरस्तु तथा कॉपरनिक्स ने घोषणा की थी कि पृथ्वी भूमध्य रेखा पर थोड़ा फैलाव लिए हुए है तथा यह अपने ध्रुवों पर आंशिक रूप से समतल है। 4. संपूर्ण अंतहीन रिक्त स्थान अथवा अंतरिक्ष जिसमें समस्त आकाशीय पिंड अथवा संरचनाएँ पायी जाती हैं, ब्रहमाण के रूप में जाना जाता हैं 5. तारे हीलियम व हाइड्रोजन से बने जलते हुए गैसीय गोले हैं। 6. हैली नामक धूमकेतु प्रत्येक 76 वर्ष बाद दिखाई देता है। 7. सौरमंडल में सम्मिलित खगोलीय पिंडो के नाम हैं - आठ ग्रह, सौ से अधिक उपग्रह, लाखों की संख्या में क्षुद्र, ग्रह, उल्काएँ तथा असंख्य धूमकेतु। **(ख)** 1. पृथ्वी हमारे सौरमंडल में एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन का अस्तित्व पाया जाता है। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व पाया जाता है। पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व का प्रमुख कारण इसके धरातल पर उपस्थित जल, वायु तथा उपयुक्त तापमान हैं। पृथ्वी पर उपस्थित वायुमंडल के एक बडे भाग की रचना करने वाला प्रमुख घटक ऑक्सीजन है। ऑक्सीजन गैस के कारण ही हमारी पृथ्वी पर जीवन का अस्तित बना है। अत: ऑक्सीजन एक जीवनदायी गैस कही जा सकती है। पृथ्वी पर उपस्थित वायुमंडल इसके धरातल को बहुत अधिक ठंडक अथवा गरमी से सुरक्षित बनाए रखता है। 2. प्राचीन काल में लोगों की अवधारणा थी कि पृथ्वी का आकार समतल है। उनका सोचना था कि यदि वे यात्रा करते हुए पृथ्वी के किनारों पर पहुँच गए तो वहाँ से नीचे गिर सकते हैं। उसके उपरांत कुछ विद्वान ऐसे थे जो पृथ्वी को समतल मानने से इंकार करते थे तथा इसे गोल बताते थे। अरस्तु तथा कॉपरनिक्स ने घोषणा की थी कि पृथ्वी भूमध्य रेखा पर थोड़ा फैलाव किए हुए है तथा यह अपने ध्रुवों पर आंशिक रूप से समतल है। मैगलन तथा ड्रेक ऐसे नाविक थे जिन्होंने अपनी सागरीय यात्रा द्वारा स्पष्ट कर दिया था कि पृथ्वी अपने आकार में समतल न होकर गोलाकार है। 3. तोरे हीलियम व हाइड्रोजन से बने जलते हुए गैसीये गोले होते हैं। इनमें ऊष्मा तथा प्रकाश पाया जाता है। हमारा सूर्य भी एक तारा है। अंतरिक्ष में सूर्य से भी बड़े आकार के तारे विद्यमान हैं। तारे हमारी पृथ्वी से अत्यधिक दूर स्थित होने के कारण छोटे दिखाई देते हैं। किसी सामान्य तारे का संभावित जीवन लगभग 10 अरब वर्ष होता है। 4. सूर्य सौरमंडल का मुखिया है। सूर्य भी एक तारा है। यह पृथ्वी के अत्यधिक निकट स्थित होने के कारण आकार में बड़ा दिखाई देता है। इसमें मुख्यत: हाइड्रोजन व हीलियम गैसें समाविष्ट हैं। सूर्य की सतह का तापमान 6000^{0} से. है। सूर्य की पृथ्वी से दूरी लगभग डेढ़ करोड़ किलोमीटर है। सूर्य का प्रकाश लगभग तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकेंड की गति से गमन करता है। 5. ग्रह - ग्रह आकाशीय पिंड हैं जो सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं। सभी ग्रह प्रकाश तथा ऊष्मा सूर्य से ही ग्रहण करते हैं। ये सूर्य के चारों ओर दीर्घवृत्ताकार पथ पर गति करते हैं। हमारी पृथ्वी भी एक ग्रह है। पृथ्वी के अतिरिक्त सात ग्रह हैं - बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण और वरुण। सौरमंडल में विद्मान कुछ ग्रह शैलों से बने हैं जबकि कुछ ग्रहों की रचना में गैसीय तत्वों की प्रधानता पायी जाती है। उपग्रह - आकाश में उपस्थित ऐसे पिंड जो दूसरे आकाशीय पिंडो अर्थात् ग्रहों की परिक्रमा करते हैं, उपग्रह कहलाते हैं। पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह है- चंद्रमा। उपग्रहों का अपना प्रकाश नहीं होता है। ये प्रकाश सूर्य से प्राप्त करते हैं। सौरमंडल में सबसे बड़ा उपग्रह गनिमेडे है, जबकि सबसे छोटा उपग्रह डी-मोस है। 6. धूमकेतु ऐसे विशेष खगोलीय पिंड होते हैं जो सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं, किन्तु इनका परिक्रमा पथ काफी विशाल होता है। ये रात्रि के समय आकाश में आकर्षक एवं

चमकीले तारों के रूप में दिखाई देते हैं। इनकी एक जलती हुई पूँछ जैसी आकृति होती है। इसलिए इन्हें पुच्छल तारों की संज्ञा भी दी जाती है। हेली नाम का धूमकेतु प्रत्येक 76 वर्ष बाद दिखाई देता है। स्मिथ टटल नाम धूमकेतु 5 किमी. चौड़ा है। यह पिछली बार 1992 में देखा गया था। यह 60 किमी. प्रति सेकेंड की गति से 17 अगस्त, 2116 को पृथ्वी से टकराएगा। यदि यह सीधा टकराया तो यह हिरोशिमा एटम बम से 16 लाख गुना अधिक भयंकर साबित होगा। 7. सूर्य तथा उसके परिवार जिसमें आठ ग्रह, सौ से अधिक उपग्रह, लाखों की संख्या में क्षुद्र ग्रह, उल्काएँ तथा असंख्य धूमकेतु सम्मिलित हैं, सौरमंडल कहलाता है। सूर्य इस परिवार के केन्द्र में स्थित है। सभी आठ ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। जिस पथ पर ये ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं वह कक्षा कहलाता है। ग्रहों की कक्षाएँ दीर्घ वृत्ताकार होती हैं। सूर्य से अपनी दूरी के अनुसार आठ ग्रह हैं- बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण तथा वरुण। **ग.** 1. स 2. द 3. र 4. ल 5. अ 6. ब 7. य **घ.** छात्र स्वयं करें। **ङ.** 1. बुध 2. हैली 3. कक्षा 4. सिअर्स 5. चन्द्रमा **परियोजना कार्य – छात्र स्वयं करें।**

अध्याय- 13 ग्लोब तथा मानचित्र

(क) 1. पृथ्वी के लघु प्रतिरूप को ग्लोब कहते हैं। 2. आधुनिक ग्लोब प्लास्टिक के बने हुए होते हैं जिन्हें मोड़कर अपने साथ किसी भी अन्य स्थान पर लाया-ले जाया सकता है। 3. ग्लोब पर संपूर्ण पृथ्वी अथवा उसके किसी एक भाग की सूक्ष्म दशाओं को चित्रित करना संभव नहीं है। 4. अक्षांश रेखाएँ काल्पनिक रेखाएँ हैं जो भूमध्य रेखा के समांतर चलती हैं। 5. भूमध्य रेखा एक काल्पनिक रेखा है जो पृथ्वी के दक्षिणी व उत्तरी ध्रुवों के ठीक मध्य भाग से गुजरती है। 6. पृथ्वी के ताप को कटिबंध कहते है। जैसे विषुवत अथवा भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती है तो वह क्षेत्र गर्म रहते है, जिन क्षेत्रों में तिरछी पड़ती है अधिक गर्म नहीं रहते। इस प्रकार पृथ्वी के ताप को कटिबंध कहते है। 7. शीतोष्ण कटिबंध उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क वृत्त एंव आर्कटिक वृत्त के बीच तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर वृत्त तथा अंटार्कटिक वृत्त के मध्य में स्थित है। इस कटिबंध में सूर्य की किरणें सदैव तिरछी पड़ती हैं। 8. ग्रीनविच का स्थानीय समय जिसे पूरे विश्व में मानक समय माना जाता है। 9. मानचित्र संपूर्ण पृथ्वी अथवा उसके किसी एक भाग का लघुकृत चित्र होता है। 10. कथन विधि के अंतर्गत मानचित्र पर अंकित बिंदुओं की दूरी कथन द्वारा स्पष्ट की जाती है। जैसे किसी एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी यदि 25 किमी. है तो हम दूरी को मानचित्र पर 2.5 सेमी के रूप में दर्शाते हैं। जिसका अर्थ है पैमाना 1 सेमी = 10 किमी.। **(ख)** 1. ग्लोब पृथ्वी का वास्तविक प्रतिरूप होता है। ग्लोब पर ध्रुव, अक्षांश, देशांतर, महासागर, महाद्वीप आदि सभी को सही-सही रूप में चित्रित किया जा सकता है। किंतु ग्लोब पर विविध प्रकार की सूचनाओं जैसे कि राज्य, नगर, सड़के आदि को स्पष्ट चित्रित करना असंभव है। इसके अतिरिक्त इसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाना-ले जाना भी कोई सरल कार्य नहीं है यद्यपि आज प्लास्टिक के ग्लोब भी उपलब्ध हैं जिन्हें मोड़कर लाया-ले जाया जा सकता है। ग्लोब की सबसे बड़ी विशेषता उसका धूरी पर पृथ्वी की भाँति घूर्णन करना है। 2. अक्षांश रेखाएँ काल्पनिक रेखाएँ होती हैं जो भूमध्य रेखा के समानतर चलती है। भूमध्य रेखा हमारी पृथ्वी के दक्षिणी व उत्तरी धुव्रों के ठीक मध्य से गुजरती है। यह पृथ्वी को दो समान रेखाओं में विभाजित करती है। भूमध्य रेखा को 0° से नामांकित किया जाता है। ग्लोब पर भू-मध्य सहित 181 अक्षांश रेखाएँ होती है। घुव्रों को 90° से नामांकित किया जाता है। भूमध्य रेखा से उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव तक 90° अक्षांश खींची गई हैं। 90° उत्तरी अक्षांश उत्तरी ध्रुव दर्शाता है तथा 90° दक्षिणी अक्षांश दक्षिणी ध्रुव दर्शाता है। 3. महत्त्वपूर्ण अक्षांश रेखाएँ विषुवत : विषुवत रेखा पृथ्वी को दो समान भागों में विभाजित करती है। यह पृथ्वी के मध्य दोनों ध्रुवों से समान दूरी पर स्थित है। इसके अंतर में उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिण में दक्षिण गोलार्द्ध स्थित है। यह ग्लोब पर सबसे बड़ा वृत्त बनाती है। कर्क रेखा - यह रेखा $23\frac{1}{2}^{\circ}$ उत्तर में उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। मकर रेखा - यह रेखा $23\frac{1}{2}^{\circ}$ दक्षिण में दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। आर्कटिक वृत्त - यह रेखा $66\frac{1}{2}^{\circ}$ उत्तरी अक्षांश में स्थित है। इस वृत्त पर 21 जून को 24 घंटे प्रकाश रहता है। अंटार्कटिक - यह रेखा $66\frac{1}{2}^{\circ}$ दक्षिणी अक्षांश में स्थित है। यहाँ 22 दिसंबर को 24 घंटे प्रकाश रहता है। 4. ग्लोब पर कुछ ऐसी रेखाएँ होती हैं जो दोनों ध्रुवों को जोड़ती हैं। ये सभी रेखाएँ दोनों ध्रुवों पर मिलती हैं। ये अक्षांश रेखाओं की भाँति समांतर नहीं होती हैं। ये रेखाएँ देशांतर अथवा मध्याह्न रेखाएँ कहलाती है। **विशेषताएँ –** देशांतर रेखाएँ ध्रुवों पर आकर मिलती हैं। सभी देशांतर रेखाएँ अर्द्धचंद्राकार गोले होती है। ये रेखाएँ हमें पृथ्वी पर विविध क्षेत्रों के समय निर्धारण में मदद करती हैं। देशांतर रेखाओं की दूरी विषुवतीय क्षेत्र में सबसे अधिक होती है। यह ध्रुवों के निकट पहुँचने तक घटती चली जाती है। किसी समान देशांतर में स्थिर क्षेत्र में स्थानीय समय एक समान होता है। 5. अक्षांशों व देशांतरों रेखाओं से बनने वाले जाल को ग्रिड कहते हैं। यह तंत्र पृथ्वी के ग्लोब रुपी प्रतिरूप पर विविध स्थानों की अवस्थिति ज्ञान प्राप्त करने में विशेष सहायता देता है। 6. किसी स्थान पर सूर्य जब आसमान में सर्वाधिक ऊपर अथवा उर्ध्वाधर स्थिति में होता है तो उस समय दिन के 12 बजे होते हैं। इस समय के अनुरूप निर्धारित की गई घड़ियों के समय को इस स्थान का स्थानीय समय कहते हैं। किसी देशांतर पर स्थित सभी स्थानों का स्थानीय समय होता है।7 . मानचित्र संपूर्ण पृथ्वी अथवा उसके किसी भाग का लघुकृत चित्र होता है जिसकी रचना किसी विशेष पैमाने के अनुसार की जाती है। मानचित्र एक द्वि-विमीय चित्र होता है। मानचित्र पृथ्वी धरातल की विविध भौतिक विशेषताओं तथा पर्वतों, मैदानों, पठारों, झीलों, महासागरों आदि को स्पष्ट रूप से दिखाता है। मानचित्रों के माध्यम से जनसंख्या, उद्योगों, राज्यों, नगरों आदि का मानचित्र भी बनाए जा सकते हैं। मानचित्र विविध प्रकार के होते हैं जैसे राजनैतिक मानचित्र, भौतिक मानचित्र, जलवायु मानचित्र, वनस्पति मानचित्र, ऐतिहासिक मानचित्र आदि। 8. मानचित्र के अध्ययन के लिए दिशाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है। चार प्रमुख दिशाएँ होती हैं- उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। जब हम किसी मानचित्र को देखते हैं तो उसका शीर्ष उत्तर दिशा को प्रकट करता है। नीचे का सिरा दक्षिण दिशा को। इसी तरह मानचित्र के दाईं ओर पूर्व तथा बाईं ओर पश्चिम स्थित होता है। इन चार दिशाओं के अतिरिक्त चार उपदिशाएँ भी होती हैं जैसे उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व। **(ग)** छात्र स्वयं लिखे। **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से करें। **(ड)** 1. स 2. य 3. र 4. ब 5. अ 6. द **(च)** 1. अंतराष्ट्रीय 2. कच्ची सड़क 3. बड़ी लाइन 4. नदी 5. मंदिर 6. तालाब पानी वाला 7. वृक्ष 8. प्रकाश स्तम्भ 9. गाँव 10. बैलगाड़ी मार्ग **(छ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

पाठ- 14 पृथ्वी की गतियाँ

(क) 1. पृथ्वी की दो गतियाँ हैं- घूर्णन गति और परिभ्रमण गति। 2. पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर गति करती है। 3. पृथ्वी एक घूर्णन को लगभग 24 घंटे में पूरा करती है। 4. प्रत्येक चौथा वर्ष जिसमें 366 दिन होते हैं लीप वर्ष कहलाता है। 5. सूर्य के उदय होने से पहले का समय जब हल्का सा विकसित प्रकाश दिखाई देता है उसे ऊषा काल कहते हैं। 6. यदि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूर्णन नहीं करती तो उसके सूर्य के सामने उपस्थित भाग में सदैव दिन रहता तथा दूसरे भाग में सदैव रात बनी रहती।

अत: दिन के विविध काल कभी अनुभव नहीं होते। 7. पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ एक परिक्रमा पूरी करने में 365 दिन तथा 6 घंटे का समय लेती है। 8. 21 मार्च तथा 23 सितंबर को दिन रात बराबर होते हैं। 9. परिभ्रमण गति के फलस्वरूप ऋतु परिवर्तन होता है। 10. 23 सितंबर को सूर्य विषुवत वृत्त पर लंबवत् चमकता है। इस समय उत्तरी गोलार्द्ध में शरद तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बसंत ऋतु होती है। कर्क तथा मकर वृत्तों में दिन व रात की अवधि बराबर होती है। **(ख)** 1. पृथ्वी की दो गतियाँ हैं- घूर्णन गति और परिभ्रमण गति। पृथ्वी की धुरी का उत्तरी छोर उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी छोर दक्षिणी ध्रुव कहलाता है। पृथ्वी अपने इस अक्ष पर या धुरी पर निरंतर घूर्णन करती रहती है। पृथ्वी की इस गति को उसकी, घूर्णन गति कहते हैं। पृथ्वी एक घूर्णन को लगभग 24 घंटे में पूरा करती है। पृथ्वी की इस गति के परिणाम स्वरूप दिन-रात होते हैं। पृथ्वी के घूर्णन से दिन-रात होते हैं और जब यह अपने अक्ष पर घूर्णन करती है तो इसका प्रत्येक भाग बारी-बारी से सूर्य के सामने आता है। अत: जिस समय पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने होता है, उसे सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है वहाँ दिन होता है। इसके विपरित का जो भाग सूर्य से परे रहता है उसे सूर्य का प्रकाश प्राप्त नहीं होता है। अत: वहाँ रात होती है। पृथ्वी की घूर्णन गति को उसकी दैनिक गति भी कहते हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर लट्टू की भाँति घूमते हुए एक दीर्घवृत्ताकार कक्षा में पश्चिम से पूर्व की ओर तीव्र गति से सूर्य के चारों तरफ परिक्रमा भी करती है। इसे पृथ्वी की परिभ्रमण गति कहते हैं। पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ एक परिक्रमा पूरी करने में 365 दिन तथा 6 घंटे का समय लेती है। यह समयावधि एक वर्ष के रूप में मानी जाती है। कैलेंडर वर्ष में 365 दिन मनाये जाते हैं। 6 घंटे के शेष समय को चार वर्षों में जोड़कर 366 दिन का अधि-वर्ष या लीप वर्ष बनता है। इस वर्ष में फरवरी मास में 29 दिन होते हैं। प्रत्येक चौथा वर्ष अधि-वर्ष होता है। 2. प्रात: काल सूर्योदय से लेकर मध्य रात्रि तक के बीच हम दिन के विभिन्न कालों का अनुभव करते हैं - ऊषा काल- सूर्य के उदय होने से पहले हमें हल्का सा विकसित प्रकाश दिखाई देता है जिसे ऊषा की संज्ञा दी जाती है। सूर्योदय सूर्य जब उत्तरी क्षितिज पर प्रकट होता है, तो उसकी किरणें तिरछी होती हैं। मध्याह्न अथवा दोपहर - सूर्य धीरे-धीरे आकाश में ऊपर चढ़ता जाता है। दोपहर के समय किसी स्थान पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। सूर्यास्त - शाम के समय सूर्य पश्चिम क्षितिज में उतरता हुआ प्रतीत होता है और छिप जाता है। गोधूलि - सूर्यास्त के बाद कुछ समय तक सूर्य का मद्धिम प्रकाश होता है। यह समय गोधूलि के रूप में जाना जाता है। मध्य रात्रि - जब सूर्य द्वारा प्रकाशित पृथ्वी का हिस्सा सूर्य से पूर्णत: विमुख हो जाता है तो वहाँ पूर्ण अंधकार होता है, जिसे मध्य रात्रि कहते हैं। 3. किसी मेज पर ग्लोब और लैंप को एक-सी रेखा में रखिए। अब लैंप को जलाइए। लैंप की रोशनी ग्लोब के एक हिस्से को प्रकाशित करती है। जबकि दूसरा हिस्सा लैंप के परे होने के कारण प्रकाशित नहीं हो पाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि ग्लोब का जो भाग लैंप द्वारा प्रकाशित होता है वह दिन निकलने का प्रतीक है तथा इसके विपरित जो भाग अंधेरे में रहता है वह रात्रि अथवा रात का प्रतीक होता है। 4. पृथ्वी की धुरी उसकी परिक्रमा पथ पर समानांतरता लिए हुए नहीं पायी जाती है। यह $23\frac{1}{2}^{0}$ के कोण पर लंबवत् रेखा पर झुकी हुई है। पृथ्वी के इस झुकाव के परिणामस्वरूप पृथ्वी अपने सीधे कोण के बजाय $66\frac{1}{2}^{0}$ का कोण बनाती है। घूर्णन के समान पृथ्वी की परिक्रमा करने की दिशा भी घड़ी के विपरित अर्थात् पश्चिम से पूर्व दिशा होती है। यदि आप पृथ्वी के परिभ्रमण से संबंधित चित्र को सावधानीपूर्वक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि पृथ्वी अपनी धुरी पर थोड़ी झुकी हुई है। अत: उसका एक गोलाद्ध सूर्य का सामना करता है तो उसके बाद ही उसका दूसरा गोलार्द्ध सूर्य के सामने आ पाता है। यही कारण है जिससे पृथ्वी पर मौसम संबंधी विविधताएँ उत्पन्न होती हैं, जिन्हें ऋतुओं की संज्ञा दी जाती है। 5. जब पृथ्वी का उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य के सामने आता है तो वहाँ सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। अत: इन भागों में दिन के समय अधिक समय तक सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है। परिमाणस्वरूप उत्तरी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है। इसके विपरित जब वही गोलार्द्ध सूर्य की किरणों से दूर हो जाता है तो वहाँ सूर्य की सीधी किरणें नहीं पहुँच पाती हैं। अत: इस क्षेत्र को सूर्य का प्रकाश कम घंटों के लिए प्राप्त हो पाता है। फलत: इस समय इस क्षेत्र अथवा गोलार्द्ध में शीत ऋतु व्याप्त रहती है। **(ग)** गोधूलि - सूर्यास्त के बाद कुछ समय तक सूर्य का मद्धिम प्रकाश होता है। यह समय गोधूलि के रूप में जाना जाता है। मध्य रात्रि - जब सूर्य द्वारा प्रकाशित पृथ्वी का हिस्सा सूर्य से पूर्णत: विमुख हो जाता है तो वहाँ पूर्ण अंधकार होता है, जिसे मध्य रात्रि कहते हैं। ऊषा काल- सूर्य के उदय होने से पहले हमें हल्का सा विकसित प्रकाश दिखाई देता है जिसे ऊषा की संज्ञा दी जाती है। ग्रीष्म संक्राति - 21 जून को सूर्य कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}^{0}$उ) पर उर्ध्वाधर रूप में चमकता है। उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका होता है तथा सूर्य का प्रकाश अधिकतम समय तक इस भाग पर पड़ता है। इसे ग्रीष्म संक्राति के नाम से जाना जाता है। शीत संक्राति - 22 दिसंबर को सूर्य मकर रेखा ($23\frac{1}{2}^{0}$द.) पर लंबवत् चमकता है। इस समय दक्षिणी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका होता है। इस स्थिति को शीत संक्राति के रूप में जाना जाता है। वसंत विषुव - विषुव का अर्थ है- दिन तथा रात समान होना। 21 मार्च को सूर्य की किरणें विषुवत वृत्त पर उर्ध्वाधर रूप में पड़ती हैं। अत: उत्तरी गोलार्द्ध में वसंत ऋतु तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में शरद् ऋतु होती है। इस स्थिति में दिन व रात की अवधि कर्क एवं मकर वृत्तों में समान होती है। **(घ)** 1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(ङ)** 1. स 2. द 3. य 4. ल 5. र 6. ब 7. अ **(च)** 1. सत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य **(छ)** 1. अ 2. ब **(ज)** 1. 24 2. ऊषा काल 3. धुरी

परियोजना कार्य- छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 15 पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल

(क) 1. परिमण्डल से आशय उस समूह से है जो पृथ्वी पर स्थित विभिन्न प्राकृतिक परिवेशों एवं अवयवों को छोटे व बड़े रूप में अपने आप में समेटे है। जैसे- सागर, महासागर, झलें आदि को जल-मण्डल (जल राशियों का परिमण्डल) कहते है। 2. स्थल मंडल से तात्पर्य एक ऐसे परिमंडल से है जिसकी रचना शैलों अथवा पत्थरों से हुई है। 3. उत्तरी गोलार्द्ध को स्थलीय गोलार्द्ध के नाम से जाना जाता है। 4. अपने आसपास की भूमि की अपेक्षा ऊँचा उठा हुआ समतल भू-भाग अथवा शिखर, पठार कहलाता है। 5. भारत में उपस्थित मैदान ''सभ्यता का पालना'' नाम से जाने जाते हैं। 6. पृथ्वी को नीला ग्रह भी कहा जाता है। 7. जैव मंडल पृथ्वी के धरातल से 12 किमी. की ऊँचाई तक व्याप्त माना जाता है। महासागरों में यह 9 किमी. की ऊँचाई तक विस्तृत पाया जाता है। इस तरह इसका विस्तार 21 किमी. तक पाया जाता है। **(ख)** 1. स्थल मंडल से तात्पर्य एक ऐसे परिमंडल से है जिसकी रचना शैलों अथवा पत्थरों से हुई है। पृथ्वी का बाह्य आवरण कठोर शैलों या पत्थरों से बना है। इसे भू-पर्पटी कहते हैं। भू-पर्पटी पर स्थल व जल का विस्तार पाया जाता है। भू-पर्पटी की मोटाई लगभग 100 किमी. है। यह लगभग 20 विशाल भू-पर्पटों में विभाजित है। इन्हें विवर्तनिक प्लेटें कहते हैं। अधिकांश स्थल भाग उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित होने के कारण उत्तरी गोलार्द्ध को स्थलीय गोलार्द्ध नाम से जाना जाता है। इसके विपरीत दक्षिणी गोलार्द्ध को जलीय गोलार्द्ध नाम से जाना जाता है। **विशेषताएँ** - ये विशाल भूगर्भीय इकाइयों से घिरे हुए हैं। ऐसे विशाल स्थलखंड जो अपने

चारों ओर से महासागरों से घिरे हुए है, महाद्वीप के रूप में जाने जाते हैं। ऐसा विशाल भू-भाग जो अपने तीनों ओर से जल से घिरा होता है, प्रायद्वीप कहलाता है तथा लघु भूखंड जो अपने चारों ओर से जल से घिरा होता है द्वीप कहलाता है। 2. महाद्वीप के स्थलीय स्वरूप पर्वत - पर्वत एक ऐसा विशाल भूखंड होता है जो अपने चारों तरफ उपस्थित धरातल की तुलना में बहुत अधिक ऊँचा उठा हुआ होता है। पर्वतों की सामान्यत: खड़ी ढाल वाली एवं ऊँची शिखरें होती हैं। पर्वत सामान्यत: लंबी श्रृंखला बनाते हैं। जिन्हें पर्वत श्रृंखला अथवा पर्वत-श्रेणी कहते हैं। 3. पहाड़ियाँ - पर्वतों की अपेक्षा कम ऊँची भू-आकृतियाँ पहाड़ियों के नाम से जानी जाती हैं। पहाड़ियों की शिखरों की ऊँचाई सामान्यत: 90 से 300 मीटर तक की पायी जाती है। पठार - अपने आसपास की भूमि की अपेक्षा ऊँचा उठा हुआ समतल भू-भाग अथवा शिखर ''पठार'' कहलाता है। तिब्बत विश्व का सबसे ऊँचा पठार है। इस पठार को ''दुनिया की छत'' के नाम से जाना जाता है। पठारी क्षेत्र काफी विशाल भू-क्षेत्र होते हैं तथा अधिकांशत: इनको पर्वतीय क्षेत्रों के निकटतम स्थित पाया जाता है। मैदान - मैदानी भाग सामान्यत: समतल अथवा सपाट भू-भाग होते हैं। अधिकांश मैदानों की सागर तल से ऊँचाई लगभग 200 मीटर पायी जाती है। मैदानों में उच्चावच होता है। अधिकांश मैदान जलोढ़ मिट्टी से बने हुए होते हैं। 3. जल मंडल - पृथ्वी के धरातल पर स्थल की तुलना में जल क्षेत्र की अधिकता पायी जाती है। पृथ्वी के धरातल का लगभग 71% भाग जल से घिरा है। अंतरिक्ष से देखने पर पृथ्वी नीले रंग की दिखाई देती है अत: इसे नीले ग्रह की उपाधि भी दी जाती है। पृथ्वी पर जल सागरों, महासागरों, झीलों, नदियों आदि जल भंडारों के रूप में विद्यमान पाया जाता है। जल मंडल जल चक्र में विशेष भूमिका का निर्वाह करता है। महासागर तथा सागर हमें जल परिवहन की सुविधा प्रदान करते हैं। इसके विविध साधनों, यथा जल यानों, तेल वाहक जलयानों के माध्यम से विदेशी व्यापार संभव हो पाता है। 4. पृथ्वी पर जीवन के विकास अथवा पोषण के लिए नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन डाइआक्साइड एवं ओजोन विशेष रूप से उत्तरदायी घटक हैं। नाइट्रोजन एक निष्क्रिय गैस है, विविध जीवधारियों के विकास के लिए अनिवार्य है। समस्त जीवधारी जीवित रहने के लिए श्वसन करते हैं तथा वे श्वसन द्वारा ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं। अत: वायुमंडल में उपस्थित ऑक्सीजन एक जीवनदायी गैस है। वायुमंडल में ऊँचाई के साथ-साथ ऑक्सीजन की मात्रा घटती जाती है। यही कारण है कि पर्वतारोही तथा अंतरिक्ष यात्री अपने साथ ऑक्सीजन के सिलेंडर रखते हैं। पौधों को प्रकाश संश्लेषण के दौरान अपना भोजन बनाने के लिए कार्बन डाइआक्साइड गैस की आवश्यकता होती है। 5. जैव मंडल पृथ्वी का वह परिमंडल है जहाँ जीवन का पनपना संभव है। यही वह क्षेत्र है जहाँ तीनों परिमंडल परस्पर संपर्क में आते हैं। जैव मंडल का विस्तार 21 किमी. तक पाया जाता है। जैव मंडल में जीवन उपलब्धता वाली समस्त परिस्थितियाँ विद्यमान पायी जाती हैं। यहाँ सूक्ष्म जीव से लेकर विशालकाय जंतु तक पाये जाते हैं। जैव मंडल में उपस्थित जंतुओं तथा पादपों की प्रजातियाँ अपना जीवन बनाए रखने के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहती हैं। पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते है इसलिए इन्हें उत्पादक कहा जाता है। इसके विपरीत जंतु अपने भोजन के लिए प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पौधों पर निर्भर करते हैं। अत: ये उपभोक्ता कहलाते हैं। 6. पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए हम निम्न उपाय कर सकते हैं :- वनों के संरक्षण हेतु उपयुक्त नीतियों तथा वैज्ञानिक विधियों का प्रबंध करना चाहिए। वनों में होने वाली अतिपशुचारण पर रोक लगा देनी चाहिए। प्रकृति में निहित जैव विविधता को संरक्षित बनाए रखने के उपाय करने चाहिए। लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक करना चाहिए। प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय करने चाहिए। जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना भी अनिवार्य है। **ग.** 1. स 2. द 3. य 4. ब 5. अ **घ.** छात्र अध्यापक की सहायता से अंतर लिखे। **ङ.** 1. स्थल मंडल 2. पृथ्वी 3. दक्षिणी गोलार्द्ध 4. उत्तरी गोलार्द्ध 5. माउंट एवरेस्ट 6. 78.080 **परियोजना कार्य –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 16 हमारा देश : भारत

(क) 1. भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। 2. जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दुनिया का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र है। 3. भारत में 28 राज्य तथा 7 केंद्र शासित प्रदेश है। 4. भारत तीनों ओर से सागरों से घिरा है जैसे अरब सागर, बंगाल की खाड़ी तथा हिन्द महासागर। अत: इसे प्रायद्वीप भारत कहा जाता है। 5. माउंट एवरेस्ट हिमालय के उत्तर में स्थित है। 6. उत्तरी मैदान को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है- पंजाब हरियाणा का मैदान, गंगा का मैदान तथा ब्रह्मपुत्र का मैदान। 7. दक्षिणी पठार उत्तरी मैदान के दक्षिण में स्थित है। इस क्षेत्र का आकार त्रिभुजाकार है। 8. दक्कन पठार के पूर्वी तथा पश्चिमी छोरों पर क्रमानुसार पूर्वी तथा पश्चिमी तटीय मैदान विस्तारित पाए जाते हैं। पश्चिम में गुजरात के अतिरिक्त मैदान अत्यधिक संकीर्ण हैं। पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा चौड़े हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. भारत के केन्द्र शासित प्रदेश है – (1) अंडमान व निकोबार द्वीप समूह (2) चंडीगढ़ (3) दादरा व नागर हवेली (4) दमन व दीव (5) लक्ष्यद्वीप (6) पाण्डिचेरी (7) राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली 2. भारत के उत्तरी मैदान को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है – (1) पंजाब – हरियाणा का मैदान। (2) गंगा का मैदान (3) ब्रह्मपुत्र का मैदान। **(ख)** 1. भारत का क्षेत्रफल लगभग 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर है। यह चीन के बाद दुनिया का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। भारत की मुख्य भूमि $8^{0}4'$ उत्तर से $37.6'$ उत्तरी अक्षांश तथा $69^{0}7'$ पूर्व से $97^{0}25'$ पूर्वी देशांतर तक विकसित पायी जाती है। उत्तर से दक्षिण तक भारत का विस्तार लगभग 3200 किलोमीटर लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम तक इसका विस्तार लगभग 2000 किलोमीटर है। भारत के सागर तट की लम्बाई लगभग 7500 किलोमीटर है जबकि इसकी स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किलोमीटर है। 2. हिमालय पर्वतमाला के दक्षिण में विशाल उत्तरी मैदान स्थित हैं। ये अत्यधिक विस्तृत, समतल तथा उपजाऊ मैदान हैं। इनकी रचना हिमालय से निकलने वाली नदियों जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिंधु आदि ने की है। उत्तरी मैदानों का विस्तार पश्चिम में सतलुज नदी से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक है। उत्तरी मैदान को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है- पंजाब हरियाणा मैदान, गंगा का मैदान तथा ब्रह्मपुत्र का मैदान। पंजाब-हरियाणा के मैदान की रचना सतलुज, व्यास तथा रावी नदियों द्वारा की गई है। गंगा का मैदान अधिकांश उत्तरी मैदान को घेरे हुए है। ब्रह्मपुत्र मैदान को ब्रह्मपुत्र तथा उसकी सहायक नदियों ने बनाया है। उत्तरी मैदान समृद्ध कृषि क्षेत्र है तथा यहाँ जनसंख्या का सघन बसाव पाया जाता है। 3. हिमाद्रि हिमालय के अन्तर में स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर है। विश्व की सर्वाधिक ऊँची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट (8850 मीटर) इसी पर्वतमाला में स्थित है। इसे महान हिमालय भी कहते हैं। 4. अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में विशाल भारतीय मरुस्थल स्थित है। इसे थार का मरुस्थल भी कहते हैं। यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत तक पाया जाता है। इसका अधिकांश भाग रेत से ढका हुआ है। 5. पश्चिमी तटीय मैदान का उत्तरी भाग महाराष्ट्र में स्थित हैं। कर्नाटक में यह कोंकण तट के तथा दक्षिणी भाग में मालाबार तट के नाम से जाना जाता है। पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदानों की अपेक्षा

अधिक चौड़े होते हैं। इनमें बहने वाली प्रमुख नदियाँ महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावेरी आदि हैं। इसका दक्षिणी भाग कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है। 6. लक्ष्यद्वीप, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह भारत के प्रमुख द्वीपसमूह हैं। लक्ष्यद्वीप केरल के तट से 300 किलोमीटर दूर पश्चिम में अरब सागर में स्थित हैं। अंडमान व निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित हैं। भारत के दक्षिणी भाग को कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है। **ग.** 1. स 2. र 3. द 4. य 5. ब 6. अ **घ.** 1. 7, 29 2. गंगटोक 3. माउंट एवरेस्ट 4. शिवालिक 5. थार 6. दक्षिण **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 17 जलवायु, वनस्पति तथा जंतु

(क) 1. भारत के विविध स्थानों पर विविध प्रकार की जलवायु पायी जाती है। जैसे- लेह में वर्ष भर अत्यधिक ठंड रहती है तो मैदानी भाग में जलवायु विषम प्रकृति की पायी जाती है। 2. सागर तट के निकटतम क्षेत्रों में सम प्रकृति अथवा सुहावनी जलवायु पायी जाती है। 3. शीत ऋतु दिसंबर से प्रारंभ होती है। 4. ग्रीष्म ऋतु मार्च से प्रारंभ होती है तथा मई तक बनी रहती है। 5. उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन भारत में असम की पहाड़ियों, मेघालय, अंडमान एवं निकोबार समूह, पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा के कुछ भागों में पाए जाते हैं। 6. कँटीले वन ऐसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ 50 से 100 सेमी वर्षा ही होती है। ये वन मुख्यत: राजस्थान, गुजरात, पंजाब व पश्चिमी हरियाणा में पाए जाते हैं। 7. जैव विविधता का अर्थ है विभिन्न प्रकार के वन्य जंतु। भारत में विद्यमान जैव विविधता विश्व में अपना एक विशेष स्थान रखती है। भारतीय वनों में पशुओं की लगभग 8500 तथा पक्षियों की लगभग 1200 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। 8. भारत में 84 राष्ट्रीय उद्यान हैं। **(ख)** 1. भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं - **अक्षांशीय विस्तार** - भूमध्य रेखा से दूर जाते हुए अक्षांशीय ताप निरंतर घटता जाता है। देश का दक्षिणी भाग विषुवत या भूमध्य रेखा के निकट स्थित है। अत: यहाँ वर्ष भर तापमान उच्च बना रहता है। हिमालय से दूरी - हिमालय पर्वतमाला से दूरी का भी भारत की जलवायु पर विशेष प्रभाव पड़ता हैं यह पर्वतमाला साइबेरिया की ओर से आने वाली शीतल पवनों से भारत की रक्षा करती है। इसी तरह मानसून पवनों को रोककर वर्षा करती है। फलत: मानसून ऋतु में उत्तरी मैदानों में भारी वर्षा होती है। सागर तट से दूरी - सागर तटीय क्षेत्रों में सदैव जलवायु सम बनी रहती है। अर्थात् यहाँ न अधिक गर्मी पड़ती है न अधिक सर्दी। जबकि सागर तट से दूर जाते हुए जलवायु में विषमता आने लगती है। सागर तल से ऊँचाई - सागर से किसी स्थान की ऊँचाई का प्रभाव वहाँ के तापमान को प्रभावित करता है। प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर 1^{0} से. तापमान कम होता जाता है। 2. भारत में बड़ी मात्रा में विविध प्रकार की वनस्पतियाँ पायी जाती है। इसके वनस्पति प्रदेशों को निम्न वर्गों में विभाजित करते हैं - उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन - ये वन आर्द्र तथा उष्ण क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में बहुत अधिक वर्षा होती है। ये वन सदैव हरे-भरे बने रहते हैं। अत: इन्हें सदाहरित या सदाबहार वन भी कहते हैं। इन वनों का विस्तार असम की पहाड़ियों, मेघालय, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा के कुछ भागों में है। उष्णकटिबंधीय पतझड़ वन - ऐसे वनों को मानसूनी वन भी कहा जाता है। ये मुख्यत: 100 सेमी. से 200 सेमी. की वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये वन शिवालिक पर्वतमाला से लेकर दक्षिण में पश्चिम घाटी की पूर्वी दिशा तक फैले हुए हैं। इन वनों में पाए जाने वाले वृक्ष वर्ष के किसी विशेष भाग में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। इसलिए इन्हें पतझड़ वन कहते हैं। कँटीले वन - ऐसे वन 50 से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। भारत में यह मुख्यत: राजस्थान, गुजरात, पंजाब व पश्चिमी हरियाणा में पाए जाते हैं। ज्वारीय वन - ऐसे वन जो ज्वारीय क्षेत्रों में व्याप्त पाए जाते हैं, ज्वारीय वन कहलाते हैं। इनमें पाए जाने वाले वृक्ष उच्च स्तर के क्षारीय क्षेत्रों में भी उग सकते हैं। हिमालय वन - हिमालय पर्वतमाला पर विविध प्रकार के वन पाए जाते हैं। 1600 से 3300 मीटर की ऊँचाई तक शंकुधारी वन पाए जाते हैं। 3. उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन - ये वन आर्द्र तथा उष्ण क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में बहुत अधिक वर्षा होती है। ये वन सदैव हरे-भरे बने रहते हैं। अत: इन्हें सदाहरित या सदाबहार वन भी कहते हैं। इन वनों का विस्तार असम की पहाड़ियों, मेघालय, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा के कुछ भागों में है। 4. वन हमारे लिए विविध प्रकार से महत्त्वपूर्ण होते हैं - वनों से हमें विविध प्रकार की उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं जैसे लाख, गोंद, रबड़ आदि। वन वन्य जन्तुओं को वास स्थल उपलब्ध कराते हैं। वन प्राकृतिक सौंदर्य का आधार हैं। इस सौंदर्य पर हमारा पर्यटन उद्योग निर्भर करता है। वन वर्षा लाने में सहायक होते हैं। वन मृदा अपरदन की रोकथाम में मदद करते हैं। वनों से हमें इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। वनों में रहने वाले लोगों की आजीविका का साधन वन ही होते हैं। 5. भारत में विविध प्रकार के वन्य जंतु पाए जाते हैं। भारत में विद्यमान जैव विविधता विश्व में अपना विशेष स्थान रखती है। भारतीय वनों में पशुओं की लगभग 8500 तथा पक्षियों में लगभग 1200 प्रजातियाँ पायी जाती हैं। इनके अतिरिक्त हमारे देश में 250 से अधिक सरीसृप की तथा 3000 से अधिक मछलियों की प्रजातियाँ भी पायी जाती हैं। भारत के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रजातियाँ बदलती रहती हैं। वन्य जीवन हमारे पारिस्थितिक तंत्र में संतुलन बनाए रखने में विशेष भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त भारत में पाए जाने वाले विविध प्रकार के जन्तुओं को देखने के लिए प्रतिवर्ष विदेशों से हजारों पर्यटक आते हैं। 6. वन्य जंतुओं के सरंक्षण को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं - सरकार द्वारा विविध जैव आरक्षित क्षेत्रों की स्थापना की गई है। इनमें विविध प्रजातियों की अनुवांशिक विविधता से सरंक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। हमारी सरकार द्वारा बाघों, हाथियों व गैंडों को सरंक्षण प्रदान करने के लिए विविध परियोजनाओं की स्थापना की गई है। वन्य जंतुओं को सरंक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय उद्यानों, वन्य जीव अभ्यारण्यों तथा पक्षी विहारों की स्थापना की गई है। **(ग)** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें। **(घ)** 1. स 2. द 3. य 4. ब 5. अ **परियोजना कार्य-** स्वयं करें।

अध्याय- 18 विविधता भारत की विशेषता

(क) 1. विविधता का अर्थ है एक दूसरे से भिन्न होना। विविधता भारत की विशेषता है। देश के विशाल भू-खंड पर, उसके भौतिक लक्षणों, जलवायु, वनस्पति, मिट्टियों, खनिज पदार्थों तथा मानव जीवन आदि में भौतिक अथवा भौगोलिक विविधताएँ दृष्टिगोचर होती है। 2. भारत एक होते हुए भी भाषाओं, जाति धर्म, पहनावे, खान-पान, त्योहार क्षेत्र के आधार पर विविधिता हमारी समृद्ध विरासत है। 3. भारत में भाषा, जाति, वर्ग तथा धर्म में विविधता मिलती हैं। 4. विविधता व्यक्ति और समाज दोनों को विकास का अधिकार प्रदान करती है। रामकृष्ण परमहंस के अनुसार बहुत-सी नदियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में अलग-अलग स्थानों में बहती हैं लेकिन वे अंत में समुद्र में आकर मिलती हैं। अत: विविधता के होने का अपना एक महत्त्व होता है। यह मानव जीवन विविधता और सौंदर्य में बुद्धि करता है। 5. हमारे राष्ट्रीय त्योंहार - स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) और गाँधी जयंती (2 अक्टूबर) **(ख)** 1. विविधता का अर्थ है एक दूसरे से भिन्न होना। विविधता भारत की विशेषता है। देश के विशाल भू-खंड पर, उसके भौतिक लक्षणों, जलवायु, वनस्पति, मिट्टियों, खनिज पदार्थों तथा मानव जीवन आदि में भौतिक अथवा भौगोलिक विविधताएँ दृष्टिगोचर होती है। (क) भौगोलिक

परिस्थितियों ने भारत को एक ऐसी पृथकता प्रदान की है जबकि इसके अंदर ही भौगोलिक जलवायु और क्षेत्रीय भिन्नताएँ विद्यमान हैं। (ख) भारत का एक ईकाई रूपी देश के स्वरूप में निरंतर इतिहास रहा है। (ग) राजनैतिक रूप में भी भारत एक ईकाई रहा है। प्राचीन काल में राजा और महाराजा गण अश्वमेघ यज्ञों का आयोजन चक्रवती सम्राट बनने के उद्देश्य से करते हैं। (घ) हमारे स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष ने एक समान भाई-चारे की भावना का प्रदर्शन किया। (ङ) भारतीय लोगों के अंदर एक अंतर्निहित सांस्कृतिक एकता होती है। इनके धार्मिक उत्सव और त्योहार प्राय: राष्ट्रीय स्तर पर समान होते हैं। 2. भारत के लोग विभिन्न जातियों, वर्णों और जनजातियों से संबंध रखते हैं। उनके खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, सामाजिक परंपराओं और उनके बोलने वाली भाषा में भिन्नता है। धर्म के क्षेत्र में भी भारत में एक बड़ी विविधता पाई जाती है। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध इत्यादि धर्मों का भारतीय जनसंख्या के विभिन्न वर्ग पालन करते हैं। हमारे संविधान ने इस विविधता को स्वीकार किया है। लोग अपने ईश्वर की अपने विशिष्ट तरीके से उपासना करते हैं। 3. छात्र अध्यापक की सहायता से लिखे। **(ग)** 1. सांस्कृतिक विविधताओं का 2. वेशभूषा, विभिन्न 3. विविधता 4. 22 5. हिन्दी **(घ)** 1. अ 2. ब 3. स 4. ब **परियोजना कार्य** –छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 19 पूर्वाग्रह, भेदभाव और असमानता

(क) 1. पूर्वाग्रह का अर्थ है किसी के बारे में अपना पहले से ही बनाया गया मत। 2. किसी व्यक्ति अथवा कई व्यक्तियों के समूह को अन्य किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह की अपेक्षा बुरे रूप में व्यवहार करने की प्रथा को भेदभाव कहते हैं। दो उदाहरण जाति भेदभाव और प्रजातीय श्रेष्ठता। 3. पूर्वाग्रह तथा भेदभाव के अनेक कारण हैं जिनमें लिंग आधारित पूर्वाग्रह, प्रजातीय श्रेष्ठता, जाति व्यवस्था, धर्म तथा सामाजिक-राजनीतिक कारक सम्मिलित हैं। 4. पूर्वाग्रह की भावना और भेदभाव पूर्ण व्यवहार मानवता को एक सामूहिक जीवन जीने में बाधा उत्पन्न करता है। अविश्वास, शंकाएँ और आपसी कटुता इन पूर्वाग्रहों और भेदभाव पूर्ण व्यवहारों को आश्रय प्रदान करते हैं। साथ ही जाति, धर्म और लिंग में असमानता बरतना भी इस भेदभावपूर्ण व्यवहार का कारण बनते हैं। 5. वैदिक काल में लोगों को चार प्रमुख वर्णों में विभाजित कर दिया गया था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। **(ख)** 1. हमारे संविधान ने हमें भेदभाव समाप्ति के लिए मूलभूत अधिकार प्रदान किये हैं। वे हैं - (क) कानून के अनुसार अछूत प्रथा को दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। (ख) सभी भारतीय नागरिकों को सरकार के किसी भी कार्यालय में रोजगार प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किये गए हैं। (ग) राज्य, समाज के कमजोर वर्गों को शैक्षिक और आर्थिक सुविधाएँ प्रदान करता है। (घ) राज्य सरकार द्वारा लोगों के स्वास्थ्य, उनके पोषण एवं लोगों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए अनेक उपायों की घोषणा की है। 2. पूर्वाग्रह की भावना और भेदभाव पूर्ण व्यवहार मानवता को एक सामूहिक जीवन जीने में बाधा उत्पन्न करता है। अविश्वास, शंकाएँ और आपसी कटुता इन पूर्वाग्रहों और भेदभाव पूर्ण व्यवहारों को आश्रय प्रदान करते हैं। साथ ही जाति, धर्म और लिंग में असमानता बरतना भी इस भेदभावपूर्ण व्यवहार का कारण बनते हैं। 3. किसी विशिष्ट जाति से संबंधित होना अथवा धार्मिक रूप से भिन्न मत रखना ही असमानता होने का कारण बनता है। मध्यकाल में ईसाइयों और मुस्लिमों के मध्य इसी बुरे व्यवहार के कारण अथवा दुर्भावना के कारण धार्मिक युद्ध हुए। जातिगत भिन्नताओं ने भी असमानता को बढ़ावा दिया। **(ग)** 1. पूर्वाग्रह 2. भेदभाव 3. ईश्वर, शूद्रों 4. जातिगत भेदभाव 5. शोषण से **(घ)** छात्र अध्यापक की सहायता से अंतर लिखें। **(ङ)** 1. क 2. ग 3. ग 4. क **छात्र परियोजना कार्य** – स्वयं करें।

अध्याय- 20 सरकार : स्वरूप और कार्य

(क) 1. सरकार वह एजेन्सी या मशीनरी है, जिसके द्वारा नीतियाँ निर्धारित की जाती हैं। सामान्य कार्य नियंत्रित होते हैं तथा सामान्य हितों की रक्षा होती है। 2. लोकतंत्र का अर्थ है- लोगों का प्रशासन। लोकतंत्र में लोगों को बिना किसी भेदभाव के सभी सरकारी क्रियाकलापों में सभी स्तर पर कार्य करने के अधिकार तथा अवसर प्रदान किये जाते हैं। 3. प्राचीन और मध्य युग में बहुत-से देशों में राजाशाही हुआ करती थी। इस प्रकार के स्वरूप वाली सरकार एक व्यक्ति के द्वारा ही शासित होती है, उसको एक राजा अथवा रानी या शासक कहा जाता है। इसमें राजा ही सर्वोच्च होता है तथा उसके हाथों में समस्त शक्तियाँ निहित रहती हैं। 4. ऐसा राज्य जहाँ पर लोगों के पास देश की शासन प्रक्रिया में भाग लेने का कोई अधिकार नहीं होता है। शासन की समस्त शक्तियाँ एक अकेले व्यक्ति के हाथों में होती है। एक तानाशाह की शक्तियों पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता है। 5. सरकार के द्वारा तीन प्रकार के कार्य क्रियान्वित किये जाते हैं - (1) विधायी कार्य (2) कार्यपालिका कार्य (3) न्यायिक कार्य 6. न्यायपालिका निरीक्षण करती है कि कानून का उचित ढंग से पालन किया जा रहा है या नहीं। यह उन लोगों को दंडित करती है जो कानून का उल्लंघन करते है। इसका महत्त्वपूर्ण कार्य देश के नागरिकों के मध्य उत्पन्न विवादों अथवा देश के नागरिकों और राज्यों के मध्य उपजे विवादों का निपटारा करना होता है। **(ख)** 1. सरकार की आवश्यकता देश में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए पड़ती है। यह देश को बाह्य आक्रमणकारियों से सुरक्षा प्रदान करती है और साथ ही अपने नागरिकों की भलाई हेतु कार्य भी करती है। आधुनिक समय में सरकार के पास बहुत से कार्य करने के लिए हैं जैसे- शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करवाना, सड़कों का निर्माण करवाना, सिंचाई हेतु नहरों की खुदाई करवाना, विभिन्न प्रकार के उद्योगों की स्थापना करना और चिकित्सकीय सुविधाओं की स्थापना करना इत्यादि। अत: यह बहुत से कार्य करती है और बहुत से निर्णयों को भी सरकारी उद्देश्यों की पूर्ति हेतु लेती है। 2. रंगभेद नीति को एक राज्य द्वारा प्रश्रय प्राप्त भेदभावपूर्ण नीति के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका और साथ ही दक्षिण अफ्रीका में भी अपनाया जा चुका है। इस नीति के अंतर्गत दक्षिण अफ्रीका के काले वर्ण के लोग मूलभूत अधिकारों, राजनैतिक अधिकारों एवं अन्य प्रकार की व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं से वंचित कर दिये थे। उन्होंने अपने संघर्ष को जारी रखा। दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मण्डेला के नेतृत्व में अफ्रीकन नेशनल क्रांग्रेस ने इस संघर्ष का नेतृत्व किया। 3. जब देश के समस्त वयस्क नागरिकों को एक मतदान करने का अधिकार अथवा मताधिकार प्राप्त होता है तो वह ''सर्वव्यापी वयस्क मताधिकार'' कहलाता है। भारत में कम से कम अट्ठारह वर्ष की आयु वाले अथवा इससे अधिक आयु वाले सभी नागरिकों को चुनाव में मतदान करने का अधिकार है। नागरिक अपनी इच्छा से किसी भी उम्मीदवार को अपनी पसंद के रूप में उसके पक्ष में मतदान कर सकता है। 4. 1. इस कार्य के अंतर्गत मुख्य कार्य नए कानून का गठन और पुराने कानूनों का संशोधन होता है। 2. यह कार्यपालिका के कार्यों पर नियंत्रण रखती है। इसके अंतर्गत मंत्रियों की समिति देश की संसद के समक्ष जवाबदेह होती है। 3. यह सरकार के खर्चों पर नियंत्रण रखती है। वित्तमंत्री के द्वारा देश का आम बजट संसद के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इसमें संसद किन्हीं प्रस्तावित करों को अथवा प्रावधानों को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत कर सकती है। **(ग)** छात्र अध्यापक की सहायता से अंतर लिखें। **(घ)** छात्र स्वयं करें। **(ङ)** 1. ख 2. ग 3. ग **परियोजना कार्य** – छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 21 प्रजातांत्रिक सरकार के प्रमुख तत्त्व

(क) 1. प्रजातंत्र में विपक्षी दल सरकार की नीतियों पर धरना और मोर्चा

प्रदर्शन के द्वारा अंकुश लगा सकते है। 2. समाचार-पत्रों, टेलीविजन व रेडियो द्वारा लोग अपने चारों ओर घटित होने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और इससे अपना मत बनाते हैं। इस प्रकार से जनता के मत के निर्माण में एक प्रजातंत्रिक देश में जनसंचार के माध्यमों की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। 3. महात्मा गाँधी और डॉ. अम्बेडकर ने अछूत प्रथा के विरुद्ध संघर्ष किया। 4. देश की उन्नति लोगों की सहभागिता पर निर्भर करती है। **(ख)** 1. किसी एक देश के नागरिक सरकार के कार्यों में कई प्रकार से भागीदार बन सकते हैं सभी नागरिक जिन्होंने न्यूनतम अटठारह वर्ष की आयु प्राप्त कर ली हो अपने प्रतिनिधियों का चुनाव कर सकते हैं। यह दर्शाता है कि सरकार के कार्यों में चुनाव के माध्यम से रुचि ले रहे हैं। सरकार द्वारा चुनावों का नियमित अंतराल पर आयोजन किया जाता है। इसमें लोगों के पास सर्वोच्च शक्ति विद्यमान होती है। 2. प्रजातंत्र ही समस्या के बारे में विचार-विमर्श और तर्क-वितर्क करने का अवसर प्रदान करता है। साधारणत: एक विस्तृत सहमति इस विचार-विमर्श के उपरांत निकल आती है। हमें दूसरों के समक्ष धैर्य का परिचय देना चाहिए चाहे हम उसके पक्ष से सहमत नहीं भी हों। इसमें बहुसंख्यक पक्ष को ही अपना कार्य करने देना चाहिए। सरकार को ही ऐसे विपरित मतों एव दृष्टिकोणों वाली स्थिति में निवारण का प्रयास करना चाहिए। 3. जनता के पास जुलूस निकालने, प्रदर्शन व मोर्चा निकालने और सभाएँ करने का अधिकार होता है। सरकार को अपने निर्णयों पर पुर्नविचार करने के लिए विवश किया जा सकता है। हड़ताल, धरना और आंदोलन करना ऐसे ही कुछ लोगों के सरकार की नीतियों के विरुद्ध एकत्र होकर विरोध करने के तरीके होते हैं। लेकिन लोगों को इसके दौरान राष्ट्रीय संपत्ति का नुकसान नहीं करना चाहिए। प्रजातंत्र में लोग अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज उठा सकते हैं। लोग अपनी नापसंदगी को विभिन्न मोर्चों का गठन करके एवं आंदोलन प्रारंभ करके प्रदर्शित कर सकते हैं। **(ग)** 1. लोग 2. अट्ठारह 3. जुलूस, धरने 4. अन्याय 5. जनता के मत **(घ)** 1. क 2. ग 3. ग **परियोजना कार्य –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 22 ग्रामीण क्षेत्रों का प्रशासन

(क) 1. भूमि, धन और संपत्ति से संबंधित मामले दीवानी मामले कहलाते हैं। जिले में दीवानी मामलों के लिए जिला न्यायाधीश और अतिरिक्त जिला न्यायाधीश दीवानी न्यायालय के प्रभारी होते हैं। चोरी, डकैती, जालसाजी, हत्या और अपराधिक मामलों को अपराधिक मामले कहा जाता है। ये मामले सत्र न्यायालय द्वारा सुने जाते हैं। 2. एक द्वितीय श्रेणी के न्यायाधीश के पास छह महीने के कारावास और दो सौ रुपये तक का जुर्माना लगाने का अधिकार होता है। 3. जिलापदाधिकारी की नियुक्ति राज्य सरकार करती है। 4. जिले में पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी पुलिस आयुक्त होता है। पुलिस आयुक्त प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखते हैं। 5. प्रथम श्रेणी का न्यायाधीश किसी अभियुक्त को दंडस्वरूप दो वर्ष के कारावास की सजा सुना सकता है और एक हजार रुपए तक का जुर्माना लगा सकता है। **हॉट प्रश्न –** 1. कारापाल एक कारागार में नियुक्त सबसे बड़े पुलिस अधिकारी (जेलर) को कहते है। 2. जिला स्तर पर न्यायिक प्रशासन दो प्रकार के मामलों का निपटारा करता है – दीवानी मामले और फौजदारी अथवा आपराधिक मामले। **(ख)** 1. जिला प्रशासन के प्रमुख कार्य हैं :- 1. जिले में कानून और व्यवस्था बनाए रखना। 2. भूमि के लेखे बनाने और भू-राजस्व के संग्रहण का कार्य। 3. जिले में होने वाले विकास कार्यों को निर्देशन और निरीक्षण करना। 4. नागरिक सुविधाओं को उपलब्ध कराना। 5. पंचायत राज संस्थाओं की गतिविधियों का निर्देशन एवं निरीक्षण करना। 6. प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ आने, सूखा पड़ना और भूकम्प आदि आने पर सहायता और पुर्नवास कार्यों को करना। 2. जिलाधिकारी का दायित्व होता है कि वह जिले की प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखे। व्यवस्था को बनाए रखने में भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी जैसे पुलिस आयुक्त उसकी इस कार्य में सहायता करता है। उसकी सहायता के लिए उपपुलिस आयुक्त, सर्किल इंस्पेक्टर, सबइंस्पेक्टर और स्टेशन हाऊस ऑफिसर होते हैं। जिले में एक कारागार, अपराधियों को रखने के लिए होता है। एक कारागार में नियुक्त सबसे बड़ा पुलिस अधिकारी जेलर कहलाता है। एक जिलाधीश के रूप में जिलाधिकारी भूमि संबंधी लेखों का समुचित प्रबन्धन करवाता है और भू-राजस्व के संग्रहण को निर्देशित भी करवाता है। राजस्व की प्राप्ति हेतु कुशल प्रशासन के लिए प्रत्येक जिले को उपखंडों में विभाजित कर दिया जाता है जो तहसील अथवा तालुक कहलाता है। 3. प्राकृतिक आपदा का अर्थ है आकस्मिक घटित होने वाली घटनाएँ जैसे बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि। प्राकृतिक आपदाओं के समय बाढ़, भूकम्प आने की स्थिति में और आपातकालीन परिस्थितियों में जैसे- आग लगना, सूखा पड़ना, संक्रामक रोगों का फैलना इत्यादि में जिलाधिकारी राहत और पुनर्वास कार्य को जिले में विद्यमान अन्य अधिकारियों की सहायता से समुचित रूप में प्रबन्धित करता है। **(ग)** 1. य 2. स 3. अ 4. ब 5. द **(घ)** 1. जेलर 2. सिविल सर्जन 3. दीवानी 4. फौजदारी या आपराधिक 5. सबसे ऊँचा **(ङ)** 1. ग 2. घ 3. क **परियोजना कार्य –** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 23 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में आजीविका के साधन

(क) 1. प्राथमिक आजीविकाएँ वे होती हैं जिनमें लोग प्राकृतिक संसाधनों से उपयोगी वस्तुएँ उत्पादित करने में संलग्न रहते हैं। जैसे कृषि कार्य। 2. एक स्थायी रोजगार 3. एक बड़े किसान के पास बड़ा क्षेत्र वाला भू-भाग खेती के लिये होता है। वे कृषि कार्यों के लिये आधुनिक साधनों का उपयोग करते हैं। वे पर्याप्त मात्रा में फसल उत्पादित करते हैं और उसके बड़े भाग को अपनी स्वयं की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के पश्चात् बाजार में बेच देते हैं। मध्यम दर्जे के किसान के पास दो से पाँच एकड़ जमीन होती है। ऐसे किसान कृषि कार्यों के लिए पुराने यंत्रों का उपयोग करते हैं। उत्पादित फसल से वे अपने परिवार का ही पोषण कर पाते हैं। 4. आजीविकाएँ जिनमें कोई सामान का उत्पादन नहीं होता है लेकिन लोग अपनी सेवाएँ और अनुभव प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण : बैंकिंग, शिक्षण, रेलवे, डाकघर आदि। 5. सूती वस्त्र उद्योग, बकरियाँ, चमड़ा उद्योग, कागज के कारखाने, सीमेन्ट उद्योग। **(ख)** 1. कुछ ग्रामीण अपने घरों में ही छोटी-छोटी दुकानें खोल कर अपनी आजीविका कमाते हैं। वे दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं का विक्रय करते हैं। दुग्ध उत्पादन - बहुत-से ग्रामीण पशुपालन करते हैं जैसे - गायें, भैंसे आदि। वे उनके द्वारा प्राप्त दूध और दूध उत्पादों जैसे घी, मक्खन, पनीर आदि को गाँव के निकट के नगरों व शहरों में भेजते हैं। मछली पकड़ना - तटीय राज्यों अथवा क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के आहार का मुख्य हिस्सा मछली होती है। बहुत-से लोग मछली पकड़ने के व्यवसाय में संलिप्त हैं। वे मछलियों को समुद्र से पकड़ते हैं और उनको गाँवों, शहरों और नगरों में बेचते हैं। बढ़ईगिरी - बढ़ई लोग लकड़ी का सामान जैसे दरवाजे, खिड़कियाँ, कुर्सियाँ, मेज आदि अन्य ग्रामवासियों के लिए बनाते हैं। 3. प्राथमिक आजीविकाएँ वे होती हैं जिनमें लोग प्राकृतिक संसाधनों से उपयोगी वस्तुएँ उत्पादित करने में सलंग्न रहते हैं। जैसे कृषि कार्य, मछली पकड़ना और पशुपालन करना इत्यादि। 4. बड़े शहरों और नगरों में दुकानदार, उद्योगपति, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे- चिकित्सक, शिक्षक, लिपिक, आन्तरिक गृह सज्जा करने वाले, कानूनी सलाहकार इत्यादि अपने-अपने व्यवसायों द्वारा आजीविकाएँ कमाते हैं। कारखानों के कर्मचारी - बहुत-से शहरों में बड़े कारखाने और औद्योगिक प्रतिष्ठान

स्थापित होते हैं। ये प्रतिष्ठान हजारों की संख्या में लोगों को कर्मचारियों, निरीक्षकों और अधिकारियों के रूप में रोजगार उपलब्ध करवाते हैं। सरकारी नौकरियाँ - एक बड़ी संख्या में लोग सरकारी नौकरियों में लगे हुए हैं। ये लोग प्रशासन के दैनिक कार्यों के क्रियान्वयन में सहायता प्रदान करते हैं। कॉल सेन्टर - विभिन्न कंपनियाँ सारी दुनिया में अपने ग्राहकों और उपभोक्ताओं की समस्याओं के कारण एवं उनके अपने नवीन उत्पादों और सेवाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के लिए बड़े शहरों और नगरों में अपने कॉल सेन्टर खोल रही हैं। 5. कुछ ग्रामीण लोग अपने घरों में ही छोटी-छोटी दुकानें खोल लेते हैं और अपनी आजीविका कमाते हैं। वे विभिन्न प्रकार के दैनिक उपयोग वाली वस्तुएँ जैसे भोज्य पदार्थ, सब्जियाँ, लेखन साम्रगी आदि का विक्रय करते हैं। **(ग)** छात्र स्वयं करें। **(घ)** 1. स 2. द 3. अ 4. ब **(ङ)** 1. स 2. स 3. स 4. अ **परियोजना कार्य –** छात्र स्वयं करें।

कक्षा - 7

अध्याय- 1 कहाँ, कब और कैसे ?

(क) 1. भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल एवं भूटान 2. ब्रह्मराष्ट्र, आर्य-प्रदेश 3. फारसी आर्केमेनियम के द्वारा 4. पुरातात्त्विक स्त्रोत एवं साहित्यिक स्त्रोत 5. फारसी आर्केमेनियम 6. जेन्द-एवेस्ता **हॉट प्रश्न –** 1. 'पृथ्वीराज रासो' पुस्तक के रचियेता 'चंद्रबरदाई' है। 2. सिंधु नदी के नाम पर भारत का नाम हिन्दूस्तान पड़ा। **(ख)** 1. पुरातात्विक स्त्रोत एवं साहित्यिक स्त्रोत- पुरातात्विक स्त्रोत में प्राचीन स्मारक आते है। साहित्यिक स्त्रोत में पुस्तकें एवं साहित्य आता है। 2. सिन्धु नदी बहती है, वह भारतवर्ष है। 3. (i) पर्याप्त ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध है। (ii) अधिकांश प्रादेशिक भाषाओं का विकास हुआ। (iii) नवीन-धर्म यथा दीन-ए-इलाही व सिक्ख धर्म का जन्म हुआ। (iv) भोजन व वेशभूषा में अनेक परिवर्तन हुए। (v) भक्ति व सूफी मत की अच्छी समझ विकसित हुई। (vi) हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृति का मिश्रण हुआ। (vii) धातु-मुद्रा का चलन हुआ। (viii) भारत से विदेशियों का प्रत्यक्ष व्यापार होने लगा। (ix) स्त्रियों के स्थान में गिरावट आई। 4. पुस्तकों में साहित्यिक कृतियाँ आती हैं जिनमें यात्रा-वृत्तान्त, जीवनियाँ एवं लेखा-जोखा होता है। **(ग)** 1. उपमहाद्वीप - एक विशाल देश जिसमें महाद्वीप की सभी विशेषताएँ हो। 2. ऐतिहासिक स्त्रोत - पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक स्त्रोत 3. मध्यकाल - आठवीं एवं अठारवीं शताब्दी के बीच का समय 4. पुरातात्त्विक स्त्रोत - प्राचीन स्मारक, अभिलेख एवं मुद्राएँ **(घ)** 1. जेन्द एवेस्ता- पारसियों का पवित्र-ग्रंथ 2. भारतवर्ष - पुराण 3. सिन्धु - हिन्दू 4. पुरातात्त्विक स्त्रोत - लालकिला 5. तानसेन = अकबर **परियोजना कार्य**- छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 2 भारत के सम्राट एवं साम्राज्य 700 से 1200 ईस्वी तक

(क) 1. गुर्जर-प्रतिहार, पाल तथा राष्ट्रकूट 2. तीनों राजवंशों के बीच कन्नौज के लिये लगातार संघर्ष 3. प्रसिद्ध और शक्तिशाली तुर्क शासक था। भारत में मंदिरों में रखी हुई विशाल धन-सम्पद्रा को लूटने के लिये। 4. वह अफगानिस्तान के एक छोटे-से राज्य गोर का सशक्त शासक था। उसने अनेक बार आक्रमण किये। 5. चोल शासन में शैव मत को विशेष प्रश्रय प्रदान किया और अनेक शिव मन्दिरों की स्थापना की। **हॉट प्रश्न –** 1. 'पृथ्वीराज रासो' पुस्तक में पृथ्वीराज चौहान की बहादुरी की गाथाएँ वर्णित है। 2. सबसे प्रसिद्ध व शक्तिशाली तुर्की शासक महमूद गजनवी था। **(ख)** 1. गुर्जर-प्रतिहार, पाल एवं राष्ट्रकूट के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष। गजनी के शासक महमूद गजनवी का सत्रह बार आक्रमण। मोहम्मद गौरी का आक्रमण एवं तुर्की शासन की स्थापना। दक्षिण भारत में चोल वंश की स्थापना। 2. राजाराम प्रथम ने चोल साम्राज्य का विस्तार किया, सशक्त जल सेना का गठन किया। राजेन्द्र चोल ने श्रीलंका पर नौ-सैनिक अभियान चलाया और उस पर विजय प्राप्त की। उसने एक नवीन राजधानी गंगईकोण्डाचोलपुरम की स्थापना की। 3. राजपूत शासक आपस में लड़ते थे। वे पुराने हथियारों का प्रयोग करते थे। अपने राज्यों की तरफ ही ध्यान था। सीमाओं पर ध्यान नहीं था। राजपूतों को संगठित करने वाले सर्वमान्य नेता का अभाव था। 4. देश की सीमाओं की उपेक्षा होती रही। विदेशी शक्तियाँ निरन्तर आक्रमण करती रही। भारत की अतुल धन-सम्पदा लूटी जाती रही। भारत के अनेक राज्यों में तुर्कों का राज हो गया। 5. अनेकों सुन्दर मंदिरों का निर्माण हुआ। तंजोर का वृहदेश्वर मंदिर दक्षिण भारत का सबसे बड़ा शिव मन्दिर इसी काल में बना। अनेक सुन्दर बागों, सभागारों, मंदिरों, स्तूपों एवं महलों का निर्माण कराया। **(ग)** 1. गुर्जर प्रतिहार - गुर्जरों के वंशज, हूणों के कुछ समय बाद भारत में आये कन्नौज पर राज किया। 2. सिसोदिया राजवंश - मेवाड़ के राजपूत थे। चितौड़ इनकी राजधानी थी। महाराणा प्रताप मेवाड़ के प्रसिद्ध शासक थे। 3. पृथ्वीराज चौहान - चौहान वंश का सबसे शक्तिशाली राजा था। इसके दरबार में चन्द्रबराई जैसे महान कवि थे। 4. चोल राजवंश - दक्षिण भारत की सबसे बड़ी राजशक्ति थी। **(घ)** 1. कन्नौज 2. चन्द्रबरदाई 3. महाराणा प्रताप 4. विजय पाल 5. राज्य नरसिंह वर्मन प्रथम **(ङ)** मंडलम्- चोल साम्राज्य का एक प्रान्त। नाडु चोलों के अधीन जिले। वालानाडू - कई ग्रामों का मिला हुआ राज्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय-3 दिल्ली की सल्तनत (1206 ईस्वी से 1526 ईस्वी तक)

(क) 1. पाँच वंशो ने 2. क्योंकि सभी शासक प्राय: कभी न कभी गुलाम रहे थे। 3. फिरोजपुर (पंजाब), जौनपुर एवं फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) हिंसार (हरियाणा)। 4. दक्षिण की देवगिरि (दौलताबाद) में। राजधानी का बदलना फलदायी नहीं रहा। अत: पुन: दिल्ली को राजधानी बनाना पड़ा। 5. यह दास राजवंश का संस्थापक था। इसने दिल्ली सल्तनत की नींव डाली। **हॉट प्रश्न –** 1. 'तारीख-ए-फिरोजशाही' जियाउद्दीन बरनी ने लिखी। 2. दिल्ली में स्थित 'कुतुबमीनार' का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया। **(ख)** 1. दास वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी। वह मोहम्मद गौरी का विश्वास पात्र सरदार था। 2. इसने गुजरात के राजा करन बघेला को हराया। सोमनाथ एवं अन्य बन्दरगाहों को लूटा। रणथम्भोर पर विजय प्राप्त की। चित्तौड़ तथा मालवा को जीत लिया। सम्पूर्ण उत्तर भारत पर राज किया। 3. लुटेरा प्रवृत्ति, असहिष्णुता, सरदारों पर निर्भरता, विस्तृत साम्राज्य, मंगोलों के आक्रमण। **(ग)** 1. कुतुबुद्दीन के बाद शासक बना। रिश्ते में दामाद था। 2. इल्तुतमिश की बेटी थी। एक बहादुर और वीर स्त्री थी। इसने चार वर्षों तक राज किया। 3. 1517 में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में पराजित कर दिया। 4. 1488 ई. में दिल्ली का शासक बना। आगरा को अपनी राजधानी बनाया। **(घ)** 1. खिलजी राजवंश 1290 से 1320 2. तुगलक राजवंश 1320 से 1414 3. दास राजवंश 1206 से 1290 4. लोदी राजवंश 1451 से 1526 5. सैय्यद राजवंश 1414 से 1451 **परियोजना कार्य–** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 4 मुगल साम्राज्य

(क) 1. पन्द्रहवीं शताब्दी में भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था और इनके शासक आपस में लड़ते रहते थे। 2. 1526 में 3. ग्रैंड ट्रंक रोड अथवा जी.टी. रोड 4. बुंदेलखंड में स्थित कालिंजर के दुर्ग पर कब्जा करने के समय सैन्य अभियान के दौरान बारूदी विस्फोट से 5. चैन्नई (मद्रास) में सेंट जार्ज फोर्ट नामक दुर्ग 6. सुन्नी कट्टरवादी नीति

हॉट प्रश्न – 1. अकबर ने 'दीन-ए-इलाही' नामक धर्म की स्थापना की। 2. बाबर के जीवन का संपूर्ण वृतांत 'तुजुक-ए-बाबरी' अथवा 'बाबरनामा' नामक पुस्तक में मिलता है। **(ख)** 1. बाबर ने भारत पर पाँच बार आक्रमण किया। 1526 में लोदी वंश के अन्तिम सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराकर मुगल साम्राज्य की नींव डाली। 2. शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को दो युद्धों में हराया। बाद में ग्वालियर रायसेन तथा फिर पंजाब, सिन्ध, मुल्तान तथा मारवाड़ पर विजय प्राप्त कर ली। उसने भष्टाचार को मिटाया तथा निष्पक्ष न्याय की व्यवस्था की। उसने वृक्ष लगवाये, सरायों और कुँओं का निर्माण कराया। 3. पानीपत के दूसरे युद्ध में हेमू को कड़ी पराजय दी। इस प्रकार दिल्ली तथा आगरा पर अपना आधिपत्य जमाया। उसने मालवा, गोंडवाना, राजपूताना, गुजरात, बंगाल, उत्तर पश्चिम में काबुल, कश्मीर, सिन्ध, कंधार तथा दमन पर विजय प्राप्त की। इस तरह इसका उसका साम्राज्य विशाल बन गया। 4. जहाँगीर की उदारतापूर्ण नीति थी। उसने मेवाड़ से संघर्ष को समाप्त कर सन्धि कर ली। 5. शाहजहाँ ने दक्कन के गवर्नर के विद्रोह का दमन किया। अंग्रेजों ने अपने व्यापार का विस्तार किया। स्थापत्य एवं भवन निर्माण कला को खूब प्रोत्साहित किया जिसमें आगरा का ताजमहल प्रमुख है। उसके शासनकाल को स्वर्ण काल कहा जाता है। 6. मुगल शासन दो सिद्धान्तों पर आधारित था- सम्राट की निरकुंश शक्ति तथा सैन्य शक्ति। सम्राट स्वयं अधिकारियों को नियुक्त करता था। वित्त विभाग की देखरेख दीवान करते थे। दीवान न्यायाधीश का भी काम करता था। कोतवाल पुलिस विभाग का मुखिया होता था। **(ग)** 1. परगना - प्रत्येक सूबे का छोटा भाग। 2. दीन-ए-इलाही- अकबर द्वारा चलाया गया नया धर्म। 3. मीर-बक्शी- सूबेदार की मदद करने वाला सरकारी अधिकारी। 4. दीवान- वित्त विभाग की देखरेख करने वाला, धार्मिक मामलों का सलाहकार **(घ)** 1. स 2. द 3. ल 4. य 5. र 6. ब 7. अ **(ङ)** 1. अ 2. ब 3. अ 4. ब 5. अ। **परियोजना कार्य-** छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

अध्याय- 5 स्थापत्य कला : किले तथा पवित्र स्थल

(क) 1. विविध प्रकार की स्थापत्य कला यथा प्राचीन किले, महल, मन्दिर एवं अन्य स्मारक। 2. एलोरा में विख्यात कैलाश मन्दिर, एलीफेंट नामक द्वीप पर शिव मन्दिर। 3. पर्वतों के विशाल खंडों को काटकर बनाये गये। 4. (i) अधिकांश इमारतें संगमरमर के बजाये ईंट व बलुई पत्थरों से बनी है। (ii) गुम्बजों का बहुत प्रयोग किया है। 5. ताजमहल 6. दिल्ली का (पुराना किला) महल, नारनौल (हरियाणा) में उसके पिता का मकबरा, सासाराम (बिहार) में शेरशाह का मकबरा। **हॉट प्रश्न –** 1. लोदी शासकों द्वारा निर्मित 'लोदी गार्डन' दिल्ली में स्थित है। 2. माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा मंदिर का निर्माण सोलंकी शासकों ने करवाया। **(ख)** 1. अधिकांश मन्दिरों का निर्माण नागर शैली में, संगमरमर का उपयोग, सुन्दर नक्काशी। 2. एलोरा में ''कैलाश मन्दिर'' जो शैलों को काटकर बनाया गया, रामायण, महाभारत प्रसंगों को दर्शाना, महाबलीपुरम में बनाया गया विश्व विख्यात रथ-मन्दिर। 3. कुतुबमीनार, कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद (दिल्ली में), बीजापुर का गोल गुम्बज। 4. मुगल स्थाप्तय कला चरम सीमा पर, दिल्ली, आगरा, कश्मीर, काबुल, कंधार, अहमदाबाद, अजमेर, आगरा आदि नगरों में भव्य इमारतें, महल, किले, बाग, मस्जिदें आदि बनवायी गयी। विशेषत: विश्व प्रसिद्ध ताजमहल। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 6 नगर, व्यापारी तथा शिल्पकार

(क) 1. भारत में 2. आगरा, दिल्ली, एलिचपुर, कैम्बे, सीकरी, उज्जैन, वाराणसी, जौनपुर, अहमदाबाद, अजमेर, मांडू, लखनऊ, कटक आदि। 3. मथुरा, थानेसर, उज्जैन, वाराणसी, सोमनाथ, पानीपत, मेरठ, पाटलिपुत्र आदि। 4. चालुक्य राजवंश की। 5. अबुल फजल 6. यह पहले डच लोगों की औपनिवेशिक बस्ती थी। डचों ने इसे अंग्रेजां को सौंप दिया। बाद में अंग्रजों को इस बन्दरगाह से स्वतंत्र रूप से व्यापार करने की स्वीकृति मिल गई। बाद में यह नगर पूरी तरह ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में आ गया। 7. विजय नगर साम्राज्य की। **हॉट प्रश्न –** 1. अबुल फजल द्वारा रचित दो ग्रंथों के नाम 'आइने-ए-अकबरी' एवं 'अकबरनामा' है। 2. सूरत नगर की स्थापना गोपी नामक एक हिन्दू ब्राह्मण द्वारा सन् 1516 ईस्वी में की गई थी। **(ख)** 1. अधिकतर नगर गंगा के समतल मैदानों में बसाये गये। सल्तनत काल में अनेक नये नगरों की स्थापना हुई। 2. नये राजवंशों ने नगरीय विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया। 3. अनेक नये नगरों की स्थापना हुई जैसे दिल्ली, आगरा। **(ग)** 1. स 2. र 3. द 4. य 5. ब 6. अ **(घ)** 1. अवशेष 2. सत्रहवीं शताब्दी 3. दिल्ली, आगरा तथा सीकरी 4. विदेशी 5. मछलीयपत्तनम्। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 7 सामाजिक परिवर्तन : भ्रमणशील और स्थायी समुदाय

(क) 1. प्रत्याकर्षक कारक। आकर्षक कारक 2. बेरोजगारी, भूखमरी, अनावृष्टि, बाढ़ें एवं भूकम्प आदि। 3. समाज के संरचनात्मक ताने-बाने एवं संस्कृति एवं परम्पराओं में परिवर्तन। 4. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र 5. स्त्रियों को विशेष सम्मान तथा अधिकार प्राप्त थे। 6. गौंड **(ख)** 1. प्रत्याकर्षक कारक- राजनैतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय। राजनैतिक कारक- युद्ध, प्रभुत्व, राजनैतिक अस्थिरता आदि। आर्थिक कारक- बेरोजगारी, भूखमरी आदि। पर्यावरणीय कारक- अनावृष्टि, बाढ़ें, भूकम्प आदि। 2. खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, जीवन-निर्वाह के साधनों से समाज में काफी परिवर्तन होता है। 3. भारतीय समाज का चार वर्गों में विभाजन, ब्राह्मणों का अधिक सम्मान एवं सुविधायें, कायस्थ नामक नयी जाति का उदय। 4. स्त्रियों को सम्मानीय स्थान, रणकौशल में पारंगत, पति स्वयं चुनना, बहु-पत्नी प्रथा। 5. पहले के व्यवसाय में परिवर्तन, मिश्रित जातियों का उदय, क्षेत्रियों एवं ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा कम होना, छूआछूत आदि। 6. (i) गोंडवाना- मध्य भारत का एक ऐतिहासिक प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आन्ध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्यों में प्रमुख, संख्या लगभग 1 करोड़, सबसे बड़ा जन-जातीय समूह। (ii) अहोम: असम राज्य का प्राचीन नाम, प्रारम्भ में यह कामरूप राज्य का भाग था। **हॉट प्रश्न –** 1. सल्तनत काल में भारतीय समाज दो विशेष समुदायों हिन्दू और मुसलमान में विभाजित था। 2. भारत में लगभग 8.2% भाग जनजाति समुदाय विद्यमान है। **(ग)** 1. भ्रमणशील 2. सम्मानीय 3. दास 4. कायस्थ एवं राजपूत 5. गोंडारण्य **(घ)** 1. 94.8% 2. 87.3% 3. 85.5% 4. 63.7% 5. 93.2% **(ङ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य 6. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 8 लोकप्रिय धर्म और मत

(क) 1. हिन्दू धर्म में फैली हुई बुराइयों को दूर करना। 2. संतों एवं भक्तों में 3. भक्ति आंदोलन के प्रचार-प्रसार के पहले संत थे। वह दक्षिण भारत के रहनेवाले तथा प्रमुख भक्ति प्रचारक थे। 4. सूफी शब्द अरबी भाषा के ''सूफा'' शब्द से बना है जिसका अर्थ है पवित्र। 5. गुरु नानक देव 6. अध्याय में उत्तर उपलब्ध नहीं है। **हॉट प्रश्न –** 1. कबीर जी व्यावसायिक रूप से जुलाहे थे। 2. चिश्ती संप्रदाय की स्थापना हेरात में ख्वाजा अब्दुल चिश्ती द्वारा की गई थी। **(ख)** 1. हिन्दू धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त था जैसे- वैष्णव तथा शैव। उत्तर भारत में पहले से चला आरहा बौद्ध धर्म का प्रभाव क्षीण पड़ गया था। जैन धर्म व्यापारी

वर्ग में लोकप्रिय बना हुआ था। उत्तर भारत में रामानुज के शिष्य रविदास एवं कबीर ने समाज में न्याय, समानता और आपसी एकता पर बल दिया। 2. दक्षिणी भारत में भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ रामानुज ने किया। बल्लभाचार्य दक्षिणी भारत के ब्राह्मण तथा कृष्ण के महान भक्त थे। 3. सूफी का अर्थ ''पवित्र''। मुसलमानों संतों द्वारा प्रचारित शुद्धता तथा त्याग पर आधारित जीवन ही सूफीबाद के रूप में प्रसिद्ध हुआ। ''चिश्ती सम्प्रदाय'' सूफी संतों का प्रमुख सम्प्रदाय है जिसकी स्थापना हेरात में ख्वाजा अब्दुल चिश्ती द्वारा की गई थी। अजमेर की दरगाह इसका प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। 4. ईश्वर की प्राप्ति के लिये प्रेम तथा भक्ति, ईश्वर एक है, मानव से प्रेम ही ईश्वर प्रेम है। 5. ईश्वर ही सत्य है, जातिय भेद अनुचित हैं, सत्कार्यों एवं सच्ची ईश्वर भक्ति अपनाओ, ईश्वर निराकार है। **(ग)** 1. कबीर- निर्गुण भक्ति शाखा के प्रमुख संत,जाति प्रथा तथा मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी। 2. चिश्ती सम्प्रदाय- ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के माध्यम से, भारत में काफी लोकप्रिय, अजमेर में दरगाह। 3. सुहरावर्दी सम्प्रदाय- स्थापना शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा, सिन्ध तथा मुलतान में सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। **(घ)** 1. असत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 9 क्षेत्रीय संस्कृतियों का विकास

(क) 1. भाषा, खानपान, पहनावे, रीति-रिवाजों, परम्पराओं एवं सामाजिक-व्यवस्था का ज्ञान होता है। 2. महाराष्ट्र, पंजाब, अवध, राजपूताना, हैदराबाद एवं बंगाल। 3. 22 भाषाएँ है। 3. इंडो-आर्य, द्रविड, चीन-तिब्बती तथा आस्ट्रो-एशिया। 5. सबसे पुराना, तीसरी शताब्दी से पहले का, अनेक दार्शनिक धर्म एवं धार्मिक ग्रंथ। 6. कुंजन नांबियार तथा उन्नायी वारियर 7. उड़िया भाषा की 8. 100 पृष्ठों वाले 14 विशाल ग्रन्थों का संग्रह। **हॉट प्रश्न –** 1. जयदेव द्वारा रचित अमर कृति 'गीत गोविन्द' है। 2. संविधान की आठवी सूची में मूलतः चौदह भाषाएँ सम्मिलित थी। **(ख)** 1. क्षेत्रीय भाषाएँ अपने-अपने क्षेत्र में विशेष पहचान रखती है। प्रमुख क्षेत्रीय भाषाएँ 13 हैं। 2. क्षेत्रीय संस्कृति में साहित्य, कला, स्थापत्य, सामाजिक संगठन एवं आजीविका के साधन होते हैं। प्रत्येक संस्कृति की अलग-अलग विशेषताएँ हैं। 3. मुगल काल में चित्रकला का काफी विकास हुआ। अकबर ने मुगल शैली को सरंक्षण प्रदान किया। शाहजहाँ ने भी इसे खूब विकसित किया। 4. शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य रागों पर आधारित होता है। शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख विधायें- हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटकी हैं। ठुमरी, ख्याल, ध्रुपद एवं दादरा आदि प्रमुख हैं। 5. बंगाली भाषा में चार्यपदों एवं प्राकृत-पिंगल आदि छंदों की रचना की गई। संस्कृत रामायण का बंगाली में अनुवाद किया गया। चैतन्य महाप्रभु जैसे संतों ने भक्ति आंदोलन का नेतृत्व किया। **(ग)** 1. तमिल साहित्य- ''संगम'' के नाम से प्राचीन साहित्य लिखा गया। कंबन ने तमिल भाषा में रामायण लिखी। 2. मलयाली साहित्य- प्रसिद्ध रचना ''रामचरितम'' है। कथाकारों में मुख्यत: कुंजन नाबियार तथा उन्नायी वारियर अधिक प्रसिद्ध थे। 3. उड़िया साहित्य- पहली गद्य कृत्ति ''मांडला-पन्जी'' है। बाद में ''कलश-चौतीसा'' एवं चंडी-पुराण आदि कृत्तियाँ बहुत प्रसिद्ध हुई। सबसे विख्यात कवि जगन्नाथ दास हुये। 4. असमिया साहित्य- पहली साहित्यिक रचना ''मैना सरस्वती'' द्वारा रचित ''प्रहलाद चरित्र'' है। कविराज माधव कंदली ने संस्कृत रामायण का अनुवाद किया। 5. कन्नड़ साहित्य- नृपतुंग ने ''कविराजमार्ग'' नामक कृत्ति लिखी। पहला उपन्यास नेमिचन्द्र ने ''लीलावती'' के नाम से लिखा। **(घ)** 1. स 2. य 3. द 4. अ 5. ब **(ङ)** 1. संस्कृति 2. एकता 3. 22 4. संगम 5. फारसी। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 10 अठारहवी शताब्दी में स्वतंत्र राज्यों का उदय

(क) 1. 1707 ई. में 2. औरंगजेब की मृत्यु के बाद। क्योंकि वह हिन्दुओं के प्रति कठोर एवं भेदभाव नीति अपनाता था। 3. राजपूतों को प्रसन्न करने के लिये राजा जयसिंह तथा अजीतसिंह को अपने पदों पर बहाल कर दिया। 4. सन् 1764 में सिक्खों ने पंजाब में अपनी प्रभुसत्ता की घोषणा की। उन्होंने स्वयं को 12 मिस्लों में संगठित किया। महाराजा रणजीत सिंह के नेतृत्व में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। 5. बदनसिंह ने जाटों को संगठित कर भरतपुर तथा डीग पर अपना राज्य स्थापित किया। 6. हैदरअली मैसूर की सेना में एक अधिकारी था। हिंदुओं को बिना भेदभाव के उच्च पदों पर नियुक्त किया। 7. शिवाजी ने मराठों को सशक्त नेतृत्व प्रदान कर शक्तिशाली बनाया। उनमें राष्ट्र-भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। **हॉट प्रश्न –** 1. 'मैसूर का चीता' नाम से टीपू सुल्तान विख्यात था। 2. जाट राज्य की स्थापना बदनसिंह ने की। **(ख)** अनेक कारण - 1. उत्तराधिकारी के लिए संघर्ष, हिन्दुओं के साथ दुर्व्यवहार, धार्मिक कट्टरता। 2. राजपूतों ने हिन्दू-विरोधी नीति का विरोध किया। मुगलों से विद्रोह करने में मुख्यत: मेवाड़, मारवाड़, आमेर आदि राज्यों के राजा प्रमुख थे। 3. महाराजा रणजीत सिंह के नेतृत्व में पंजाब में सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य की स्थापना की। 4. मराठों ने छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में शक्तिशाली रूप से संगठित किया। अठारहवीं शताब्दी में मराठे सर्वाधिक प्रबल शक्ति के रूप में विद्यमान थे। **(ग)** 1. 1712 2. समाज सुधारक 3. दसवें तथा अन्तिम 4. बंदा बहादुर 5. शिवनेर **(घ)** भूराजस्व- भूमि पर लगाया गया कर। चौथ- मराठों द्वारा अपने क्षेत्र में लिया जाने वाला राजस्व का चौथाई भाग। सरदेश मुखी- मराठों द्वारा अपने क्षेत्र में कर जो कुछ राजस्व का दसवां भाग होता था। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 11 पर्यावरण के घटक

(क) 1. किसी जीव, समूह अथवा वस्तु के चारों ओर उपस्थित परिस्थितियों से है जो समस्त जीवों यथा मानव, जन्तुओं एवं पौधों के विकास एवं वृद्धि को प्रभावित करती हैं। 2. दो प्रमुख घटक हैं- (i) जैविक (ii) अजैविक 3. मानव निर्मित पर्यावरण को सांस्कृतिक पर्यावरण कहते हैं। उदाहरण हैं- भवन, सड़कें, खेत, संचार एवं परिवहन के साधन। 4. यह हमें शुद्ध वायु, जल तथा भोजन प्रदान करता है। यह हमें ईंधन लकड़ी, इमारती लकड़ी एवं ऊर्जा जैसी उपयोगी संसाधन प्रदान करता है। 5. पौधों एवं जन्तुओं की प्रजातीय भिन्नता बनी रहती है। **हॉट प्रश्न –** 1. पृथ्वी को जल की अधिकता के कारण ही नीला ग्रह कहा जाता है। **(ख)** 1. प्राकृतिक पर्यावरण की दशाओं के अनुसार ही मनुष्य अपने भोजन, वस्त्रों तथा आवास का चयन करता है। प्राकृतिक पर्यावरण की भिन्नता के कारण ही मनुष्य का सांस्कृतिक पर्यावरण अलग-अलग होता है। 2. इससे जीवों की उत्तरजीविता निरन्तर बनी रहती है। प्राकृतिक पर्यावरण की गम्भीर समस्याओं का पता लगाकर उन्हें दूर किया जा सकता है। 3. अनेक कारण हैं- मानव द्वारा अपनी सुविधानुसार बदलाव करना, उनका अनावश्यक दोहन करना, जीवों की उत्तरजीविता एवं अस्तित्व को समाप्त करना आदि। सरंक्षण उत्तरजीविता को बनाये रखने, उपयोगी संसाधन की निरन्तर उपलब्धता के लिये आवश्यक है। 4. प्राकृतिक वातावरण प्रकृति द्वारा निर्मित होता है जबकि सांस्कृतिक वातावरण मनुष्य द्वारा निर्मित होता है। **(ग)** 1. जैविक तथा अजैविक 2. कारक 3. वायुमंडल 4. स्थल मंडल 5. जल मंडल **(घ)** 1. जल मंडल- पृथ्वी का वह भाग जो जल से आच्छादित होता है यथा- महासागर, सागर, झीलें, नदियाँ आदि। 2. वायुमंडल- पृथ्वी के चारों तरफ उपस्थित वायु का सघन आवरण- यथा- तापमान, पवनें, वायुदाब,

वर्षा, आर्द्रता आदि। 3. जैव मंडल- वह परिमंडल जिसमें जीवन पाया जाता है। जैसे- पौधे, पशु, पक्षी, मानव आदि। **(ङ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 12 स्थलमंडल: भूमि का परिमंडल

(क) 1. क्योंकि पृथ्वी मूलत: एक जलीय ग्रह है और जल-संसाधनों का रंग नीला होता है। 2. पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की भू-आकृत्तियाँ जैसे- पहाड़, मैदान, मरुस्थल, पठार, घाटियाँ आदि पाये जाते हैं। 3. सामान्यत: अप्रत्यक्ष स्त्रोतों से। इनमें मुख्य स्त्रोत भूकम्प है। 4. ठोस परत या भू-पर्पटी कहते हैं। इसकी रचना मुख्यत: शैलें तथा मिट्टी करती है। 5. अफ्रीकी, अमेरिका, अंटार्कटिका, इंडो-आस्ट्रेलियम, यूरेशियन तथा पैसेफिक 6. दो प्रकार के- अंतर्बेधी तथा बहिर्बेधी **हॉट प्रश्न –** 1. पृथ्वी का सबसे ऊँचा बिन्दु हिमालय पर्वतमाला में स्थित माउंट एवरेस्ट (8,850 मी.) है तथा सबसे गहरा बिन्दु प्रशांत महासागर में स्थित मेरियाना ट्रेंच (11,034 मी.) है। 2. भूकंपीय तरंगे तीन प्रकार की होती है – प्राथमिक, द्वितीयक अथवा गौण तथा धरातलीय तरंगे। **(ख)** 1. आन्तरिक भाग ठोस है। बाह्य क्रोड तरल है। दुर्बलता मंडल प्लास्टिक की तरह बहुत लचीला है। 2. क्योंकि भूकम्पीय तरंगे पृथ्वी के आन्तरिक उद्गम केन्द्र से उत्पन्न होती हैं। 3. तीन प्रमुख परते हैं- भूपटल, प्रावा अथवा मैंटल, क्रोड भूपटल की रचना शैलें तथा मिट्टी करती है। प्रावार की रचना सघन तथा ठोस शैलों से हुई है। क्रोड पृथ्वी का केन्द्रीय भाग है। 4. शैलें पृथ्वी पर उपस्थित चट्टानों या खनिजों के समूह को कहते हैं। प्रमुख शैलें हैं- 1. आग्नेय शैल 2. अवसादी शैलें 3. कायांतरित शैलें **(ग)** 1. जलीय 2. मेरियाना ट्रेंच 3. भू-पर्पटी 4. 2700 5. अंतर्बेधी, बहिर्बेधी **(घ)** 1. ब 2. स 3. द 4. य 5. अ **(ङ)** 1. वर्षण – वर्षा जो महासागरों से पानी के बादल बनने से होती है। 2. भू-आकृति – पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ जैसे- पहाड़, घाटियाँ, मैदान। 3. कायांतरित शैल – दबाव या अत्यधिक गरमी या तापमान के कारण अवसादी शैलों के गुणों, स्वरूप तथा विशेषताओं में गम्भीर बदलाव 4. वलन – आन्तरिक बल के कारण पृथ्वी धरातल पर होने वाले परिवर्तन यथा भूकम्प। 5. भू-पटल – पृथ्वी की सर्वाधिक ऊपरी पतली ठोस परत। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 13 प्रमुख स्थलाकृतियाँ

(क) 1. पृथ्वी के धरातल पर विभिन्न आकृतियाँ जैसे- पर्वत, मैदान, डेल्टा। 2. ऐसे पर्वत जिनकी उत्पत्ति धरातल के शैलों में एकाएक मोड़ आ जाने के कारण होती है। 3. पर्वतों तथा मैदानों के बीच का ऊपर उठा हुआ भाग। 4. ज्वालामुखी पर्वतों से निकलने वाला पदार्थ। 5. ऐसे ज्वालामुखी जिनमें कभी विस्फोट हुआ था किन्तु अब वे शान्त हैं जैसे- विसूवियस ज्वालामुखी (सिसली)। 6. भवन, सड़कें, पुल, बाँध आदि टूट जाते हैं। वृक्ष, बिजली आदि के खम्भे जमीन पर गिर जाते हैं। नदियाँ अपना मार्ग बदल लेती हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. भारत में बैरन द्वीप, जापान में फ्यूजीयामा तथा सिसली में माउंट एटना सक्रिय ज्वालामुखी पर्वतों के उदाहरण है। 2. सागरीय भूकंपीय तरंगे सुनामी के नाम से भी जानी जाती है। **(ख)** 1. ऐसा भू-भाग जो आसपास की भूमि की तुलना बहुत अधिक ऊँचा हो। चार प्रकार के- वलित पर्वत, ब्लाक पर्वत, ज्वालामुखी पर्वत एवं अवशिष्ट पर्वत। 2. भू-पर्पटी में उपस्थित एक छिद्र जिसके मुख से लावा, गैसें, भाप व ठोस शैलों आदि का उत्सर्जन होता है। 3. पृथ्वी में उत्पन्न आकस्मिक कंपन ही भूकंप है। इसके आने पर भवन, सड़कें, पुल, बाँध टूटते है, वृक्ष, बिजली के खम्भे गिर जाते है। नदियाँ मार्ग बदल लेती है। 4. इसमें 40,000 लोग मर गये। 70,000 लोग घायल हो गये। 50 लाख से अधिक बेघर हो गये। **(ग)** 1. वलित पर्वत- वे पर्वत जिनकी उत्पत्ति पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों द्वारा बड़े पैमाने पर हुए मोड़ (वलन) के कारण हुई हो । 2. अवशिष्ट पर्वत- जिन पर्वतों की रचना अपक्षय या अपरदन के कारण हुई हो। 3. मैदान- वे समतल स्थान जिनकी ढाल मंद होती है। 4. सक्रिय ज्वालामुखी- वे ज्वालामुखी जो निरन्तर ज्वाला उगलते रहते हैं। 5. मृत ज्वालामुखी- जिनमें पहले विस्फोट हुआ था किन्तु अब सक्रिय होने की संभावना नहीं है। 6. भूकम्प अधि केन्द्र- भूकम्प की तरंगों से जिस बिन्दु पर ऊर्जा उत्पन्न होती है। **(घ)** 1. द 2. य 3. र 4. स 5. ब 6. अ **(ङ)** 1. वलित पर्वत 2. जापान का, फ्यूजीयामा 3. मैदान 4. भूकम्प। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 14 वायुमंडल

(क) 1. वायु 2. पृथ्वी के चारों तरफ का वायु का सघन आवरण 3. क्षोभमंडल, समताप मंडल, मध्यमंडल तथा तापमंडल 4. यह पृथ्वी धरातल पर विद्यमान जीवन के लिये सुरक्षात्मक कवच का काम करती है। 5. अक्षोभ, सागरतल से ऊँचाई, सागर तट से दूरी 6. जल का अपने तरल रूप से भाप या गैस में परिवर्तन **हॉट प्रश्न –** 1. पौधों के अस्तित्व के लिए सबसे अधिक अनिवार्य गैस नाइट्रोजन है। 2. विश्व की सर्वाधिक वर्षा मेघालय (भारत) स्थित मौसिनराम नामक स्थान पर होती है। **(ख)** 1. वायुमंडल पृथ्वी के धरातल से लगभग 1000 किलोमीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण यह पृथ्वी के साथ बँधा रहता है। इसके तीन प्रमुख घटक- नाइट्रोजन, ऑक्सीजन एवं कार्बन-डाइआक्साइड हैं। 2. (i) क्षोभमंडल- यह सबसे निचली परत है। (ii) समताप मंडल- यह क्षोभमंडल के ऊपर 50 किलोमीटर तक फैली हुई है। (iii) मध्य मंडल- समताप मंडल तथा तापमंडल के बीच में स्थित परत है। (iv) तापमंडल- पृथ्वी धरातल के ऊपर 30 किलोमीटर के ऊपरी भाग में फैला हुआ है। 3. वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प की मात्रा को वायुमण्डलीय आर्द्रता के नाम से जाना जाता है। 4. बादलों में मौजूद उपस्थित जल कण आपस में मिलकर बड़ा आकार ग्रहण करके बूँदों का रूप ले लेते हैं और पृथ्वी धरातल पर गिरना प्रारम्भ कर देते हैं। इसके तीन प्रकार है- संवहनीय, पर्वतीय, चक्रवातीय **(ग)** वाष्पीकरण- जल का तरल रूप से वाष्प या गैस में बदलना। संतृप्त वायु- वायु में जलवाष्प की उतनी मात्रा जितनी कि वह एक निश्चित तापमान पर ग्रहण कर सकती है। ओसांक- वह तापमान जिस पर जलवाष्पयुक्त वायु संतृप्त होती है। आर्द्रता- वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प की मात्रा। क्षोभ सीमा- वायुमंडल की सबसे निचली परत की ऊपरी सीमा। संघनन- वह प्रक्रिया जिससे बादलों, कोहरे तथा पाले की रचना होती है। **(घ)** 1. वायुमंडल 2. नाइट्रोजन 3. अक्षांश 4. 165 5. ओसांक **(ङ)** 1. असत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 15 जलमंडल

(क) 1. अधिकांश जल विविध जल राशियों यथा- महासागरों, सागरों, झीलों, नदियों, हिम परतों एवं हिमनदों में पाया जाता है। 2. प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर, हिन्द महासागर, आर्कटिक महासागर। 3. भूमध्य सागर, बाल्टिक सागर, दक्षिण चीन सागर, लाल सागर। 4. इनके जल में सोडियम क्लोराइड, मैग्नेशियम क्लोराइड तथा खनिज-लवण होने के कारण। 5. पवनों के थपेड़ों के कारण 6. महासागरों तथा सागरों का जल एक निश्चित समय अंतराल पर ऊपर की ओर उठता है तथा फिर नीचे गिरता है। इसे ज्वार भाटा कहते है। 7. दो प्रकार की- गरम धाराएँ, ठंडी धाराएँ **हॉट प्रश्न –** 1. उच्च ज्वार के समय बड़े जलयान पोताश्रय तक आसानी से पहुँच जाते है तथा भाटे के समय

सरलता से बाहर निकल आते है। उच्च ज्वार विद्युत उत्पादन के लिए भी उपयोगी होते है। 2. पृथ्वी धरातल का लगभग 71% भाग जल से घिरा हुआ है। **(ख)** 1. पृथ्वी के सात महाद्वीप महासागरों से घिरे हुए हैं। महासागर ऊष्मा तथा ऊर्जा के विशाल भंडार है। जल महासागरों से वायुमंडल में तथा वहाँ से पुन: महासागरों में संचरण करता रहता है। इसे जल-चक्र कहते हैं। (चित्र छात्र स्वयं बनायें) 2. तापमान को मृदु बनाते हैं। इनमें जलीय जन्तु एवं पौधे होते है। जल-परिवहन की सुविधा होती है। जल खारा होता है। 3. महासागरों के जल का प्रतिदिन समय-समय पर ऊपर की ओर उठना और नीचे गिरना। ज्वार की उत्पत्ति का कारण पृथ्वी पर चन्द्रमा तथा सूर्य की आकर्षण शक्ति या बल है। 4. महासागरीय जलराशि का किसी निश्चित दिशा में बहना। प्रशान्त महासागर की गरम धाराएँ- उत्तरी विषुवतीय धारा, दक्षिणी विषुवतीय धारा, पूर्वी आस्ट्रेलिया धारा, कुरोसिवो धारा। ठंडी धाराएँ- पीरु धारा, कैलिफोर्निया धारा, कामचटका धारा, पश्चिमी पवन प्रवाह 5. शीतल धाराएँ अपने आस-पास के तटीय क्षेत्रों को ठंडा रखती है तथा गरम धाराएँ जलवायु को गरम बनाये रखती हैं। मछली-उत्पादन, नौ-परिवहन, व्यापार आदि कामों पर लाभकारी प्रभाव डालती हैं। **(ग)** 1. भूमिगत जल- धरातल के नीचे असरंध्र शैली में संचित वर्षा-जल 2. महासागरीय जल की लवणता- महासागरों के जलों का खारापन 3. वृहत ज्वार- सामान्य से नीचा ज्वार 4. लघु ज्वार- जब उच्च ज्वार सामान्य से कम ऊँचा होता है 5. लहरें- पवन के थपेड़ों के कारण उत्पन्न तरंगे 6. सुनामी- विशाल सामुद्रिक भूकम्प के कारण उत्पन्न लहरें जो समुद्र क्षेत्र में महाविनाश करती है। **(घ)** 1. स 2. द 3. ब 4. य 5. अ **(ङ)** 1. चार 2. तापमान 3. खारा अथवा लवणीय 4. लहरें 5. तटवर्ती। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 16 जैवमंडल

(क) 1. पृथ्वी का वह परिमंडल जो समस्त जीवन को पोषित करता है। 2. समस्त प्राकृतिक वनस्पतियाँ जैसे- वन, घास, कँटीली झाड़ियाँ आदि। 3. ये वृक्ष पतझड़ की ऋतु में अपनी पत्तियाँ गिरा देते है। इन वनों में साल, टीक, शीशम, चन्दन आदि प्रमुख है। 4. लनौज, प्रेयरी, पम्पाज, वेल्ड व डाउंस। 5. वन्य जीव समाप्त हो रहे है। **हॉट प्रश्न –** 1. अफ्रिका में पाई जाने वाली घास भूमियों के नाम सवाना तथा वेल्ड है। 2. जलवायविक परिस्थितियाँ वहाँ पाई जाती है जहाँ की जलवायु गरम तथा शुष्क होती है। ऐसी जलवायविक परिस्थितियों में केवल वही पौधे अथवा वनस्पति उगती है जो जल के अभाव को सहन कर सकती है।**(ख)** 1. समस्त प्राकृतिक वनस्पतियाँ मिलकर वनस्पति-जगत बनाते हैं। सभी प्रकार के पेड़-पौधे जो प्राकृतिक रूप से उगते हैं जैसे वन, घास, कँटीली झाड़ियाँ आदि। वन पाँच प्रकार के हैं- (i) उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन (ii) उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन (iii) विषुवतीय चौड़ी पत्तियों वाले वन (iv) शीतोष्ण कटिबन्धीय चौड़ी पत्तियों वाले वन (v) शंकुधारी वन। 2. घास भूमियाँ दो प्रकार की हैं- उष्ण कटिबंधीय घास भूमियाँ एवं शीतोष्ण कटिबन्धीय घास भूमियाँ। अधिकांश घास भूमियों का उपयोग कृषि क्षेत्रों एवं चरागाहों के रूप में किया जाता है। 3. जिनको बहुत कम मात्रा में पानी की आवश्यकता हो- यथा नागफनी, कैक्टस तथा कँटीली झाड़ियाँ। 4. वन्य जीवन में प्राणी अथवा जन्तु मुख्यत: जंतु, सरीसृप, कीट, मछलियों आदि करोड़ों प्रकार की प्रजातियाँ पायी जाती है। अफ्रीका के वनों में हाथी, चिम्पेंजी, गौरिल्ला, बंदर, साँप, मगरमच्छ तथा अन्य वनों में चीता, सिंह, बाघ, तेन्दुआ, हिरण, लंगूर, भालू, साँप, गेंडा, बारहसिंगा, जेब्रा, जिराफ आदि पाये जाते हैं। **(ग)** 1. हरित 2. वर्षा, तापमान 3. घास 4. पालतू 5. एंडीज, लामा **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य । **(ङ)** 1. समस्त पौधे एवं जन्तु 2. जीवधारियों के बीच भोजन संबंधी पारस्परिक सम्बन्ध 3. पर्यावरण के दो घटक- (1) जैविक घटक (2) अजैविक घटक **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 17 मानवीय पर्यावरण

(क) 1. मानव द्वारा निर्मित पर्यावरण 2. मकानों का समूह जहाँ मनुष्य रहते है 3. एक ही स्थान पर सभी जीवनोपयोगी सुविधाओं हेतु 4. कच्चे मकान होते थे जिनमें झोंपड़िया होती थी। 5. धरातल बस्तियों की स्थापना में श्रेष्ठ होता है क्योंकि वहाँ भूमि उपजाऊ होती है, पर्याप्त जल मिलता है, यातायात सुलभ होता है। 6. सड़क मार्ग, रेल-मार्ग, जल मार्ग एवं वायु मार्ग 7. इसके लिये मार्ग बनाने एवं उसकी मरम्मत पर कोई व्यय नहीं होता 8. जन संचार के साधनों से कोई भी समाचार या सूचना लाखों लोगों तक पहुँचायी जा सकती है जैस- समाचार-पत्र, पत्रिकायें, पुस्तकें, टेलीविजन, रेडियो एवं सिनेमा आदि। **हॉट प्रश्न –** 1. भारत में सर्वप्रथम रेलगाड़ी मुंबई तथा थाणे के बीच 1853 ई. में चली थी। 2. सर्वाधिक तीव्रगामी और महँगा परिवहन वायु परिवहन है। **(ख)** 1. पहले मनुष्य भ्रमणशील रहता था क्योंकि उसे विभिन्न स्थानों से भोजन संग्रह करना पड़ता था। बाद में उसने खेती करना एवं पशु-पालन सीखा तो वह कच्ची बस्ती एवं झोंपड़ियों में रहने लगा। धीरे-धीरे समतल एवं उपजाऊ भूमि की सुविधा के कारण स्थाई बस्तियों में रहने लगा। 2. उपयोग, आकृति, व्यवसाय, स्थिति आदि। 3. स्थिति से आशय उन स्थानों से है जहाँ बस्तियों की स्थापना की जाती है। स्थापना से पूर्व दो कारक मुख्य हैं- जल, उपयुक्त धरातल 4. सड़क परिवहन- बैलगाड़ी, ट्रक, बस, कारें आदि। रेल परिवहन- सवारी गाड़ी, मालगाड़ी एवं मेट्रो ट्रेन आदि। जल परिवहन- नदियाँ, झीलें, नहरें एवं समुद्र आदि के मार्ग। वायु परिवहन- वायुयान, हेलीकोप्टर आदि। 5. मानव के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में बहुत बड़ा योगदान किया है। दूरियाँ कम हुई है। समाचार बहुत शीघ्र पहुँचते हैं। **(ग)** 1. बस्ती- मकानों का समूह जहाँ लोग रहते हैं। 2. अस्थायी बस्ती- जहाँ लोग कुछ समय तक रहते हैं। 3. सघन बस्ती- जहाँ मकान एक-दूसरे के निकट होते हैं। 4. विरल बस्ती- जहाँ मकान बहुत दूर-दूर होते है। 5. भोजन का संग्राहक भोजन एकत्र करना। **(घ)** 1. भ्रमणशील 2. आकृति 3. समतल मैदान 4. चार 5. सड़क **(ङ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य **(च)** 1. स 2. द 3. य 4. ब 5. अ **(छ)** 1. ब 2. ब 3. स 4. स । **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 18 लोकतंत्र

(क) 1. लोगों का प्रशासन या जनता का राज्य 2. ऐसी सरकार जिसमें शासन करने की सारी शक्तियाँ किसी एक व्यक्ति या दल के हाथ में होती है। 3. वंशानुगत राजा का सम्पूर्ण नियंत्रण होता है। 4. जनता द्वारा चुने हुए सांसदों के माध्यम से सरकार बनती है। 5. एकात्म सरकार में समस्त शक्तियाँ केन्द्र सरकार के पास होती है जबकि संघीय सरकार में केन्द्र एवं राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन रहता है। 6. देश का अध्यक्ष सर्वोच्च शक्तिशाली होता है। वह समस्त शक्तियों का प्रयोग करता है। **हॉट प्रश्न –** 1. 'हेरोडोट्स' यूयान के विख्यात दार्शनिक एवं इतिहासकार थे। 2. लोकतंत्र का उदय प्राचीन यूनानी नगर एथेन्स में आज से लगभग 2800 वर्ष पूर्व हुआ था। **(ख)** 1. लोकतंत्र लोगों की, लोगों के लिये तथा लोगों द्वारा बनायी गयी सरकार होती है। जनता को अपनी पसन्द का प्रतिनिधि चुनने एवं सरकार बनाने का अधिकार होता है। 2. (i) तानाशाही- सरकार का संचालन शासक अपनी इच्छा से करता है। (ii) लोकतंत्र- जनता के द्वारा चुनी हुई सरकार कार्य करती है।

(iii) राजतंत्र- राजा शासक होता है और उसके उत्तराधिकारी मृत्यु के बाद राज करते हैं। 3. समस्त शक्तियाँ केन्द्र में निहित, राज्यों तथा स्थानीय निकायों में पृथक विधायिका का न होना, इकहरी नागरिकता, कठोर किन्तु लचीला संविधान। 4. केन्द्र एवं राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन, संविधान देश का सर्वोच्च कानून, निष्पक्ष न्यायपालिका 5. भारत में जनता द्वारा अपने प्रतिनिधियों का चुनाव वयस्क मताधिकार द्वारा होता है। राज्यों में विधायक जनता के मतों द्वारा चुने जाते है, जबकि केन्द्र में सांसद चुने जाते हैं। इन चुने हुए सांसदों से बहुमत दल का नेता प्रधानमंत्री बनता है। जबकि राज्यों की विधानसभा में विधायकों में बहुमत दल का नेता मुख्य मंत्री बनता है। **(ग)** 1. लोगों द्वारा बनायी गयी 2. प्रत्यक्ष 3. तानाशाही 4. केबिनेट सरकार 5. एकात्मक **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. असत्य 5. सत्य **(ङ)** 1. संसद के लिये जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की सरकार 2. देश का निर्वाचित अध्यक्ष सर्वोच्च एवं वास्तविक मुखिया 3. समानता का अधिकार, निजी विकास के अवसर, सरकार का चुनाव जनता के मतों से 4. सार्वजनिक सहभागिता, आलोचना या विरोध का अधिकार **(च)** 1. ब 2. अ 3. स। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 19 लोकतंत्र का संस्थागत प्रतिनिधित्व

(क) 1. 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के नागरिकों को मत देने का अधिकार 2. चुनाव के द्वारा लोकतंत्र में सरकार बनायी जाती है। जनता की सहभागिता होती है। मतदान करते समय मतदाता अपनी पसन्द के व्यक्ति को चुनते हैं। चुनाव के द्वारा सरकार को बदला जा सकता है। 3. वोट जनता द्वारा बिना किसी को बताये गुप्त रूप से किया जाता है। 4. निर्धारित तिथि तक, जमानत राशि जमा करना, नामांकन पक्षों की पूरी जाँच 5. चुनाव में होने वाली अनियमितताओं के विरुद्ध न्यायालय में वाद प्रस्तुत करना 6. जो दल सत्ता में नहीं होता **हॉट प्रश्न –** 1. सार्वभौम वयस्क मताधिकार नागरिकों का अधिकार है। 2. भारतीय राजनीतिक दलों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। (अ) राष्ट्रीय राजनीतिक दल (ब) क्षेत्रीय राजनीतिक दल। **(ख)** 1. अपने पसन्द के प्रत्याक्षी चुनने का मताधिकार है। यह अधिकार प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को जाति, धर्म, वर्ग या लिंग के भेदभाव के बिना प्राप्त होता है। 2. चुनावों द्वारा सरकार बनती है। 3. चुनाव तिथियों की घोषणा, नामांकन पत्र भरना, चुनाव चिन्ह देना, चुनाव प्रचार, वास्तविक मतदान, मतदान का परिणाम 4. राजनैतिक दल लोगों की इच्छाओं को व्यक्त करते हैं तथा बिखरे हुए राजनैतिक विचारों को एक निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। 5. ग्रामीण क्षेत्रों को रोजगार, कम्पनियों का निजीकरण, दलितों एवं जन-जातियों को निजी क्षेत्र में भी आरक्षण, महिलाओं को एक-तिहाई स्थान देना आदि। **(ग)** 1. असत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य 6. असत्य **(घ)** 1. गुप्त मतदान से लोग बिना किसी दबाव एवं भय के अपना प्रतिनिधि चुन सकते हैं। 2. भारत में अनेक राजनैतिक विचारधारा के अलग-अलग दल हैं 3. 6 अप्रेल 1980 में बनी। चुनाव चिन्ह कमल है। 4. पूर्ण बहुमत ना होने की स्थिति में कई राजनैतिक दलों के निर्वाचित प्रतिनिधियों से बनी सरकार **(ङ)** 1. अ 2. अ 3. स। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 20 राज्य सरकार

(क) 1. 29 राज्य तथा 7 केन्द्र शासित प्रदेश 2. सभी राज्यों को स्वायत्तता, संसदीय एवं विधायिका निर्वाचित 3. राज्य सूची एवं समवर्ती सूची में वर्णित विषयों पर 4. विधान सभाओं में अधिकतम संख्या 500 तथा न्यूनतम 60, विधायक जनता द्वारा गुप्त मतदान से निर्वाचित 5. 18 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के लोगों द्वारा प्रत्यक्ष गुप्त-मतदान द्वारा 6. राष्ट्रपति 7. निर्वाचित विधायकों द्वारा बहुमत दल वाले व्यक्ति को नेता चुनकर मुख्यमंत्री बनाया जाता है। **हॉट प्रश्न –** 1. राज्य की कार्यपालिका का मुखिया मुख्यमंत्री होता है। 2. मंत्री परिषद में तीन स्तर के मंत्री सम्मिलित होते हैं। जैसे – कैबिनेट स्तर के मंत्री, राज्य स्तर के मंत्री तथा उपमंत्री। **(ख)** 1. विधानसभा के सदस्य वयस्क नागरिकों द्वारा प्रत्यक्ष गुप्त मतदान द्वारा चुने जाते हैं। 2. विधान परिषद ऊपरी सदन होता है। इसके सदस्यों का निर्वाचन जनता द्वारा प्रत्यक्ष मतदान से नहीं होता। विधान सभा राज्य की अनिवार्य संस्था है जबकि विधान परिषद ऐच्छिक संस्था है। 3. राज्य सूची एवं समवर्ती सूची में वर्णित सभी विषयों पर कानून बनना और उन्हें लागू करवाना 4. विधानसभा का सत्र बुलाना एवं उकस समापन करना, संवैधानिक मुखिया के रूप में कार्य करते हुए नियुक्तियाँ करना, विधान सभा में पारित विधेयकों को स्वीकृत। अस्वीकृत करना। 5. बहुमत दल का नेता चुनने के बाद उसकी नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है। वह सरकार की समस्त नीतियों एवं कार्यक्रमों को चलाता है। 6. प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन राज्यपाल के नाम से किया जाता है। कार्यपालिका का वास्तविक प्रमुख मुख्यमंत्री होता है जो नौकरशाही के माध्यम से प्रशासन चलाता है। **(ग)** 1. राज्यों 2. केन्द्र 3. विधान-मंड़ल, विधान सभा, विधान परिषद 4. नाम मात्र का 5. मुख्यमंत्री **(घ)** 1. प्रशासन का कार्य चलाने हेतु अलग-अलग विभागों के सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी 2. कई राजनैतिक दलों की मिलीजुली सरकार 3. प्रशासनिक कार्यों को चलाने के लिए सरकारी अधिकारी व कर्मचारी **(ङ)** 1. अ 2. स 3. अ। **(च)** 1. 47 2. 500 3. 60 4. 18 वर्ष 5. छः वर्ष **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 21 लोकतंत्र में जनसंचार का महत्व

(क) 1. ऐसा माध्यम जिसके द्वारा एक ही समय में अनेक लोगों को सूचना या समाचार भेजना 2. मौलिक अधिकारों की अभिव्यक्ति, जनमत बनना 3. जनता के विचार तैयार करना 4. लिखित अथवा छपे हुए साधन जैसे- समाचार-पत्र, पत्रिकायें, पुस्तकें आदि 5. विद्युत एवं यंत्रों से संचालित आधुनिकतम साधन यथा- रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट, सिनेमा आदि 6. वर्ष 2000 में। **हॉट प्रश्न –** 1. जनसंचार से तात्पर्य एक ऐसे माध्यम से है जिसके द्वारा एक ही समय में असंख्य लोगों तक किसी सूचना या संदेश को भेजा जा सकता है। 2. जनसंचार का श्रव्य साधन रेडियो है। **(ख)** 1. ये जनमत निर्माण का कार्य करते हैं। विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका लोकतंत्र के तीन स्तम्भ हैं किन्तु चौथा स्तम्भ जनसंचार लोकतंत्र में लोगों की विचारधारा बनाने में महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। 2. जनसंचार के दो साधन हैं- (i) मुद्रित साधन (ii) इलैक्ट्रोनिक साधन मुद्रित साधन- समाचार-पत्र, पत्रिकायें एवं पुस्तक आदि हैं। इलैक्ट्रोनिक साधन- रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट एवं सिनेमा आदि हैं। 3. लोकतंत्र में इनका सही दिशा में कार्य करना अथवा निष्पक्ष भाव से तथा आलोचनात्मक टिप्पणियाँ करना अनिवार्य है। 4. जनता को प्रत्येक बात की जानकारी प्राप्त करने का अधिकार, लाभ- मूल दस्तावेज की जानकारी, कार्यों की प्रगति एवं परीक्षण भ्रष्टाचार में कमी 5. समाचार-पत्र, डाक द्वारा विज्ञापन, अपीलें, पोस्टर, हैण्डबिल, रेडियो एवं टेलीविजन, सिनेमा आदि **(ग)** 1. चौथे 2. रेडियो 3. दृश्य-श्रव्य 4. लोकतंत्र 5. विज्ञापन दाता **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. सत्य **(ङ)** जो हमें लिखित या मुद्रित रूप में प्राप्त होते है। 2. जो हमें सुनकर प्राप्त होते है। 3. जो हमें देखकर और सुनकर प्राप्त होते है। 4. छपे हुए साधन 5. जनता के विचार 6. सुनने के साधन। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 22 लैंगिक भेदभाव

(क) 1. लड़के एवं लड़कियों में असमानता 2. समाज में महिलाओं का निम्न स्तर, महिला शिक्षा की उपेक्षा 3. शारीरिक रूप से सक्षम, अधिक उपद्रवी एवं शरारती 4. रोजगार एवं व्यवसाय में कम परिश्रमिक देना, कठिन परिश्रम के योग्य न समझना, दूरस्थ स्थानों पर न भेजना, रात्रिकालीन कार्यों में न भेजना 5. कन्या को अभिशाप समझना, लड़कियों को पराया धन समझना, लालन-पालन में भेदभाव, भ्रूण हत्या 6. भारतीय समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति में परिवर्तन कर उन्हें अधिक योग्य, शक्तिशाली एवं अधिकार-सम्पन्न बनाना। **हॉट प्रश्न –** 1. ब्रह्म समाज व आर्य समाज की स्थापना क्रमशः राजा राममोहन राय ने और स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी। 2. मुस्लिम समाज सुधारक का नाम सर सैय्यद अहमद खाँ है। **(ख)** 1. पर्दा-प्रथा, पिता एवं पति की सम्पत्ति में अधिकार न प्राप्त होना, दहेज-प्रथा, शिक्षा की उपेक्षा 2. कम मेहनताना, दूरवर्ती स्थानों पर न भेजना, रात्रिकालीन कार्यों में न भेजना, परिजनों की सम्पत्ति में हिस्सा न देना 3. लड़कियाँ कोमल तथा सुशील होती हैं, लड़कियाँ केवल घरेलू कार्यों के लिये होती है, ये भावुक होती हैं 4. सशक्तिकरण आवश्यक हैं ताकि उनकी दयनीय दशा में सुधार हो सके। प्रयास- बाल-विवाह, पर्दा-प्रर्था, सतीप्रथा पर रोक, कन्या शिशु हत्या पर रोक, महिला शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार, आय-उत्पादक अवसर प्रदान करना 5. राजाराम मोहनराय- सती प्रथा एवं बाल-विवाह को रोकना। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर- विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन। दयानन्द सरस्वती- कन्या शिशु हत्या, बाल-विवाह को रोकना **(ग)** 1. लैंगिक 2. कोमल, सुशील 3. उत्तर 4. दयानन्द सरस्वती 5. स्त्री/महिला समाज **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य **(ग)** 1. लड़की की आयु 18 वर्ष एवं लड़के की आयु 21 वर्ष होने से पहले होने वाला विवाह 2. पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता के साथ जीवित जलना 3. पति की मृत्यु के बाद दुबारा विवाह करना 4. लड़कियों को जन्म से पहले ही मार देना। **(च)** 1. अ 2. ब 3. अ 4. अ। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 23 बाज़ार

(क) 1. वह स्थान जहाँ वस्तुओं को खरीदा-बेचा जाता है। 2. थोक व्यापार में बड़ी मात्रा क्रय-विक्रय व्यापारियों के बीच होता है, जबकि फुटकर-व्यापार में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में उपभोक्ता को माल बेचा जाता है। 3. खुदरा व्यापार से ही हमारे उपयोग की सभी वस्तुएँ उपभोक्ता तक पहुँचती हैं। 4. वस्तुओं की किस्म या उसके गुण। श्रेष्ठ गुणवत्ता वाली वस्तुएँ अधिक पसन्द की जाती है और उनके उपयोग से संतुष्टि प्राप्त होती है। 5. आय-चक्र से तात्पर्य अपनी आमदनी के अनुसार वस्तुओं की खरीद-बिक्री। यदि दुकानों पर ग्राहक की आय के अनुसार मँहगी एवं सस्ती सभी प्रकार की वस्तुएँ उपलब्ध हो तो दुकान की लोकप्रियता बढ़ जायेगी। **हॉट प्रश्न –** 1. व्यापारिक श्रृंखला से तात्पर्य है – उत्पादक → एजेंट → थोक व्यापारी → खुदरा व्यापारी → ग्राहक (उपभोक्ता)। 2. मॉल – विशाल तथा आधुनिक बाजार है। ऐसे बाजार महानगरों में स्थित पाए जाते है। हम मॉल से अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ खरीद सकते हैं। **(ख)** 1. वस्तुओं को क्रय-विक्रय का स्थान, उपयोग की सभी वस्तुएँ उपलब्ध कराना, व्यापारियों को माल बेचकर आय-प्राप्ति। 2. बाजार में वस्तुओं की उपलब्धता, सुविधायें, गुणवत्ता, उधार, दाम, आय-चक्र। 3. उत्पादक से → एजेन्ट 2. थोक व्यापारी → खुदरा व्यापारी → ग्राहक (उपभोक्ता) **(ग)** 1. थोक बाजार 2. फुटकर बाजार 3. खुदरा बाजार 4. महत्ता 5. नकद 6. उच्च आय-वर्ग। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

कक्षा - 8

अध्याय- 1 भारत और आधुनिक विश्व : एक परिचय

(क) 1. भारत में आधुनिक युग का प्रारम्भ अठारहवीं शताब्दी में हुआ। 2. आधुनिक भारतीय इतिहास की जानकारी के प्रारम्भिक स्त्रोत, सरकारी दस्तावेज, अभिलेख और किताबें हैं। 3. फ्राँस की क्रान्ति ने अन्य देशों को स्वशासन (प्रजातन्त्र) के लिए प्रेरित किया। इस कारण इसे विश्व क्रान्ति कहा जाता है। 4. 1917 की रूसी क्रान्ति रूस के शासक जार के निरंकुश शासन से मुक्ति पाने के लिए हुई। **हॉट प्रश्न –** 1. पूँजीवाद एक ऐसा आर्थिक तंत्र होता है, जिसमें वस्तुओं का उत्पादन और वितरण निजी स्वामित्व अथवा पूँजी पर निर्भर करता है और इसे कुछ ही लोगों द्वारा संचालित किया जाता है, जिन्हें पूँजीवादी कहते है। 2. रूसी क्रांति के कारण – (अ) उत्तरी अमेरिका में इंग्लैण्ड से आए हुए अनेक लोग बस गए थे। उन्हें वे अधिकार नहीं थे जो इंग्लैण्ड में बसे हुए अंग्रेजों को थे। (ब) इंग्लैण्ड की सरकार उनसे कर तो वसूल करती थी लेकिन उन्हें बदले में सुविधाएँ नहीं देती थी। (स) उनका शोषण हो रहा था। (द) उत्तरी अमेरिका के 13 उपनिवेशियों ने मिलकर 4 जुलाई 1776 को अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। इस घोषणा में कहा गया कि सभी मनुष्य आपस में समान है। **(ख)** 1. आधुनिक विश्व के निर्माण में पुनर्जागरण का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके द्वारा प्राचीन धारणाओं की नये संदर्गों में स्थापना हुई। रूढ़िवादिता का अन्त होकर नवीन वैज्ञानिक विचारों की स्थापना हुई। व्यापार-वाणिज्य की वृद्धि हुई, नवीन आविष्कार हुए और कई नये देशों की खोज की गई। यूरोप वासियों ने रोमन कैथोलिक चर्च के अंधविश्वासों का अन्त करने तथा निरंकुश शासकों के अत्याचारी शासन का अन्त करने की शुरुआत की। पुनर्जागरण के कारण ही औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। समाज का मध्यम वर्ग ताकतवर बना। 2. मध्यकाल में आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन हाथ से किया जाता था। उत्पादन बढ़ाने के लिए कारखाने स्थापित किए, जिनमें हाथ से बनी वस्तुओं की तुलना में उत्पादन मशीनों के द्वारा शीघ्र व अधिक मात्रा में होने लगा। इस नयी तकनीक से अर्थव्यवस्था में महान अन्तर आया जिसे औद्योगिक क्रान्ति कहा गया। परिणाम- पूँजीवाद की वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग धन्धों का विनाश हो गया। शहरों में जनसंख्या वृद्धि हो गई। पूंजीवादी व श्रमिक दो वर्ग बन गए। लोगों की आदतों, विचारों तथा जीवन शैली में परिवर्तन आया। मार्क्स का समाजवाद औद्योगिक क्रान्ति का ही परिणाम था। 3. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था- एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है, जिसमें उत्पादनों के साधनों का मालिकाना अधिकार पूँजीपतियों के हाथ में होता है। इसमें वस्तुओं का उत्पादन तथा वितरण निजी स्वामित्व अथवा पूँजी पर निर्भर करता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था- समाजवादी अर्थव्यवस्था ऐसी व्यवस्था होती है जिसमें उत्पादन के समस्त साधन जैसे, जमीन, कारखाने आदि पूरे समाज की सामूहिक सम्पत्ति होंगे। इन पर पूँजीपतियों का अधिकार नहीं होगा। 4. क्रान्ति के कारण- उत्तरी अमेरिका में इंग्लैण्ड से आए अनेक लोग बस गए थे। उन्हें वे अधिकार नहीं थे जो इंग्लैण्ड में बसे हुए अंग्रेजों को थे। इंग्लैंड की सरकार उनसे कर तो वसूल करती थी लेकिन उन्हें बदलें में सुविधाएँ नहीं देती थी। उनका शोषण हो रहा था। उत्तरी अमेरिका के 13 उपनिवेशियों ने मिलकर 4 जुलाई 1776 को अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। इस घोषणा में कहा गया कि सभी मनुष्य आपस में समान हैं। परिणाम- इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप अमेरिका वासियों को आजादी प्राप्त हुई। उन्होंने गणतन्त्र प्रणाली के तहत अपनी सरकार बनाई। इस तरह संयुक्त राज्य अमेरिका का जन्म हुआ। उन्होंने एक

अधिकार विधेयक (Bill of rights) को स्वीकार किया, जिससे अमेरिकी नागरिकों को कुछ अधिकार प्राप्त हुए। 5. फ्रान्स की क्रान्ति 14 जुलाई 1789 को सम्पन्न हुई। इसके कारण व परिणाम इस प्रकार थे। सामान्य जनता की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। उन पर करों का बहुत अधिक भार था। सामन्त वर्ग तथा उच्च अधिकारियों को कोई कर नहीं देना पड़ता था तथा वे विशेष लाभ भी उठाते थे। शासक लुई सोलहवें द्वारा करों में वृद्धि की गई। फ्रांस के दार्शनिकों द्वारा जनता को स्वशासन के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने अपनी राष्ट्रीय असेम्बली गठित कर ली। 14 जुलाई 1789 को जनता ने पेरिस के ब्रेस्टील के जेलखाने को तोड़कर बंदियों को मुक्त कर दिया। परिणाम- फ्रांस में गणतन्त्र की स्थापना हुई। स्वतन्त्रता समानता और भाईचारे का प्रसार हुआ। विश्व के अन्य देशों में गणतन्त्र शासन स्थापित करने का मार्ग खुला। 6. औद्योगिक क्रान्ति के दौरान वस्तुओं का उत्पादन हाथ के स्थान पर मशीनों द्वारा होने लगा। उत्पादन में वृद्धि हुई तथा समय व श्रम की भी बचत हुई। नये-नये आविष्कार हुए। जेम्सवॉट ने भाप का इंजन बनाया जार्ज स्टीफेंसन ने रेल इंजन का आविष्कार किया। एली विहटनी ने कॉटन जीन का आविष्कार किया। 19 वीं शताब्दी में तार और टेलीफोन ने दूरसंचार को उन्नत बनाने में मदद की। भारत पर प्रभाव - औद्योगिक क्रान्ति ने भारत के घरेलू उद्योग धन्धों का विनाश कर दिया। मशीनीकरण ने हस्त शिल्पियों व अन्य कामगारों की जीविका छीन ली। अंग्रेजों द्वारा भारत का आर्थिक शोषण किया गया। 7. अंग्रेज तथा फ्रांसीसी दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी थे। दोनों ने भारतीय शासकों की कमजोरी का लाभ उठाकर भारतीय राजनीति में दखल देना प्रारम्भ कर दिया। भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने को लेकर अंग्रेजों व फ्रांसीसियों में कर्नाटक के तीन युद्ध हुए। प्रथम युद्ध (1744-48) में फ्रेंच व अंग्रेज कम्पनी के मध्य मुगल सूबों को लेकर हुआ, जिसमें मद्रास (चेन्नई) अंग्रेजों के हाथ से निकल गया। द्वितीय युद्ध (1748-54)- उत्तराधिकार के प्रश्न पर हुआ इसमें फ्रांसीसी हार गए। तृतीय युद्ध (1756-63) में हुआ जिसमें फ्रांसीसियों ने भारत पर अपना अधिकार खो दिया। **(ग)** 1. इटली में 2. इंग्लैंड में, प्रारम्भ में 3. 4 जुलाई 1776 ई. 4. 14 जुलाई 1789 ई., बेस्टीले 5. जार, सत्ताजारशाही **(घ)** 1. सत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. असत्य 5. सत्य 6. सत्य **(ङ)** 1. पुनर्जागरण – प्राचीन रूढ़ियों व अंधविश्वासों के स्थान पर नवीन ज्ञान व धारणाओं की पुनः स्थापना करना। 2. पूँजीवाद – ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें उत्पादन व वितरण पर पूँजीपतियों का मालिकाना हक होता है। 3. साम्राज्यवाद – एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य पर अनैतिक अधिकार करना। 4. उपनिवेशवाद – इसमें एक शक्तिशाली सीधे ही अपने से कमजोर देश पर अपना नियन्त्रण कर उसके संसाधनों का दोहन अपनी ताकत व सम्पत्ति बढ़ाने में करता है। 5. समाजवाद – जिस अर्थव्यवस्था में उत्पादन व वितरण दोनों पर समाज का सामूहिक अधिकार होता है। 6. पश्चिमी शिक्षा – यूरोपीय देशों तथा इंग्लैंड द्वारा प्रसारित शिक्षा प्रणाली। **(च)** 1. अभिलेख – गुफाओं, शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों पर लिखे हुए लेख अभिलेख कहलाते है। 2. इतिहास के स्त्रोत – अभिलेख, सिक्के, स्मारक, पुस्तकें तथा सरकारी दस्तावेज आदि। 3. औद्योगिक क्रान्ति – हाथ से बनी वस्तुओं के स्थान पर मशीनों द्वारा कारखानों में वस्तुओं का उत्पादन करना। 4. पूँजीवाद – ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन व वितरण पर कारखाना मालिक का एकाधिकार होता है। 5. औपनिवेशिक बस्तियाँ – यूरोपीय व्यापारियों द्वारा अपने अधीन उपनिवेशों में अपने व्यापार की वृद्धि हेतु नई बस्तियाँ बसाना जैसे- कलकत्ता, बम्बई तथा अन्य बस्तियाँ। 6. राष्ट्रीय जाग्रति – साम्राज्यवादी देशों द्वारा उपनिवेशों के प्राकृतिक संसाधनों का शोषण व दोहन के विरुद्ध वहाँ की जनता में चेतना पैदा होकर उन शक्तियों का विरोध करने को संगठित होना। **(छ)** 1. ग 2. घ 3. ग 4. ख

परियोजना कार्य- छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 2 भारत में ब्रिटिश शक्ति

(क) 1. भारत के साथ व्यापार करने में अंग्रेज, डच, पुर्तगाली तथा फ्रांसीसियों के मध्य आपसी प्रतिद्वन्द्विता थी। 2. इलाहाबाद की संधि सन् 1765 में अवध के नवाब शुजाउद्दौला व मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय ने क्लाइव के साथ इलाहाबाद में की। 3. बंगाल में दोहरी शासन व्यवस्था की असफलता का कारण सेना व राजस्व वसूली अंग्रेजों के हाथ में थी तथा प्रशासन कार्य नवाब मीर जाफर के जिम्मे था। बंगाल में 1770 में भयंकर अकाल पड़ना भी कारण रहा। 4. प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों को व्यापारिक कम्पनी के साथ ही बंगाल में शासक के रूप में भी स्थापित कर दिया जो आगे चलकर भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना का मुख्य आधार बना। **हॉट प्रश्न –** 1. **बक्सर व प्लासी युद्ध की तुलनात्मक विवेचना –** प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों को बंगाल का स्वामी बना दिया और बक्सर के युद्ध ने अंग्रेजों को भारत में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति बना दिया। प्लासी का युद्ध षड्यंत्र के बल पर जीत लिया गया और बक्सर का युद्ध अंग्रेजों के सैन्य श्रेष्ठता के बल पर जीत लिया गया। प्लासी के युद्ध में बंगाल के नबाव पराजित हुए और दूसरे युद्ध में अवध और बंगाल के नबावों के साथ मुगल सम्राट शाह भी पराजित हुए। 2. भारत में अंग्रेजी राज का संस्थापक क्लाइव को माना जाता है। क्योंकि क्लाइव, कंपनी के एक सामान्य कर्मचारी के रूप में भारत आया और बंगाल के गवर्नर जैसे उच्च पद पर दो सत्रों के लिए (1758-60) और (1765-67) पहुँच गया। उसने एक सैन्य सेना नायक के रूप में अपनी क्षमता का परिचय द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1751-55) में दिया और विद्रूप परिस्थितियों में भी विजय प्राप्त की। वह एक कुशल राजनेता और सुधारक था। क्लाइव को भारत में अंग्रेजी शासन का संस्थापक कहा जाता है। **(ख)** 1. अंग्रेजों के साथ मराठों की पराजय के कई कारण थे। नाना फड़नवीस तथा महादाजी सिन्धिया की मृत्यु के बाद उनका कोई योग्य सेना नायक नहीं रहा। मराठों में आपसी फूट पड़ गई। उनके पास प्रशिक्षित एवं संगठित सेना का अभाव था। पानीपत के तृतीय युद्ध1761 में मराठों की शक्ति को बहुत आघात पहुँचा था। मराठे अपनी लूटपाट के कारण सामान्य जनता में अलोक प्रिय थे। उन्होंने नौ सेना तथा तोपखाने की उपेक्षा की। किसी भी भारतीय शासक ने मराठों का सहयोग नहीं किया। दूसरी तरफ अंग्रेजों की सेना संगठित, अनुशासित थी और उनके सेनापति सदैव योजनाबद्ध ढंग से कार्य करते थे। मराठों ने गोरिल्ला युद्ध पद्धति को त्याग दिया था। 2. मीर जाफर स्वयं बंगाल का नवाब बनना चाहता था। इसलिए उसने कलकत्ता के जगत सेठ के माध्यम से क्लाइव से गुप्त समझौता किया। प्लासी के युद्ध में उसने सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया। सिराजुद्दौला युद्ध में मारा गया। क्लाइव ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया। 3. बक्सर का युद्ध सन् 1764 में मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय, अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा बंगाल के नवाब मीर कासिम की संयुक्त सेना से अंग्रेजों के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई तथा मुगल सम्राट व क्लाइव के मध्य इलाहाबाद की संधि हुई। इस युद्ध के बाद को अंग्रेजों बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी (राजस्व वसूलने का अधिकार) मिल गया और ईस्ट इंडिया कम्पनी एक ताकतवर राजनैतिक सत्ता बन गई। 4. बक्सर के युद्ध को प्लासी के युद्ध से इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि प्लासी ने तो केवल बंगाल में ही ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी को राजनैतिक शक्ति के रूप में उभारा था लेकिन बक्सर के युद्ध में अंग्रेजी कम्पनी की जीत ने उसे एक

सर्वोच्च सत्ता के रूप में उभारा और उसे बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई। मुगल सम्राट कम्पनी का पेंशनर बन गया। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने सम्पूर्ण भारत को अपने अधिकार में कर लिया। 5. इलाहाबाद की संधि बक्सर युद्ध में नवाब की पराजय के बाद मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय व अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने क्लाइव के साथ सन् 1765 ई. में की थी। जिसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार थीं-1. कम्पनी ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी वसूलने का अधिकार प्राप्त कर लिया। 2. अवध के नवाब ने कारा (कड़ा) और इलाहाबाद के क्षेत्र मुगल सम्राट को दे दिए। 3. कम्पनी मुगल सम्राट को 26 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देने पर सहमत हो गई। 4. कम्पनी ने अवध के नवाब को बाहरी आक्रमण के समय मदद देने की शर्त मान ली लेकिन उसका सम्पूर्ण खर्चा नवाब वहन करेगा। 5. अंग्रेजों ने अवध में मुक्त व्यापार का अधिकार प्राप्त कर लिया। इस संधि के उपरान्त अंग्रेज व्यापारी से शासक के रूप में परिवर्तित हो गए। 6. मराठों की असफलता के कारण निम्नलिखित थे- 1. मराठा सरदारों में निजी स्वार्थ के कारण आपसी फूट थी। इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें आसानी से पराजित कर दिया। 2. मराठे अपनी प्रजा की उपेक्षा करते थे। 3. मराठों में नीति कुशलता का अभाव था। उनका ध्येय अधिकतम धन एकत्र करना था। 4. मराठों की सेना में भाड़े के सैनिक थे जिनमें अनुशासन की कमी थी। 5. मराठों की तुलना में अंग्रेज सेनापति अधिक कुशल व अनुशासित थे। **(ग)** 1. अलीवर्दी खाँ 2. वारेन हेस्टिंग्स 3. कलकत्ता 4. जगत सेठ अमीनचंद 5. क्लाइव 6. मारक्वैज हेस्टिंग्स 7. डलहौजी **(घ)** 1. अंग्रेज व सिराजुद्दौला के बीच प्लासी का युद्ध – 23 जून 1757 2. वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का गर्वनर बना – 1772 ई. में 3. बक्सर का युद्ध हुआ – 1764 ई. में 4. अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना – 1740 ई. में 5. चौथा मैसूर युद्ध – 1799 ई. 6. चौथा मराठा युद्ध – 1817 में **(ङ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. सत्य 6. असत्य 7. असत्य **(च)** 1. राबर्ट क्लाइव की सैन्य कुशलता के कारण ही प्लासी तथा बक्सर के युद्ध में अंग्रेज कम्पनी की विजय हुई। भारत में अंग्रेजी राज्य का संस्थापक था। 2. इलाहाबाद की सन्धि 1765 में क्लाइव तथा मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय व अवध के नवाब शुजाउद्दौला के बीच हुई। 3. वारेन हेस्टिंग्स ने बंगाल में दोहरी शासन व्यवस्था को समाप्त किया। उसके समय में कम्पनी का बंगाल में प्रत्यक्ष शासन प्रारम्भ हो गया। कलकत्ता बंगाल की वास्तविक राजधानी 1772 में बना। 4. निजाम और मराठों ने टीपू की सहायता नहीं की । टीपू ने भारत से बाहर फ्रांस व अफगानिस्तान से मदद माँगी जो उसे समय पर नहीं मिल सकी। 5. मराठा शक्ति के विकास में बाधक कारक उनकी आपसी फूट व निजी स्वार्थों का होना रहा है। इसके अतिरिक्त अनुशासित व संगठित सेना का न होना भी रहा है तथा मराठे सामान्य लोगों में लोकप्रिय नहीं थे। **(छ)** 1. अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिए आए थे। 2. सिराजुद्दौला की युद्ध में हार उसके सेनापति मीर जाफर की गद्दारी के कारण हुई। 3. प्लासी के युद्ध ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को व्यापारिक कम्पनी से राजनैतिक शक्ति के रूप में बदल दिया। 4. इलाहाबाद की सन्धि बक्सर के युद्ध में भारतीय सेना की पराजय के कारण हुई। 5. सहायक संधि कम्पनी राज्य की शक्ति बढ़ाने के लिए बेलेजली द्वारा देशी राजाओं के साथ की गई। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।.

अध्याय- 3 उपनिवेशवाद और जनजातीय समाज

(क) 1. जनजातीय शब्द जातियता की दशा व प्रजाति को सूचित करता है। भारत के दुर्गम पर्वतीय स्थानों व जंगलों में बसने वाली आदिम जाति (मूलनिवासियों) को जनजाति के नाम से जाना जाता है। कोल, भील, मुण्डा, संथाल, खासी, गारो आदि। 2. जनजाति के लोग घने जंगलों में रहते हैं। इनके घर छोटे एक दो कमरे के झोपड़ी नुमा होते है। शिकार करना, पशुपालन, मधुमक्खी पालन व कृषि, आदि इनकी आर्थिक क्रियाओं के साधन हैं। 3. बिरसा मुण्डा मुण्डा जनजाति का एक महान विद्रोही था जिसने 1895 में विद्रोह किया था। 1900 में जेल में हैजे से उसकी मृत्यु हो गई थी। 4. संथाल प्रमुख रूप से छोटा नागपुर क्षेत्र के निवासी है, इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि, पशुपालन तथा खेतिहार मजदूर का है। इन्होंने 1855-56 में विद्रोह किया था। **हॉट प्रश्न –** 1. मात्र 21 वर्ष की आयु में बिरसा मुंडा ने एक नये मत का पालन किया। शुद्धता के हिन्दू विचारों ने उसे बहुत प्रभावित किया। सन् 1895 में उसने एक नये धर्म का प्रचार किया। इसको अनेक परा-प्राकृतिक शक्तियाँ प्राप्त थी। मुण्डा जनजाति का बिरसा मुण्डा एक महान अधिनायक था। उसके द्वारा किए गए विद्रोह को अन्ततः 1900 ई. में दबा दिया गया। 2. छोटा नागपुर क्षेत्र की मुख्य जनजातियाँ कोल, मुण्डा, खोण्ड, संथाल आदि है। **(ख)** 1. प्रथम जनजातीय विद्रोह भारत के उत्तरी-पूर्वी भाग में खासी,सिंगफो, नागरों और कुकियों द्वारा क्रमशः किया गया। खासी जनजाति जैतिया व गारों पर्वतों पर रहती थी जो ताकतवर जनजाति थी। इनका सरदार तीरत सिंह नोगंख्ला था, जिसने 10,000 खासी लोगों को लेकर ब्रिट्रिश अधिकारियों में आतंक फैला दिया। 1833 में इसने आत्मसमर्पण कर दिया। सिंगफो जनजाति ने 1830 में विद्रोह किया। उन्हें अंग्रेजों के सामने समर्पण करना पड़ा। 1844 में नागर जनजाति ने तथा 1826 से 1849 तक कुकियों ने विद्रोह किया। वे मणिपुर के पहाड़ी क्षेत्रों के निवासी थे। 2. संथालों ने 1855-56 में छोटा नागपुर क्षेत्र में विद्रोह किया। यह विद्रोह जमीदारों, महाजनों और अंग्रेज अधिकारियों के दमन व शोषण के विरुद्ध था। सिद्धू और कांहू भाइयों ने भागलपुर और राजमहल के बीच रेलवे संचार खत्म कर दिया। उन्होंने तलवारों और जहरीले तीरों से अंग्रेजों और बंगालियों पर हमला किया। अनेक रेल कर्मचारी व पुलिसकर्मी मारे गए। अंग्रेजों के विरुद्ध यह वन युद्ध 1856 तक चला। संथालों पर अंग्रेजों द्वारा अमानवीय अत्याचार किए गए। यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। 3. बिरसा मुण्डा का जन्म 1875 में हुआ था। 20 वर्ष की आयु में 1895 में उसने एक नए मत का पालन किया और एक नए धर्म का प्रचार किया। उसके शिष्य उसे भगवान का प्रतिनिधि समझते थे जिसे अनेक परा शक्तियाँ प्राप्त थी। 24 अगस्त 1895 को रात्रि में उसे बंदी बना लिया गया। किंतु जनजातियों के विरोध के कारण 1898 में उसे छोड़ दिया गया। उसने मुण्डा जाति को संगठित कर उन्हें युद्ध कला की शिक्षा दी। उसके प्रशिक्षित अनुयायियों ने मिशन आवासों, ब्रिटिश बस्तियों, पुलिस स्टेशनों तथा जमींदारों के घरों पर आक्रमण किए। संघर्ष काफी लम्बा चला। कुछ लोगों ने बिरसा मुण्डा को धोखे से पकड़वा दिया। जून 1900 में जेल के अंदर हैजे से उसकी मृत्यु हो गई। 4. उन्नीसवीं शताब्दी में सरकार द्वारा चलाई गई अनेक योजनाओं ने जनजातियों के आर्थिक जीवन को बहुत प्रभावित किया। विद्युत उत्पादन की परियोजनाओं सड़कें, रेलमार्ग बिछाने, पहाड़ी स्थलों में खनिजों के दोहन से आदिवासियों को विविध प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वर्तमान में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। **(ग)** 1. 8% से अधिक 2. उत्तर-पूर्व भारत 3. छोटा नागपुर 4. बिरसा **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य **(ङ)** 1. खासी जनजाति का 2. कोलों का 3. 1900 में 4. 1855 में **(च)** 1. खासी जनजाति पूर्व में जैतिया पर्वतों तथा पश्चिम में गारों पर्वतों पर रहती थी। जबकि नागा जाति नागालैण्ड में निवास करती है। 2. कोल तथा संथाल दोनों छोटा नागपुर क्षेत्र के निवासी है। कोल

जंगलों से प्राप्त वस्तुओं से अपना जीवन यापन करते है, जबकि संथाल कृषि भी करते हैं। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 4 ग्रामीण जीवन और समाज

(क) 1. वारेन हेस्टिंग्स ने भारत के गर्वनर जनरल बनने के बाद भू-राजस्व वसूली के लिए 1772 में एक नई व्यवस्था चलाई, जिसमें राजस्व वसूलने का अधिकार सबसे ऊँची बोली लगाने वाले व्यक्ति को 5 वर्ष के लिए दिया जाता था। यह व्यवस्था 'इजारदारी' कहलाती थी। लेकिन यह व्यवस्था असफल रही और 1777 में इसे बन्द करना पड़ा। 2. थॉमस मुनरो की प्रेरणा से कर्नाटक तथा मैसूर में रैयतबाड़ी प्रथा 1802 में लागू की गई। इसमें भूमि की उर्वरता के आधार पर 30 वर्षों के लिए भू-राजस्व निश्चित कर दिया गया। इसमें कोई बिचौलिया नहीं था। किसान से सरकारी कर्मचारी ही राजस्व वसूलते थे। किसानों की स्थिति अब अधिक सुरक्षित हो गई थी। 3. नील के बागान के मालिक अंग्रेज थे। ये लोग किसानों को नील की खेती करने के लिए विवश करते थे तथा उन पर गंभीर अत्याचार करते थे। 4. सन् 1822 में बंगाल के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (अब अधिकांश भाग उत्तर प्रदेश में है) एक ब्रिट्रिश हॉल्ट मैकनिज ने एक नई प्रणाली चलाई जो महालबाड़ी व्यवस्था कहलाई। इसमें महालों (गाँवों) में भाई-चारा व्यवस्था के आधार पर महाल का मुखिया ताल्लुकेदार राजस्व को वसूल कर ब्रिट्रिश कलेक्टरों को सौंप दिया करता था। 5. सन् 1793 में कार्नवालिस ने नई व्यवस्था लागू की जो स्थायी बन्दोबस्त नाम से जानी गई। इस व्यवस्था से जमींदार जागीर का मालिक बन गया तथा उसे कम्पनी को एक निश्चित राशी निश्चित समय पर जमा करानी होती थी। स्थायी बन्दोबस्त से कम्पनी को एक निश्चित आय होने लगी तथा कम्पनी को एक नए वफादार वर्ग (जमींदारों) की प्राप्ति हो गई। महालवाड़ी में गाँव का मुखिया भाई-चारे के आधार पर राजस्व वूसल कर ब्रिट्रिश कलेक्टरों को सौंप देता था। इसमें जमींदार मालिक नहीं था किसान स्वयं अपनी भूमि के मालिक थे। **हॉट प्रश्न – 1. नील किसानों के विद्रोह का कारण –** नील एक वाणिज्यिक उपज थी, जिसकी खेती से बागान मालिकों को पर्याप्त लाभ होता था। इसका उपयोग ब्रिटेन के सूती वस्त्र उद्योग में कपड़ा रंगने में किया जाता था। नील की खेती पर यूरोपीय बागान मालिकों का एकाधिकार था। यूरोपीय बागान मालिक किसानों को नील की खेती करने के लिए विवश करते थे तथा उन पर गंभीर अत्याचार करते थे। नील की खेती करने से किसानों का खर्च भी पूरा नहीं होता था। अतः नील की खेती एक अनार्थिक व्यवसाय था। किन्तु लगान मालिक अनार्थिक दरों पर ही किसानों को नील की खेती करने के लिए विवश करते थे। इसके लिए किसानों पर विविध प्रकार के अत्याचार किये जाते थे। सन् 1859 ई. में नील का आक्रोश फूट निकला। उपरोक्त सभी नील किसानों के विद्रोह के कारण थे। 2. औद्योगिक क्रान्ति के कारण कच्चे माल की आपूर्ति करने हेतु कृषि का वाणिज्यीकरण किया गया। वाणिज्यिक फसलों में कम लागत से अधिक उत्पादन होता था। भारत में सस्ते श्रमिक उपलब्ध होने के कारण बागानी खेती को बढ़ावा दिया गया। **(ख)** 1. स्थायी बन्दोबस्त से सरकार की अपेक्षा जमींदारों को अधिक लाभ इसलिए होता था कि वे सरकार को एक निश्चित धन राशि जमा कराते थे तथा किसानों से अधिक धनराशि वसूल करते थे। जमींदारों को यह अधिकार दिया गया कि वे किसानों को भूमि से बेदखल भी कर सकते थे। किसान भूमि के मालिक न रहकर भूमिहीन खेतिहार मजदूर बन गए थे। कम्पनी को जमींदार वर्ग के रूप में एक वफादार वर्ग प्राप्त हो गया जिसने आगे चलकर कम्पनी शासन की संकट के समय में सहायता की। 2. निम्नलिखित कारकों ने ब्रिट्रिश शासकों को अधीन कृषि के वाणिज्यीकरण को बढ़ावा दिया गया। 1. औद्योगिक क्रान्ति के कारण कच्चे माल की आपूर्ति करने हेतु कृषि का वाणिज्यीकरण किया गया। 2. वाणिज्यिक फसलों में कम लागत से अधिक उत्पादन होता था। 3. भारत में सस्ते श्रमिक उपलब्ध होने के कारण बागानी खेती को बढ़ावा दिया गया। 4. यूरोपीय निवेशकर्त्ताओं ने नील, जूट, चाय, गन्ना, कपास, कहवा, अफीम, सिनकोना, तिलहन आदि फसलों में रूचि लेना प्रारम्भ किया। क्योंकि इन फसलों से नकदी प्राप्त होती थी। 3. बागानी खेती के अन्तर्गत बड़े फार्मों पर मशीनों, फार्म श्रमिकों, पूँजी तथा उद्यमिता की सहायता से एक ही फसल का उत्पादन किया जाता है। भारत की जमीन अनेक प्रकार की बागानी खेती हेतु उपयुक्त है। इसलिए अंग्रेजों ने नील, गन्ना, कपास, जूट, अफीम, चाय, कहवा, नारियल आदि की बागानी कृषि आरम्भ की। गन्ना व तिलहन को छोड़कर अन्य फसलों पर अंग्रेजों का एकाधिकार था। बागानी कृषि से अंग्रेजों को भारी लाभ हो रहा था। बागानों के विकास ने कृषि के वाणिज्यीकरण में सहायता की। 4. नील एक वाणिज्यिक उपज थी जिससे बागान मालिकों को बहुत लाभ होता था। यूरोपीय बागान मालिक किसानों को नील की खेती करने पर विविश करते थे तथा मना करने पर उन पर गंभीर अत्याचार करते थे। नील की खेती करने से किसानों का खर्च भी पूरा नहीं होता था। मार्च 1859 में किसानों ने खेती करने से मना कर दिया और बागान मालिकों के प्रति सशस्त्र विद्रोह कर दिया। सरकार ने विवश होकर नील आयोग की स्थापना की। इस आयोग ने 1862 में एक कानून द्वारा कृषकों के कष्ट दूर करने की कोशिश की। नील बागान मालिक तब बंगाल से बिहार व उत्तरप्रदेश में चले गए। 5. थॉमस मुनरों के प्रयास से कर्नाटक तथा मैसूर में रैयतबाड़ी व्यवस्था लागू हुई। इसमें भूमि की उर्वरता के आधार पर 30 वर्षों के लिए लगान निश्चित कर दिया जाता था। सरकार किसान से सीधे ही राजस्व वसूल करती थी, कोई बिचौलिया नहीं था। उपज का आधा भाग राजस्व के रूप में लिया जाता था। इससे किसानों को राहत तो मिली लेकिन उनके सामने समस्याएँ भी आयीं। 1. राजस्व कठोरता से वसूल करने के कारण किसानों को कर्ज लेने के लिए साहूकारों के चंगुल में फँसना पड़ा। 2. किसानों को सरकारी अधिकारियों की दया पर निर्भर रहना पड़ता था। **(ग)** 1. वारेन हेस्टिंग्स 2. थॉमस मुनरो 3. 1796 ई. 4. कार्नवालिस 5. 1900 में 6. गाँधी जी द्वारा नील के किसानों के पक्ष में **(घ)** 1. इजारदारी व्यवस्था- वारेन हेस्टिंग्स 2. भूमि राजस्व की रैयतवाड़ी व्यवस्था- कर्नाटक व मैसूर 3. नील के बागान मालिक- बंगाल व बिहार 4. चुआर विद्रोह आरम्भ- सन् 1796 ई. 5. महाल- गाँव 6. रैयत- किसानों से सीधा कर वसूल करना **(ङ)** 1. ख 2. ग 3. क 4. क **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 5 शिल्प एवं उद्योग

(क) 1. अंग्रेजों के भारत आने से पूर्व गाँवों की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। ग्रामवासियों का जीवन निर्वाह भली प्रकार हो रहा था। 2. इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति ने भारतीय वस्त्र उद्योग पर गम्भीर कुठाराघात किया। भारतीय वस्त्र ब्रिटेन की मशीनों द्वारा निर्मित सस्ते वस्त्रों से प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सके और धीरे-धीरे वे विनिष्ट होने लगे। 3. भारतीय वस्त्र उद्योग का गौरवशाली भाग उपनिवेशी सरकार द्वारा नष्ट कर दिया गया। भारतीय वस्त्रों पर अधिक कर लगाया गया। जबकि ब्रिटेन में बने वस्त्रों पर कोई कर नहीं था वे भारतीय वस्त्रों की तुलना में सस्ते मिलते थे। अंग्रेजों ने 1700 तथा 1720ई. में भारतीय वस्त्रों का कानून बनाकर इंग्लैंड में प्रतिबन्धित कर दिया था। 4. भारतीय लौह-इस्पात उद्योग ने भारत के विकास में बहुत मदद की। यदि इस उद्योग का प्रारम्भ नहीं होता

तो आज भारत अपनी विकास की चरम सीमा पर नहीं होता। रेल, जहाज, मोटरयान, बड़ी-बड़ी मशीनें इस उद्योग के कारण ही विकसित हो सकी हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. भारत में औद्योगिक विकास की असमानता के कारण थे – भारत में औद्योगिक विकास असमान रूप से वितरित था, क्योंकि कुछ बड़े नगरों में ही उद्योगों का केन्द्रीकरण हुआ जबकि शेष भाग अर्धविकसित या अविकसित ही बने रहे। इससे प्रादेशिक विकास असंतुलित हो गया। 2. क्योंकि औद्योगिक क्रांति के कारण बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा। इससे भारतीय शिल्पी बेरोजगारी की स्थिति में पहुँच गए तथा 19 वीं शताब्दी में विभिन्न हस्तशिल्पों का पतन हो गया। **(ख)** 1. 19 वीं शताब्दी में भारतीय शिल्पकला के नष्ट होने के पीछे मुख्य कारण इंग्लैंड की औद्योगिक क्रान्ति थी। अंग्रेजों ने अपने तैयार माल को बेचने के लिए भारतीय शिल्पकला को नष्ट कर दिया, जुलाहों के अँगूठे कटवा दिये। भारत में बने वस्त्र के निर्यात पर रोक लगा दी गई। 1700-1720 ई. में इंग्लैंड की संसद ने कानून बनाकर भारतीय सूती तथा रेशमी वस्त्रों को इंग्लैंड में बेचना निषेध कर दिया। भारत केवल कच्चे माल (कपास) तथा तैयार सूत और इंग्लैंड में वने वस्त्रों का बाजा भारत में बनकर रह गया। भारतीय बने माल पर भारी कर लगाया गया जबकि इंग्लैंड में तैयार माल पर कर नहीं था या नाममात्र का था। 2. 19 वीं शताब्दी के अर्धशतक में भारतीय उद्योगों का विकास प्रारम्भ हुआ। लेकिन इसकी प्रगति बहुत धीमी रही। अंग्रेजों ने केवल अपने फायदे वाले उद्योगों को ही बढ़ावा दिया। उन्होंने बागानी कृषि उद्योगों पर अधिक ध्यान दिया क्योंकि इससे उन्हें अत्यधिक लाभ होता था। 1907 में जमशेद जी टाटा ने जमेशदपुर (झारखण्ड) में इस्पात का कारखाना स्थापित किया। 1903 के बाद चीनी मिलों की स्थापना हुई क्योंकि भारत में गन्ने का बहुत उत्पादन होता था। कालान्तर में धीरे-धीरे नमक, अभ्रक, रसायन, खनिज उद्योग, कागज, माचिस और काँच के उद्योग विकसित हुए। 3. अंग्रेजों ने भारत में औद्योगिक विकास में विशेष रूचि नहीं दिखाई। उन्होंने केवल उन्हीं उद्योगों को बढ़ावा दिया जिनसे उन्हें पर्याप्त लाभ मिल रहा था। ब्रिटिश शासकों ने भारतीय उद्योगों को बैंकिंग ऋण, बीमा आदि की सुविधाओं से वंचित रखा तथा तकनीकी शिक्षा को भी बढ़ावा नहीं दिया। भारतीय उद्योगों में विदेशी पूँजी की प्रधानता थी। बैंकिंग प्रणाली अंग्रेजों के हाथ में थी तथा विदेशी व्यापार पर भी उनका ही एकाधिकार था। 4. भारतीय वस्त्र उद्योग के आधुनिक रूप की शुरुआत सर्वप्रथम 1818 ई. में कलकत्ता के पास फोर्ट ग्लास्टर में हुई। जहाँ पर पहला वस्त्र कारखाना लगा लेकिन यह असफल रहा। 1854 में मुम्बई में कवास जी डावर ने प्रथम सफल वस्त्र कारखाने की स्थापना की। 1856 से इसमें उत्पादन प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में मुम्बई, अहमदाबाद, सूरत, शोलापुर, कानपुर तथा दक्षिण भारत में अनेक अच्छे कारखाने लगे हुए है जहाँ पर सूती वस्त्रों का उत्पादन हो रहा है। वैसे भारतीय वस्त्र उद्योग प्राचीन काल से ही उन्नति कर रहा था। ढाका की मलमल विश्व प्रसिद्ध थी। अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के कारण इस उद्योग को विनिष्ट किया था। लेकिन वर्तमान में इसकी स्थिति काफी अच्छी है। **(ग)** 1. 1854, मुम्बई में कवास जी डावर 2. जमशेद जी टाटा, जमशेदपुर (झारखण्ड में है) 3. उन्नीसवीं शताब्दी **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 6 1857 की क्रान्ति

(क) 1. सन् 1857 की क्रान्ति के प्रमुख केन्द्र बैरकपुर, मेरठ, दिल्ली, कानपुर, झाँसी, बरेली, लखनऊ, आगरा, बनारस तथा राजस्थान आदि थे। 2. सन् 1857 के विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई ने एक नारी होते हुए भी युद्ध में अपना अतुलनीय पराक्रम दिखाया तथा अंग्रेज सेनापतियों को भी पराजित किया। वह अपने देश की रक्षा हेतु युद्ध क्षेत्र में बलिदान हो गई। 3. मंगल पांडे बैरकपुर छावनी में एक सैनिक था। उसने चर्बी लगे कारतूसों को चलाने से मना कर दिया तथा अपने एक अंग्रेज अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी। उसे 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दे दी गई। वह प्रथम विद्रोही सैनिक था। 4. अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर द्वितीय ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष रंगून (म्यांमार) में एक कैदी के रूप में बिताए। 1862 में रंगून में ही उनकी मृत्यु हो गई। 5. 1857 का विद्रोह मेरठ से 10 मई 1857 को प्रारम्भ हुआ। सैनिकों ने जेल पर हमला कर अपने बंदी साथियों को छुड़ा लिया, हथियार लूट लिये तथा दिल्ली के लिये कूच कर दिया। 6. भारतीय सिपाहियों ने कारतूसों को चलाने से इस कारण इंकार किया था कि उनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी थी। जिन्हें चलाने से पहले मुँह से काटना पड़ता था। **हॉट प्रश्न –** 1. 1857 के प्रमुख क्रांतिकारी थे – मंगलपांडे, कुँवर सिंह, नाना साहब, अहमदुल्लाह, फिरोजशाह, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, बहादुर शाह जफर आदि। 2. (नोट – प्रश्न संख्या (ख) का उत्तर न. 3 देखे। **(ख)** 1. लार्ड डलहौजी ने अपनी साम्राज्यवादी भूख को शान्त करने के लिए गोद निषेध नीति तथा कुशासन का आरोप लगाकर विभिन्न रियासतों, झाँसी, सतारा, नागपुर, सम्भलपुर, अवध आदि को ब्रिटिश राज्य में जबरन शामिल किया। नाना साहब की पेंशन बंद कर दी जिससे इन रियासतों के शासकों ने ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह कर दिया। राजनैतिक नियन्त्रण के बाद अपनाई गई नीतियों ने औपनिवेशिक शासन का ही हित किया। 2. 1857 की क्रान्ति के सैनिक कारण इस प्रकार थे- (क) भारतीय सैनिकों को अंग्रेज सैनिकों की तुलना में बहुत कम वेतन मिलता था। उन्हें पदोन्नति भी नहीं दी जाती थी, (ख) ब्रिटिश अधिकारी भारतीय सैनिकों का अपमान करते थे। (ग) सैनिकों को चर्बी लगे कारतूस दिये गये जिनमें गाय व सूअर की चर्बी लगी थी। सैनिकों ने उन्हें चलाने से मना किया क्योंकि कारतूसों के चलाने से पहले उन्हें मुँह से काटना पड़ता था। (घ) सैनिकों को बन्दी बनाकर प्रताड़ित किया गया। चर्बी लगे कारतूस विद्रोह का तात्कालिक कारण था। 3. सन् 1857 का विद्रोह निम्न कारणों से असफल रहा। 1. विद्रोह समय से पूर्व प्रारम्भ हो गया। विद्रोह की निश्चित तिथि 31 मई 1857 थी। जबकि वह 10 मई को ही प्रारम्भ हो गया। 2. विद्रोह का एक निश्चित लक्ष्य नहीं था। सबके अपने-अपने उद्देश्य अलग थे। 3. कुछ भारतीय शासकों ने अंग्रेजों की मदद की थी जिनमें जींद, पटियाला, ग्वालियर, हैदराबाद के शासक थे। 4. विद्रोहियों के पास आधुनिक हथियार नहीं थे। वे पुराने हथियारों से लड़ रहे थे। 5. विद्रोहियों के पास कोई योग्य व अनुभवी सेनापति नहीं था। बहादुर शाह बूढ़ा व कमजोर था। 4. सन् 1857 के विद्रोह के निम्नलिखित परिणाम हुए- 1. ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन समाप्त हो गया उसके स्थान पर ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष शासन प्रारम्भ हुआ। 2. प्रशासन में भारतीयों को शामिल करने का आश्वासन दिया गया। 3. भारत के गर्वनर जनरल को वायसराय कहा जाने लगा। केनिंग ब्रिटिश भारत का प्रथम वायसराय था। 4. ब्रिटेन की सरकार ने वादा किया कि वह भारतीयों की धार्मिक व सामाजिक परम्पराओं में हस्तक्षेप नहीं करेगी। 5. ब्रिटिश केबिनेट में भारत सचिव नाम से एक अधिकारी की नियुक्ति की गई। 6. इस विद्रोह से भावी स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा मिली। 7. अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को देखते हुए 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाई। **(ग)** 1. भारतीय इतिहासकारों 2. कुछ भारतीय शासक 3. मंगल पांडे को। 4. रंगून (म्यांमार) 5. चर्बी लगे कारतूसों को मुँह से काटना। **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 7 धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन एवं सांस्कृतिक चेतना

(क) 1. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने नारी उत्थान के लिए महान योगदान दिया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार की मदद से बालिका विद्यालय खुलवाया तथा 1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित करवाया। उन्होंने बाल-विवाह, बहु-विवाह जैसे कुप्रथाओं की खुलकर निन्दा की। 2. हेनरी डेराजियों ने बंगाल के नवयुवकों में जागृति लाने के लिए एक आन्दोलन चलाया जिसे 'यंग बंगाल' कहा जाता था। डेराजियों ने स्त्री शिक्षा की माँग की, स्वतन्त्रता से सोचने तथा परम्परागत मान्यताओं पर विचार करने को अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। 3. आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1875 में बम्बई में की थी। उनका कहना था ईश्वर केवल एक है, उसकी पूजा मूर्ति के रूप में नहीं बल्कि जीवात्मा के रूप में करनी चाहिए। स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य और स्वभाषा का आह्वान किया। 4. समाचार पत्रों में तत्कालीन विचारकों और विद्वानों के लेख प्रसारित होते थे जिनको पढ़कर जनता में स्वदेश प्रेम की भावना व राष्ट्रीय जागरण की भावना पैदा हई। तिलक ने 'मराठा' और 'केसरी' तथा राजाराम मोहन राय ने सम्वाद कौमुदी, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने बंगला में शोमप्रकाश तथा दादा भाई नौरोजी ने गुजराती में 'रास्त गोफ्तार' पत्र निकाले। **हॉट प्रश्न –** 1. रामकृष्ण मिशन के संस्थापक स्वामी विवेकानंद थे। 1863 में जन्मे स्वामी विवेकानन्द एक असाधारण विद्वान थे जिन्होंने रामकृष्ण की शिक्षाओं में अपने आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर पाए। 1857 में विवेकानंद ने अपने गुरु की शिक्षाओं के प्रसार और सामाजिक कार्यो के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। मिशन ने कई विद्यालय, पुस्तकालय, अस्पताल और अनाथाश्रम खोले। यह बाढ़ और अकाल जैसे प्राकृतिक आपदाओं के समय पर भी सक्रियता से कार्य करता था। 2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के अग्रणी थे। उन्होंने अपने विविध उपन्यास कहानियों, नाटकों, निबंधो तथा कविताओं के माध्यम से सुधारवादी विचारों का प्रचार-प्रसार किया। **(ख)** 1. भारतीय समाज में सती प्रथा, बाल-विवाह, बहु-विवाह, दास प्रथा, अस्पृश्यता (छुआछूत) आदि फैली हुई थी। इन कुरीतियों को दूर करने के लिए समाज सुधारकों ने सुधार आन्दोलन चलाए। जैसे- ब्रह्मसमाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, प्रार्थना, समाज आदि। 2. शिक्षित भारतीय जो पश्चिमी विचारों से परिचित थे, का मानना था कि अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के कारण भारत पिछड़ रहा है। इस कारण उन्होंने इन कुरीतियों तथा अंधविश्वासों को दूर करने के लिए अनेक आन्दोलन चलाए। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का अन्त करवाया। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह कानून करवाया, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शुद्धि आन्दोलन चलाया व विद्यालय खोले। 3. राजा राममोहन राय ने 1828 में ब्रह्मसमाज की स्थापना की तथा विलियम बैंटिक के द्वारा सती प्रथा को कानून अपराध घोषित कराके उस पर रोक लगवाई। इसके द्वारा उन्होंने जातिप्रथा का जमकर विरोध किया, अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का समर्थन किया, बाल विवाह, नवजात बालिका वधु तथा बहु विवाह का विरोध किया। उन्होंने समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता का समर्थन किया तथा 1823 में 'प्रेस आर्डीनेंस' का विरोध किया। 4. सांस्कृतिक नवजागरण के द्वारा भारतीय जनमानस में एक नई चेतना व जागृति पैदा हुई। लोगों में देशप्रेम की भावना जागी तथा राष्ट्रीयता की भावना पैदा हुई जिसने जनता को स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। उस समय प्रकाशित समाचार पत्रों व पुस्तकों में कहानियों, उपन्यास, नाटकों को पढ़कर लोग स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भी जान से जुट गए। इसीलिए हम कह सकते हैं सांस्कृतिक जागरण ने भारतीयों को स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। **(ग)** 1. आर्य समाज, 1875 में बम्बई (मुम्बई) 2. रामकृष्ण परमहंस 3. राजा राममोहन राय 4. सर सैयद अहमद खाँ 5. शोम प्रकाश 6. भारतेन्दु हरिशचन्द्र **(घ)** 1. असत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. असत्य 5. सत्य 6. सत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 8 उपनिवेशवाद एवं नगरीय परिवर्तन

(क) 1. नई दिल्ली के वास्तुकार सर एडविन ल्यूटिन व सर हरबर्ट बेकर थे। ल्यूटिन ने वाइस रीगल पैलेस (अब राष्ट्रपति भवन), इंडिया गेट और संसद भवन की रूपरेखा बनाई तथा हरबर्ट ने दो सचिवालयों की रूपरेखा तैयार की। 2. दिल्ली के प्रमुख ब्रिट्रिश स्मारक राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, इंडिया गेट, कनॉट प्लेस, कनाट सर्कस तथा सचिवालय हैं। 3. ब्रिटिश काल में सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना लार्ड डलहौजी (1941-56 ई.) ने की। इस विभाग ने सड़के, नहरें और पुलों आदि का निर्माण किया। 4. 1850 के 36 वें एक्ट के द्वारा नगर निगम प्रशासन का गठन किया। लेकिन इसका वास्तविक कार्य 1865 के एक्ट के बाद प्रारम्भ हुआ। इस एक्ट के आधार पर कुछ बड़े नगरों में पाइपों द्वारा जलापूर्ति, सड़कों पर प्रकाश व्यवस्था, आधुनिक शॉपिंग क्षेत्र, पार्क, मनोरंजन के लिए खेलभूमि, विद्युत आपूर्त्ति, जल-मल अपवाह आदि सुविधाएँ अनेक नगरों में स्थापित की गई। **हॉट प्रश्न –** 1. दिल्ली शहर गंगा नदी की सहायक यमुना नदी के किनारे है। दिल्ली का सबसे पुराना नगर महाभारत कालीन 'इन्द्रप्रस्थ' था। जो एक भव्य चाहरदीवारी युक्त नगर था। 1803 ई. में ब्रिटिश लोगों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। सन् 1877 में दिल्ली में प्रथम दरबार लगाया गया, जो भारत पर ब्रिटिश नियन्त्रण का प्रतीक था। ब्रिटिश सरकार ने 1911 में कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बना दिया। इसकी रुपरेखा सर एडवर्ड ल्यूरिन द्वारा तैयार की गई थी। 1932 में इसका उद्घाटन किया गया। 2. अंग्रेजों के द्वारा स्थापित नगर-निगमों से कुछ बड़े नगरों में नागरिक सुविधाओं में सुधार उल्लेखनीय था। पाइप लाइनों द्वारा जल-आपूर्ति, सड़कों पर प्रकाश व्यवस्था, घरेलू विद्युत आपूर्ति, जल-मल अप्रवाह, आधुनिक शॉपिंग क्षेत्र, पार्क, मनोरंजन के लिए खेलभूमि आदि सुविधाएँ अनेक नगरों में स्थापित की गई। नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु 1888 ई. में अनेक नगरों में नगर प्रशासनिक निकाय स्थापित किए गए। **(ख)** 1.20 वीं शताब्दी के शुरु होने तक कलकत्ता, बम्बई एवम् मद्रास भारत के प्रमुख नगर बन गए थे। ये नगर अग्रणी प्रशासनिक, वाणिज्यिक और औद्योगिक नगर थे। इन नगरों में नगर का केन्द्र बिन्दु केन्द्रीय व्यापारिक क्षेत्र था, जहाँ ऊँची यूरोपीय शैली की इमारतें, सड़कें, गलिया मौजूद थी। ये नगर रेल तथा सड़क परिवहन द्वारा परस्पर सम्बद्ध थे। नगर का प्रशासनिक केन्द्र भी बहुत प्रभावशाली था। 1911 में दिल्ली भारत की राजधानी बनाई गई और नई दिल्ली का निर्माण कार्य किया गया जो 1935 में जाकर पूर्ण हुआ। 2. सन् 1853 के प्रारम्भ में भारत में रेलमार्गों के जाल की स्थापना पुराने नगरों के पतन का मुख्य कारण बना। सन् 1900 तक रेलमार्गों का जाल पूरी तरह विकसित हो चुका था। रेल उद्योग के कारण व्यापारिक मार्ग विभिन्न शाखाओं में फैलने लगे तथा प्रत्येक रेल्वे स्टेशन कच्चे माल के निर्यात का केन्द्र बन गया। जिसके कारण पूर्ववर्ती व्यापारिक केन्द्रों का एकाधिकार समाप्त हो गया। गंगा नदी पर स्थित मिर्जापुर सहित अनेक व्यापारिक नगरों का पतन हुआ। बम्बई, मद्रास, कलकत्ता जैसे बन्दरगाओं को देश के भीतरी भागों के महत्त्वपूर्ण शहरों और कृषि क्षेत्रों से जोड़ा गया जहाँ से कच्चा माल बन्दरगाहों तक सरलता से पहुँच सके जिनके द्वारा अंग्रेजों का व्यापार होता था। 3. अंग्रेजी शासन में कुछ बड़े नगरों में नागरिक सुविधाएँ प्रदान

करने के लिए 1888 ई. से अनेक नगर प्रशासनिक निकाय स्थापित किए गए। इनमें पाइप लाइनों द्वारा जलापूर्ति, सड़कों पर प्रकाश व्यवस्था, घरेलू विद्युत आपूर्ति, जल-मल अपवाह, आधुनिक शॉपिंग क्षेत्र, पार्क, मनोरंजन के लिए खेल भूमि आदि की सुविधाएँ नगरों में स्थापित की गई। यह सारी व्यवस्था नगर पालिकाओं द्वारा प्रदान की जाती थी। चूँकि बड़े नगरों में आम नागरिकों के साथ अंग्रेज अधिकारी भी निवास करते थे। उनको सुचारु सुविधाएँ प्राप्त हो सके। इस कारण नगरीय प्रशासनिक संस्थाओं (नगरपालिकाओं) की स्थापना की गई। **(ग)** 1. डलहौजी 2. पणजी 3. 1911 में 4. 1853 5. 1888 ई. **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य 6. असत्य **(ङ) (ङ)** 1.ख 2. ख **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 9 कलाओं में परिवर्तन: चित्रकला, साहित्य एवं स्थापत्य

(क) 1. रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी में बंगाल में हुआ था। इनकी प्रसिद्ध काव्यकृति 'गीतांजलि' पर इन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। हमारा राष्ट्रगान की रचना, शान्ति निकेतन की स्थापना की तथा उसमें कला भवन की शुरुआत की। 2. बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना रवीन्द्र नाथ टैगोर, हैवेल और कुमार स्वामी के द्वारा की गई। इस विद्यालय के अधिकांशत: विद्यार्थी भारतीय पुराणों, महाकाव्यों और शास्त्रीय साहित्य से ही विषयों का चयन कर चित्रों का निर्माण करते थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने पानी के रंगों की जापानी तकनीक का प्रयोग किया। 3.साहित्यकार- बंकिम चन्द्र चटर्जी- रचनाएँ आनंद मठ, रविन्द्र नाथ टैगोर- गीतांजलि, मुंशी प्रेमचन्द्र- गवन, गोदान, रंगभूमि, कार्य भूमि, निर्मला, विभूति-भूषण- पाथेर पांचाली, ताराशंकर- गण देवता, फागीश्वर नाथरेणु- मैला आँचल 4. चेन्नई में ब्रिटिश काल की इमारतें फोर्ट सेंट जार्ज (1644), कैथेड्रल ऑफ सानथाम (1504), हाईकोर्ट (1892), वार मेमोरियल (1939) आदि हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. भारतीय कथा साहित्य में मुंशी प्रेमचन्द का उल्लेखनीय योगदान है। मुंशी प्रेमचंद ने हिन्दी और उर्दू में उपन्यास लिखे। उन्होंने अपनी महानतम कृत्तियों जैसे – 'गोदान' और 'रंगभूमि' में किसानों के दुःख, यातना और पीड़ा का सजीव चित्रण किया। 2. बंगाल स्कूल आर्ट की स्थापना रविन्द्र नाथ टैगोर, हैवेल और कुमार स्वामी ने की। इस विद्यालय से सम्बद्ध विद्यार्थी अधिकांशतः भारतीय पुराणों, महाकाव्यों और शास्त्रीय साहित्य से ही विषय उठाते थे तथा चित्रों का निर्माण करते थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने पानी के रंगो की जापानी तकनीक का प्रयोग किया। **(ख)** 1. उन्नीसवीं और 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में साहित्य के क्षेत्र में निम्नलिखित परिवर्तन आए- (क) यद्यपि भारतीय भाषाओं का अध्ययन अंग्रेजी तुलना में कम लोकप्रिय रहा, लेकिन उनके विकास को आधुनिक विचारों ने प्रेरित किया। (ख) नई साहित्यिक विधाएँ जैसे- उपन्यास, नाटक आदि को प्रसिद्धी मिली। (ग) साहित्य पहले से अधिक वास्तविक, सामाजिक और धर्म-निरपेक्ष हो गया। (घ) अब ज्वलन्त समस्याओं, यहाँ तक कि ऐतिहासिक नाटकों में भी वर्तमान पर नजर रखते हुए ध्यान दिया जाने लगा। (ङ) 19वीं शताब्दी में साहित्य ने राष्ट्रीय चेतना जगाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। (च) मुद्रण की मशीन आने से साहित्य के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। (छ) 19वीं और 20वीं शताब्दी के आरम्भ में सभी प्रकार के भारतीय साहित्य जैसे- उपन्यास, लघुकथा, कविता, नाटक आदि का खूब विकास हुआ। 2. ब्रिट्रिश काल में आधुनिक चित्रकला का खूब विकास हुआ। अंग्रेज चित्रकारों के आगमन के साथ टैल-चित्रकला, नक्काशी तथा पत्थर की छपाई के लिए जलीय रंगों की तकनीक का आगमन हुआ। जेम्स फोर्ब्स, जॉन ग्रांटस, जेम्स वेली फ्रेजर आदि प्रसिद्ध चित्रकार थे। इस काल में औपनिवेशिक स्वामियों की माँग के अनुसार 'कम्पनी चित्रकला' शैली का जन्म हुआ। सन् 1886 के बाद छपाई की नई तकनीकें, जैसे- पत्थर की छपाई, तैलीय चित्रकला, छायाकरण तथा शारीरिक चित्रकला का विकास हुआ। 19वीं और 20वीं सदी में चित्रकला के क्षेत्र में विविध भारतीय कला विद्यालयों व कला समूहों द्वारा आन्दोलन चलाए गये। भारतीय चित्रकारों में राजा रवि वर्मा अग्रणी थे। बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना की गई। रविन्द्र नाथ टैगोर, नंदलाल बोस तथा अमृता शेरगिल आदि का योगदान चित्रकला के विकास में अप्रतिम रहा। 3. बम्बई का अधिग्रहण 1661 ई. में किया गया। शीघ्र ही यह व्यापारिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया। यहाँ विभिन्न कलाओं तथा स्थापत्य कला का विकास हुआ। 1857 में बम्बई विश्वविद्यालय तथा 1869 में राजाबाई मीनार की नींव पड़ी। जार्ज पंचम के आगमन पर गेट वे ऑफ इंडिया की नींव 1911 में पड़ी जो 1924 में जाकर पूर्ण हुआ। छत्रपति शिवाजी टर्मिनल पूर्वनाम विक्टोरिया टर्मिनल रेल्वे स्टेशन की स्थापना 1878 में हुई जो 1888 में पूरी हुई। इसके वास्तुकार एफ. डबल्यू स्टीवेंस थे। औपनिवेशिक काल में बने भवन यूरोपीय शैली में बनाए गए थे। वर्तमान में मुम्बई औद्योगिक नगर के साथ पिक्चर निर्माण (सिनेमा) के लिए काफी मशहूर है। **(ग)** 1. एफ. डबल्यू स्टीबेंस 2. सर एडविन ल्यूटिन ने 3. फोर्ट सेंट जार्ज 4. बंकिम चन्द्र चटर्जी 5. मुंशी प्रेमचंद्र **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 10 राष्ट्रीय आन्दोलन (1923-1939)

(क) 1. स्वराज्य दल के द्वारा स्वराज की माँग करने वाले चितरंजन दास, पं. मोती लाल नेहरू व बिट्ठल भाई पटेल थे। इसका उद्देश्य भारत को स्वराज्य दिलवाना, राजनैतिक बंदियों को मुक्त करवाना, दमनात्मक कानूनों को रद्द करवाना तथा विधानसभा और कौंसिल के निर्वाचन जीतकर उनमें प्रवेश पाना और सरकारी नीतियों का विरोध करना था। 2. किसानों और श्रमिकों के राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल होने से इसने एक बड़े आन्दोलन का रूप ले लिया। किसानों और मजदूरों की समस्या हल करना स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए एक बड़ा उद्देश्य बन गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में किसानों ने बारदोली में सफल आन्दोलन किया तथा मद्रास में पहली लेबर यूनियन बना। 3. जवाहर लाल नेहरू, पं. मोतिलाल नेहरू के पुत्र थे। इनका जन्म 14 नवम्बर 1889 को हुआ। इंग्लैंड से शिक्षा प्राप्त करने के बाद यह गाँधीजी के प्रभाव में आकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे और कई बार जेल गए। वे स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 1897 में उड़ीसा के कटक नामक स्थान में हुआ। उन्होंने देश के छात्रों व युवाओं को संगठित करके अंग्रेजों से सशस्त्र संघर्ष किया। उन्होंने जापान की सहायता से आजाद हिन्द फौज (आई. एन. ए.) गठित की और आजादी के लिए अंग्रेजों से युद्ध किया। वे आम जनता में नेताजी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 'चलो दिल्ली' तथा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा,' नारे दिये थे। 4. सविनय अवज्ञा आंदोलन की व्यापकता को देखते हुए अंग्रेज सरकार ने विवश होकर समझौते की नीति अपनाई। इसके लिए लंदन में नवम्बर 1930 से जनवरी 1931 के मध्य प्रथम गोल मेज सम्मेलन असफल रहा। 5 मार्च 1931 को गाँधीजी-इरविन के मध्य समझौता हुआ। कांग्रेस की ओर से गाँधीजी ने लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। लेकिन साम्प्रदायिकता के प्रश्न पर वार्ता बीच में अटक गई। गाँधीजी खाली हाथ स्वदेश लौट आए थे और उन्होंने पुन: सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु कर दिया। यह सम्मेलन 1932 ई. में हुआ था। 5. सन् 1925 में क्रान्तिकारी दल ने लखनऊ के समीप काकोरी नामक स्टेशन पर गाड़ी

रोककर सरकारी खजाना लूट लिया था। इस घटना से सरकार बौखला उठी। क्रान्तिकारियों को पकड़कर मुकदमा चलाया गया। चार क्रान्तिकारी- पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी दी गयी। यह घटना ही काकोरी कांड के नाम से जानी जाती है। **हॉट प्रश्न –** 1. अंग्रेजों ने धर्म के नाम पर हिन्दू-मुस्लिम लोगों में फूट पैदा की। उन्होंने उन नेताओं का समर्थन किया, जो धार्मिक आधार पर राजनीतिक दल बना रहे थे। मुस्लिम लीग के बनाने के पीछे यह उद्देश्य था कि मुस्लिम हितों की रक्षा की जाए। अंग्रेजों के प्रोत्साहन से मुस्लिम लीग दिराष्ट्र सिद्धान्त को आगे लाई। इस प्रकार अंग्रेजों ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया। 2. सुभाष चन्द्र बोस ने सारे देश में छात्र और युवाओं को संगठित किया। वे अंग्रेजों से देश को मुक्त कराने के लिए लड़े। उन्होंने जापानी की मदद से अंग्रेजों से सैन्य तरीके से लड़ने के लिए I.N.A. की स्थापना की। इस प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन में सुभाषचन्द्र बोस का उल्लेखनीय योगदान था। **(ख)** 1. गाँधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस लिए जाने से देश का युवा गर्व बहुत आक्रोशित हुआ और उसके द्वारा एक गम्भीर क्रान्तिकारी आंदोलन की शुरुआत हुई। पं. रामप्रसाद बिस्मिल, रविन्द्र नाथ सान्याल तथा जोगेश चटर्जी ने हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिऐशन बना ली। इसका उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति द्वारा अंग्रेज शासन को उखाड़ फेंकना था। 1925 में क्रान्तिकारियों ने काकोरी में सरकारी खजाना लूटा, साण्डर्स की हत्या की, भगत सिंह व वटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका (1929) में, बंगाल में युवाओं ने पुलिस इंस्पेक्टर जनरल को मार गिराया। महिलाओं ने भी इस आन्दोलन में अपना सहयोग दिया। पूर्वी बंगाल में चटगाँव शस्त्रागार पर क्रान्तिकारियों ने 1930 में कब्जा कर लिया था। इनके नेता सूर्य सेन को धोखे से पकड़कर मृत्युदण्ड दिया गया। भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को 1931 में फाँसी दी गई। पुलिस से संघर्ष करते हुए चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद में शहीद हो गए। 2. ब्रिटिश सरकार की नीतियों का विरोध करने के लिए गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया। गाँधीजी ने अपने साबरमती आश्रम से 12 मार्च 1930 को दांडी यात्रा प्रारम्भ की और 6 अप्रैल 1930 को अपने हाथों से समुद्र किनारे नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा। नमक बनाने पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध था। नमक कानून तोड़ने के बाद सारे देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन जोर पकड़ गया। हड़ताले हुई, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। लोगों ने सरकार को कर देने से मना कर दिया। आंदोलन पूरी तरह अहिंसक रहा। नेताओं को जेल में डाला गया। विवश कर सरकार को समझौते की नीति अपनानी पड़ी। लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ। कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया। 1931 में गाँधी-इरविन समझौता हुआ। गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस लेने का निर्णय किया तथा 1932 में लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। लेकिन साम्प्रदायिकता के प्रश्न पर वार्ता टूट गई। गाँधीजी खाली हाथ वापस लौट आए और उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन पुन: प्रारम्भ कर दिया। 3. 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में हिन्दू व मुसलमान कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़े थे। उनकी इस एकता से अंग्रेज चिन्तित हुए और आगे चलकर दोनों के बीच में फूट के बीज बोने शुरु किये। जो देश के लिए खतरनाक साबित हुए। अंग्रेजों ने उन नेताओं का साथ दिया जो धर्म के आधार पर राजनीतिक दल बना रहे थे। इसी प्रक्रिया में अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग का साथ दिया। 1932 में सिक्खों के लिए अलग मत बल (संख्या) बनाया गया। साम्प्रदायिक दलों के स्थान पर अपने सम्प्रदायों के लिए छूट प्राप्त करने में लग गए। अंग्रेजों के प्रोत्साहन ने मुस्लिम लीग द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को आगे लाई। इसके अनुसार भारत एक अखंड राष्ट्र न होकर दो राष्ट्र थे हिन्दू और मुस्लिम। मुहम्मद अली जिन्ना इस द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के प्रमुख नेता थे। अन्तत: आजादी के साथ ही भारत दो भागों में विभाजित हो गया तथा भयंकर दंगे व मार काट हुई। 4. 1930 में पूर्वी बंगाल (आज का बांग्लादेश) में चटगाँव नामक स्थान के शस्त्रागार पर क्रान्तिकारियों ने अपना आक्रमण कर शस्त्र आदि लूट लिए थे। इसका नेतृत्व मास्टर दा सूर्यसेन ने किया था। कई दिन तक शहर पर क्रान्तिकारियों का अधिकार रहा। सूर्यसेन को विश्वासघात करके पकड़ लिया गया तथा मृत्युदण्ड दिया गया। 5. ब्रिटिश सरकार ने 1935 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट पारित किया। इस एक्ट की शर्तें इस प्रकार थी- (क) भारत एक संघ राज्य बनेगा बशर्ते कि 50% रियासतें इसमें शामिल हों तभी उन्हें दोनों केन्द्रीय मंत्रिमंडलों में पर्याप्त संख्या में प्रतिनिधित्व मिलेगा। (ख) संघ सम्बन्धी धारा लागू नहीं की गई। (ग) इस अधिनियम में भारत को स्वतंत्र उपनिवेश के स्वरूप की सरकार देने का भी उल्लेख नहीं था। स्वाधीनता की बात अलग थी। कांग्रेस ने 1936 में लखनऊ अधिवेशन में इसे अस्वीकार कर दिया। कांग्रेस ने संविधान सभा गठित करने की माँग की तथा चुनावों में उसे भारी सफलता मिली। 11 में से 7 प्रांतों में कांग्रेस की सरकारें बनी तथा अन्य दो प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बनें। कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने बेहतर कार्य किए। (घ) शिक्षा का प्रसार हुआ। किसानों की दशा में सुधार हुआ। राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया गया। **(ग)** 1. 3-2-1928 2. 7 3. सुभाष चन्द्र बोस 4. लाला लाजपत राय 5. भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त 6. 1930 ई. में **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य 6. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 11 स्वतन्त्रता की ओर प्रयाण

(क) 1. रासबिहारी बोस ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की। इसी लीग ने जापानियों द्वारा बन्दी बनाए गए ब्रिटिश सेना के भारतीय बंदियों को लेकर आजाद हिन्द फौज का गठन किया। बाद में नेता सुभाषचन्द्र बोस ने इसकी कमान सँभाली। उन्होंने 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में भारत की कार्यकारी सरकार के गठन की घोषणा की। जापानियों की मदद से नेताजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया। 2. इंग्लैंड के प्रधानमंत्री लार्ड एटली ने अपने मंत्रिमंडल के तीन सदस्यों- पैथिक लारेंस, स्टेफर्ड क्रिप्स और सर. ए.बी. अलेक्जेण्डर को भारतीय नेताओं से वार्ता करने के लिए भारत भेजा। 24 मार्च 1946 को यह मिशन भारत आया। शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया किन्तु भारतीय नेता किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके तब मिशन ने स्वयं 16 मई 1946 को एक घोषणा कर दी जिसे 'केबिनेट मिशन' कहा जाता है। 3. गाँधीजी 1920 में राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुए। उन्होंने असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा 'अंग्रेजों भारत छोड़ों' आन्दोलनों का नेतृत्व किया। 4. रियासतों के भारत में विलय में कुछ रियासतों को छोड़कर शेष रियासतें स्वतन्त्रता के समय ही भारत में विलय हो गई। लेकिन जम्मू-कश्मीर, जूनागढ़, हैदराबाद को सरदार पटेल ने अपनी सफल कूट नीति और सेना के बल पर भारत में विलय करवाया। **हॉट प्रश्न –** 1. रास बिहारी बोस ने दक्षिण पूर्व ऐशिया के देशों में रह रहे भारतीयों की सहायता से जापान में 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना की। जापान ने ब्रिटिश सेनाओं को हराकर दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था। जापान ने ब्रिटिश सेना के हजारों भारतीय सैनिकों को बंदी बना लिया था। तब सुभाष चन्द्र बोस ने ब्रिटिश शासन से भारत को आजाद कराने के लिए भारतीय युद्ध बंदियों को लेकर आजाद हिन्द फौज बनाई। 2. द्वितीय विश्व युद्ध में

ब्रिटेन द्वारा भारतीय जनता से विचार-विमर्श किए बिना ही भारत को युद्ध में शामिल कर लिया। क्राँगेस ने माँग की कि तुरंत राष्ट्रीय सरकार बनाई जाए और ब्रिटेन वादा करे कि युद्ध की समाप्ति पर भारत को स्वतन्त्र कर दिया जाएगा। किन्तु ब्रिटिश सरकार ने इस माँग को अस्वीकार कर दिया। प्रांतों में बने हुए मंत्रिमंडलों ने नवम्बर 1939 में त्याग पत्र दे दिए। भारत को युद्ध में खींचने के विरुद्ध देश के विभिन्न भागों में हड़तालें हुई और अनेक प्रर्दशन हुए। **(ख)** 1. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कांग्रेस ने माँग की कि तुरन्त राष्ट्रीय सरकार बनाई जाए और ब्रिटेन वायदा करे कि युद्ध के बाद भारत को स्वाधीन कर दिया जायेगा। ब्रिटिश सरकार ने यह माँग नहीं मानी। कांग्रेस मन्त्रिमंडलों ने नवम्बर 1939 में त्याग पत्र दे दिए। देश में हड़तालें हुई और अनेक प्रदर्शन हुए। 1940 में कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह की माँग की। अक्टूबर 1940 में क्रांगेस ने व्यक्गित सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। पहले सत्याग्रही विनोबा भावे थे। हजारों सत्याग्रहियों को बन्दी बना लिया गया। इनमें श्रीकृष्ण सिंह, राजगोपालाचार्य, एन.बी. गिडगिल, जी.बी. मवालंकार, सत्यवती, सरोजनी नायडू और अरुणा आसफ अली भी थी। 8 अगस्त 1942 को गाँधीजी ने बम्बई में 'अंग्रेजों भारत छोड़ों' तथा 'करो या मरो' का नारा देकर आन्दोलन शुरु किया। सभी बड़े कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिए गए। सरकारी दमन चक्र बर्बरता से चला। हजारों गिरफ्तार हुए और सैंकड़ों मारे गए। बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा। लेकिन सरकार ने कोई सहायता नहीं की। 2. अंग्रेज भारतीयों को राजनैतिक अधिकार देने के खिलाफ थे। लेकिन यू.एस.ए. और श्रमिक दल के नेताओं के दबाव पड़ने पर वे भारतीय नेताओं से संधि वार्ता तैयार हो गए। मार्च 1942 में सर स्टेफर्ड किप्स को कुछ प्रस्तावों के साथ भारत भेजा गया। ये प्रस्ताव इस प्रकार थे- (क) युद्ध के बाद भारत को नियन्त्रण दे दिया जायेगा। भारतीय अपनी स्वाधीन सरकार बना तो सकते हैं लेकिन वे अंग्रेजों के अधीन ही रहेंगे। (ख) प्रत्येक रियासत को यह अधिकार होगा कि वह भारत में शामिल हो या अलग बनी रहे। अलग रहने पर उसे ब्रिटेन के साथ सन्धि करनी होगी। लोगों को कुछ कहने का अधिकार नहीं होगा। (ग) कांग्रेस का मानना था कि ये प्रस्ताव बहुत देरी से दिए गए हैं। स्वतन्त्रता का आन्दोलन और तेजी से फैलने लगा। 3. क्रिप्स मिशन की असफलता व इससे जुड़े असंतोष को लेकर देश भर में निराशा फैल गई। 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस ने बम्बई में एक सम्मेलन में 'भारत छोड़ों' का नारा दिया। ब्रिटिश शासन की तुरन्त समाप्ति तथा राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की माँग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया गया। गाँधीजी ने इसी अवसर पर 'करो या मरो' का नारा दिया। सरकारी दमन चक्र चला। सभी बड़े नेता बन्दी बना लिए गए। जनता ने क्रोधित होकर सरकारी सम्पत्ति को नष्ट करना शुरु कर दिया। सरकार द्वारा समाचार पत्रों में आन्दोलन के समाचारों के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई। युद्ध के दौरान भारतीयों को असहनीय पीड़ा भुगतनी पड़ी। बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा लेकिन सरकार ने कोई सहायता प्रदान नहीं की। इस अकाल में लगभग 30 लाख लोग मारे गए। 4. स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही भारत के सामने कई चुनौतियाँ मुँह फाड़े खड़ी थी, जिनका समाधान करना बहुत आवश्यक था। ये चुनौतियाँ इस प्रकार थीं- (क) रियासतों की समस्या- स्वतन्त्रता के साथ ही अंग्रेजों ने भारतीय रियासतों को भी स्वतंत्र कर दिया था तथा उन्हें ये अधिकार दे दिया कि वे भारत में मिले या पाकिस्तान में अथवा स्वतन्त्र रहे। इससे देश की अखंडता को खतरा था। गृहमन्त्री सरदार पटेल ने अपनी सूझबूझ व चतुराई से उन्हें भारत में विलय होने के लिए राजी करा लिया। (ख) शरणार्थी पुनर्वास- आजादी के बाद करोड़ों लोग घर से बेघर हो गए थे। पुनर्वास की समस्या भी बहुत गम्भीर थी। इस दिशा में सरकार ने सभी आवश्यक प्रयास करके शरणार्थियों को पुन: शांतिपूर्ण ढंग से जीने की स्थिति प्रदान की। (ग) देश के शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए करना डॉ. भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान समिति ने संविधान का निर्माण किया। 26 नवम्बर 1949 को यह कार्य पूर्ण हुआ तथा 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान देश को समर्पित कर दिया गया। (घ) 1961 में गोवा को पुर्तगालियों से स्वतंत्र कराया गया और इस प्रकार भारत पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त संघीय गणराज्य बन गया। **(ग)** 1. पोलैण्ड, सन् 1939 2. रामगढ़, मौलाना अबुल कलाम आजाद 3. विनोबा भावे 4. 21 अक्टूबर 1943 5. दिल्ली चलो 6. 1946 में 7. लार्ड माउन्टबेटन **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. असत्य 5. सत्य 6. सत्य 7. सत्य 8. सत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 12 भारत और उसके पड़ोसी देश

(क) 1. ताशकंद समझौता भारत और पाकिस्तान के मध्य 1965 के भारत-पाक युद्ध के बाद हुआ। 2. भारत के मध्य बांग्लादेश का मुख्य विवाद गंगा नदी के पानी में सहभागिता को लेकर तथा चकमा शरणार्थियों के भारत में घुसपैठ को लेकर था। ये दोनों समस्याएँ आत्मीयता से दोनों देशों के बीच सुलझा ली गई हैं। 3. भारत-पाक के बीच खेलों, सांस्कृतिक व साहित्य के माध्यम से सम्बन्ध मजबूत हैं। 4. नेपाल से मिलते हुए भारत के राज्य, उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश, बिहार, सिक्किम तथा पश्चिमी बंगाल हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 20 फरवरी, 1999 को बस से लाहौर की यात्रा की, जिसे 'बस कूटनीति' कहा जाता है। 2. भारत के पाकिस्तान के साथ सन् 1947, 1965, 1971 तथा 1999 में युद्ध हुए। **(ख)** 1. भारत के पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध न होने का मुख्य कारण कश्मीर विवाद है, स्वतन्त्रता के बाद कश्मीर का भारत में विलय हो गया। पाक ने 1947 में कश्मीर को हड़पने के लिए आक्रमण किया। भारतीय सेनाओं ने पाक के मंसूबे विफल कर दिए। पाकिस्तान ने कश्मीर के कुछ भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर रखा है जिसे आजाद कश्मीर कहा जाता है। लेकिन पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है 1947, 1965, 1971 तथा 1999 में भारत से चार बार पराजित हो चुका है। पाक का आई एस आई संगठन भारत में आतंकवाद फैलाने में आतंकवादियों को प्रशिक्षण व अन्य सहायता देकर अपनी घिनौनी कार्यवाही में बराबर सलंग्न है। इसी कारण से दोनों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में बाधा है। 2. भारत व श्रीलंका के बीच प्राचीन काल से ही सम्बन्ध रहे हैं। सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म का प्रचार करने हेतु श्रीलंका भेजा था। आज भी बौद्ध धर्म श्रीलंका का प्रमुख धर्म है। श्रीलंका के हजारों तीर्थ यात्री भारत में बौद्ध धर्म के तीर्थों की यात्रा करने आते हैं। दोनों ही देश गुट-निरपेक्षता तथा शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। बीच में भारतीय मूल के तमिल जो श्रीलंका में रहते हैं के कारण कुछ समय दोनों के बीच संबंधों में कटुता रही। लेकिन अब स्थिति सामान्य और मैत्रीपूर्ण है। भारत लिट्टे को आतंकवादी संगठन घोषित कर उसे प्रतिबंधित कर रहा है। 3. नेपाल भारत का पड़ोसी देश है। यह भारत के उत्तर में स्थित विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है। भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से दोनों देशों के मध्य निकटतम संबंध अच्छे रहे है। 1950 में नेपाल-भारत के मध्य समझौता हुआ, जिसमें कोई भी सरकार एक-दूसरे की सुरक्षा के प्रति कोई भी विश्वासघात पूर्ण कार्य नहीं करेगी। भारत-नेपाल के विकास हेतु यथासम्भव मदद करता है। 1964 में भारत-नेपाल के बीच विशाल आर्थिक सहायता के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए गए। 1965 ई. में भारत-

पाक युद्ध के समय नेपाल ने भारत का समर्थन किया। भारत-नेपाल समझौतों के तहत नेपाल में भारत के सहयाग से सीमेन्ट, चीनी व इंजीनियरिंग के कारखाने स्थापित हुए। बीच में कुछ समय के लिए सम्बन्धों में सिक्किम विलय को लेकर कटुता उत्पन्न हुई। लेकिन अब स्थिति सामान्य है। भारत अभी भी नेपाल का मुख्य व्यापारिक और विकासात्मक साझीदार बना हुआ है। भारत में विभिन्न क्षेत्रों में नेपाल को आर्थिक व तकनीकी सहायता प्रदान की है तथा अभी भी कर रहा है। 4. भारत और चीन के मध्य संबंध शताब्दियों पुराने रहे हैं। फाह्यान हवेगत्सांग, तथा इरिंसग जैसे चीन यात्रियों का भारत से विशेष लगाव रहा है। भारत से भी बौद्ध धर्म प्रचारक चीन गये और वहाँ जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। चीन ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रति अपनी सहानुभूति दर्शायी और भारतीय नेताओं ने 1949 की चीनी क्रांति का स्वागत किया, मध्यकाल में भी भारत-चीन के मध्य व्यापारिक संबंध थे। दोनों ही देशों में परमाणु शक्ति सम्पन्न हैं, इनके मध्य तनाव का मुख्य कारण भारत द्वारा तिब्बतियों को शरण देना, भारत में सिक्किम का विलय और सीमा-विवाद रहा है। भारत और चीन दोनों ने पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर करने के बावजूद चीन ने भारत पर 1962 में हमला किया और भारत की सीमावर्ती जमीन पर अपना कब्जा कर लिया। युद्ध समाप्त होने के बाद भारत-चीन के मध्य कई समझौते 1985, 1988, 1993 में हुए। दोनों ने नियन्त्रण रेखा का पालन करने के लिए समझौता किया। लेकिन चीन फिर भी भारतीय सीमा पर अतिक्रमण करने की कार्यवाही करता रहता है। चीन के साथ व्यापारिक समझौते 2001 में हुआ। चीन ने सिक्किम को भारत का अंग मान लिया है। **(ग)** 1. पाकिस्तान 2. कश्मीर 3. म्यांमार 4. चीन में किए गए 5. हरि सिंह 6. ज्ञानेन्द्र ।

अध्याय- 13 हमारे संसाधन

(क) 1. कोई भी वस्तु जो मानव के हित या कल्याण में प्रयुक्त होती है तथा जिसके बिना मानव का कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता, संसाधन कहलाती है। 2. मानव निर्मित मशीन या वस्तु मानव संसाधन कहलाती है, जैसे- हवाई जहाज, बस, कार, रेडियों, टेलीविजन आदि। **हॉट प्रश्न –** 1. किसी क्षेत्र विशेष में पाए जाने वाले संसाधन जिनका अब तक उपयोग नहीं किया गया है, सम्भाव्य संसाधन कहलाते हैं। भविष्य में उनका उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अफ्रीका में विस्तृत जल संसाधन बारहमासी नदियों के रूप में विद्यमान है, परन्तु उनमें से अनेक अभी भी उपयोग में नही लाए जा सके है। 2. **उपयोगिता के आधार पर संसाधनों का वर्गीकरण –** (अ) कृषि संसाधन – जो संसाधन हम कृषि से प्राप्त करते हैं, कृषि संसाधन कहलाते है। ये संसाधन हमें भोजन, कपड़ा और आवास उपलब्ध कराते है। (ब) पशु संसाधन – जो संसाधन हम पशुओं से प्राप्त करते हैं, पशु संसाधन कहलाते है। लोग पशुओं से दूध, माँस, खाल, हड्डियाँ आदि प्राप्त करते है। (स) ऊर्जा संसाधन – कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि ऊर्जा संसाधन है। (द) खनिज संसाधन – पृथ्वी के गर्भ से खनन के आधार पर प्राप्त संसाधनों को खनिज संसाधन कहते हैं। लौह-अयस्क, ताँबा, सोना, कोयला, खनिज संसाधन के उदाहरण है। **(ख)** 1. विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में संसाधनों का अधिक उपयोग इसलिए होता है कि व्यक्ति सुविधा भोगी हो जाता है, उसकी आवश्यकताओं इच्छाओं में वृद्धि होने लगती है, इसकी पूर्ति करने के लिए व अधिक संसाधनों का प्रयोग करता है जबकि विकासशील देश अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही लगे रहते हैं। 2. संसाधनों को मूल रूप से प्राकृतिक व मानव संसाधनों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधन- जो वस्तुएँ मानव को अपने हित के लिए प्रकृति से प्राप्त होती है वे प्राकृतिक संसाधन कहलाती हैं जैसे- जल, वायु, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, खनिज पदार्थ, वनस्पति, जीव-जन्तु आदि। मानव निर्मित संसाधन में मुख्यत: यंत्र, उपकरण, वाहन आदि है जिन्हें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्मित करता है। उपलब्धता के आधार पर संसाधन के दो प्रकार हैं- (क) नवीकरणीय संसाधन- ऐसी वस्तु जिनका पुन: उत्पादन व वृद्धि हो सकती है जैसे- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा आदि। (ख) अनवीकरणीय संसाधन- प्रयोग के बाद में संसाधन समाप्त हो जाते है तथा इनके पुन: बनने में हजारों साल का समय लगता है, जैसे- तेल, प्राकृतिक गैस, कोयला तथा अन्य खनिज पदार्थ आदि। स्त्रोत के आधार पर- जैव अथवा जैविक संसाधन, जो हमें सजीवों से प्राप्त करते हैं, जैसे- पेड़-पौधे, जीव आदि। अजैव अथवा अजैविक संसाधन- जो निर्जीव व पदार्थों से प्राप्त होते हें जैसे- खनिज पदार्थ, सोना-चाँदी, ताम्बा आदि धातुएँ। विकास व उपयोगिता के आधार पर भी इनका वर्गीकरण किया जा सकता है, सम्भाव्य संसाधन, विकसित संसाधन, सरंक्षित संसाधन, कृषि संसाधन, पशु संसाधन, ऊर्जा संसाधन और खनिज संसाधन है। 3. संसाधनों का सरंक्षण करना हमारे लिए बहुत ही आवश्यक है। अगर हम इनका सही उपयोग नहीं करेंगे तो यह शीघ्र ही समाप्त हो जाएँगे और हमारे स्वयं के जीवन के लिए तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महान संकट पैदा हो जायेगा। उदाहरण के लिए प्राकृतिक गैस या पेट्रोल, डीजल आदि सीमित मात्रा में ही हैं। इनका समुचित प्रयोग हमारे लिए लाभदायक होगा और इनका दुरुपयोग करना हमारे लिए नुकसानदायक होगा। क्योंकि ये जिस रूप में हमें प्राप्त हो रहे हैं उन्हें बनने की प्रक्रिया में हजारों वर्ष लगे है, इसलिए सम्पूर्ण विश्व को इनका सरंक्षण करना अति आवश्यक है। 4. परिवहन और दूर संचार संसाधनों का उपयोग हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। परिवहन और दूरसंचार ने सम्पूर्ण विश्व को बहुत ही छोटा कर दिया है। आज हम कुछ ही घण्टों के अन्दर भारत से विदेशों में जा सकते हैं तथा मिनटों में अपने दूर देशों में बसे हुए सम्बन्धियों के कुशल समाचार जान सकते है और अपने समाचार उन तक पहुँचा सकते हैं। संचार माध्यम के विकसित होने से हमें घर बैठे-बैठे सम्पूर्ण विश्व में घटी घटनाओं का हाल तुरन्त पता लग जाता है। इसलिए परिवहन व दूर संचार आज बहुत ही उपयोगी संसाधन हैं। **(ग)**1. सत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य 6. सत्य। **(घ)** 1. जैविक संसाधन- वे संसाधन है जो हमें सजीव पदार्थों से प्राप्त होते है। जैसे- पैड़-पौधे, वन, जीव-जन्तु, पशु, मानव आदि। अजैविक संसाधन- वे संसाधन जो हमें निर्जीव पदार्थों से प्राप्त होते हैं जैसे- सभी धातुएँ, सोना-चाँदी, लोहा, ताँबा। ये उपयोग के बाद तुरंत नहीं बन पाते हैं। 2. सम्भाव्य संसाधन- किसी क्षेत्र विशेष में पाए जाने वाले संसाधन जिनका अब तक उपयोग नहीं किया गया है, भविष्य में इनका उपयोग हो सकता है। वास्तविक संसाधन- जो संसाधन प्रयोग में हैं या मानवों द्वारा पहले ही प्रयोग किए जा चुके हैं वास्तविक संसाधन कहलाते हैं। ऊर्जा के संसाधन जैसे- कोयला, पेट्रोलियम, यूरेनियम आदि। 3. नवीकरणीय संसाधन- ऐसी वस्तुएँ जो पुनरुत्पादन या वृद्धि करती हैं जैसे- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा आदि। अनवीकरणीय संसाधन- जिनका प्रयोग करने के बाद समाप्त हो जाते हैं और पुन: निर्माण में हजारों वर्ष लग जाते हैं जैसे- खनिज तेल, कोयला व अन्य खनिज धातुएँ व पदार्थ। **(ङ)** 1. मानव की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति द्वारा जो वस्तुएँ मानव को प्राप्त होती है प्राकृतिक संसाधन कहलाती हैं। जैसे- जल, वायु, सौर ऊर्जा, खनिज पदार्थ, पेट्रोलियम आदि। इनके बिना मानव का कोई कार्य

सम्पन्न नहीं हो सकता है। 2. खनिज संसाधनों का मानव के विकास में बहुत योगदान रहा है यदि ये संसाधन न होते तो आज का मानव अपना विकास ही नहीं कर पाता। उदाहरण के लिए लोहे के द्वारा विभिन्न वस्तुएँ तथा मशीनों और परिवहन के साधनों का निर्माण करना, पेट्रोलियम पदार्थों द्वारा परिवहन साधनों का संचालन करना, इसी प्रकार कोयला व अन्य धातुओं का मानव विकास में काम आना आदि है। 3. प्रकृति द्वारा मानव को संसाधन प्राप्त हुए है उसे उनका सरंक्षण करना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि यह सीमित मात्रा में है और इनके पुन: निर्माण में हजारों वर्ष लगते हैं। यदि मानव इनका सरंक्षण न करके अति दोहन करता रहेगा तो उसका भविष्य बहुत ही खराब हो सकता है, इसलिए जीव-जन्तु, वन आदि का सरंक्षण करना बहुत ही आवश्यक है।

अध्याय- 14 प्राकृतिक संसाधन- भूमि, मृदा एवं जल

(क) 1. भूमि को महत्त्वपूर्ण संसाधन इसलिए माना जाता है कि जीवन से सम्बन्धित सभी कार्य भूमि पर ही सम्पन्न होते हैं। हमारी सभी आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष पूर्ति भूमि के द्वारा ही होती है। 2. भूमि उपयोग के प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख कारक स्थलाकृति, मृदा, जलवायु हैं। 3. मृदा निर्माण करने वाले पाँच कारक- मूल शैले, जलवायु, मृदा जीव, समय तथा तापमान आदि हैं। 4. जलोढ़ मिट्टी सबसे उपजाऊ मिट्टी है। यह नदियों द्वारा लाए गए महीन कण वाली मिट्टी हैं। यह मिट्टी उत्तर के विशाल मैदानी क्षेत्रों तथा समुद्रतटीय मैदानों में पाई जाती है। इसके दो प्रकार होते हैं बांगर व खादर। 5. काली मिट्टी प्रायद्ववीपीय भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में पाई जाती है। यह काफी उपजाऊ होती है तथा कपास की खेती के लिए आदर्श मिट्टी मानी जाती हैं। ये अधिक समय तक नमी को सोख कर रखती हैं। **हॉट प्रश्न –** 1. पृथ्वी पर स्थल का अनुपात लगभग 29% और जल का अनुपात लगभग 71% अर्थात् दो तिहाई भाग है। 2. भारत में वर्षा जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर महीनों में होती है। **(ख)** 1. भूमि सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है इसलिए हमें इसका सरंक्षण करना बहुत आवश्यक है। क्योंकि हम भूमि पर ही निवास करते हैं। भूमि पर ही कृषि होती है। इसी पर सड़कें, रेलमार्ग तथा भवन आदि का निर्माण हेाता है। भूमि से ही हमारी विभिन्न प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। भूमि से ही हमें खनिजों की प्राप्ति होती है। पशु चारण हेतु चरागह भूमि पर ही बनते है। इस महत्त्व को देखते हुए हमें भूमि के कटाव तथा अपरदन से उसका सरंक्षण करना चाहिए। 2. मृदा सरंक्षण हेतु हमें निम्नलिखित उपाय करने चाहिए- (क) वृक्षों की कटाई रोकना और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना। (ख) मैदानी क्षेत्रों में मृदा अपरदन हेतु पट्टीदार खेती करना यानि कि भूमि की सँकरी पट्टियों में विविध फसलें उगाना। (ग) पर्वतीय क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेत बनाकर मृदा अपरदन को रोकना। (घ) नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ को रोकना। (ङ) फसल-चक्र द्वारा मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखना। (च) खेतों पर मेढ़ बनाना। 3. पृथ्वी पर जल की मात्रा में वृद्धि नहीं की जा सकती, परन्तु विभिन्न उपायों के द्वारा सीमित जल स्त्रोतों का उचित प्रयोग किया जा सकता है। जिससे जल की बढ़ती हुई माँग को पूरा किया जा सकता है, जल संरक्षण के लिए निम्न उपाय काम में लाए जा सकते हैं- (क) नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ पर नियन्त्रण किया जा सकता है तथा नदी के जल का सदुपयोग किया जा सकता है। (ख) जल प्रदूषण को नियंत्रित करके स्वच्छ जल को प्रदूषित जल, तेल आदि से बचाकर और नदी तट पर कपड़े, धोना रोककर यह कार्य किया जा सकता है। (ग) वृक्षारोपण द्वारा जल का संरक्षण किया जा सकता है क्योंकि वृक्ष वर्षा करवाते है तथा भूमि का कटाव रोकते हैं। (घ) वर्षा जल का संरक्षण करके हम इसे शुष्क ऋतु में प्रयोग कर सकते हैं। सरकार वर्षा जल संरक्षण हेतु लोगों को जागरूक कर रही है। (ङ) मलजल को स्वच्छ करके पुन: उपयोग में लाना। (च) जल को व्यर्थ में बहने से रोककर हम जल संरक्षण कर सकते हैं। अपने घरों और सार्वजनिक नलों की टोटियों को खुला न छोड़कर। (छ) अधिक से अधिक नहरों का निर्माण कर शुष्क क्षेत्र में जल की आपूर्ति करना। उदाहरण के लिए इंदिरा गाँधी नहर है। **(ग)** 1. सत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य 6. असत्य 7. असत्य 8. असत्य। **(घ)** 1. सतलुज नदी 2. कपास 3. जल 4. इंदिरा गाँधी नहर 5. बांगर **(ङ)** 1. सतलुज नदी पर पंजाब में 2. महानदी पर 3. कृष्णा नदी पर 4. दामोदर नदी पर **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 15 कृषि

(क) 1. कृषि का अभिप्राय फसलों को उगाने से है। इसके अन्तर्गत पशुपालन वानिकी, बागानी कृषि, मछली पालन, मुर्गीपालन तथा रेशम कीट पालन को भी शामिल किया जाता है। 2. किसी क्षेत्र में फसलों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक उच्चावच, मिट्टी तथा जलवायु हैं। प्रत्येक फसल के लिए भिन्न और निश्चित प्रकार की भौगोलिक दशाएँ आवश्यक होती है। 3. इस प्रकार की कृषि में खेती की भूमि पर सरकार का स्वामित्व होता है। कृषकों को उनके श्रम के अनुसार वेतन दिया जाता है। राज्य के खेत बहुत विशाल होते हैं। ये खेत मूल रूप से कृषि सुधार का रूप है। यह कृषि चीन, यूरोपीय देश तथा भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है। **हॉट प्रश्न –** 1. सघन कृषि इस प्रकार की खेती है जिसमें किसान छोटी जोतों में श्रेष्ठ किस्म के बीजों, प्रचुर मात्रा में उर्वरक उपयुक्त सिंचाई और कुशल श्रमिकों द्वारा प्रति हेक्टेयर अधिक में ही प्राप्त करते हैं। एक ही खेत से कई-कई फसलें ली जाती है। ऐसा उपजाऊ भूमि और अनुकूलन जलवायु में संभव है। चावल, मक्का, गेहूँ, दालें तथा तिलहन आदि सघन कृषि की फसलें है। 2. खाड़ी प्रदेशों में मवेशी अधिकतर दूध और दुग्ध उत्पादों के लिए पाले जाते है। खाड़ी प्रदेश शहरी केन्द्रो से घिरे होते है, जहाँ दुग्ध उत्पादों की भारी माँग होती है। **(ख)** 1. कृषि विकास में सरकार ने किसानों को सिंचाई, विद्युत तथा परिवहन जैसी आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई है। किसानों को ट्रेक्टर, थ्रेसर, हार्वेस्टर जैसे कृषि यन्त्र उन्नत किस्म के बीज, उर्वरक, कीटनाशक तथा विद्युत वास्तविक मूल्य की तुलना में कम मूल्य पर उपलब्ध कराए हैं। किसानों को बैंकों से सस्ती दर पर ऋण दिलाया जाता है। इन सब उपायों से फसलों के उत्पादन विशेषकर खाद्यान्नों में आशातीत वृद्धि हुई है। फसलों के बीमा योजना को सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। फसल के भण्डारण के लिए सरकार भण्डारण हेतु प्रयास कर रही है। 2. निर्वाह कृषि- इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत फसलों का उत्पादन कृषक परिवार द्वारा स्थानीय उपयाग के लिए किया जाता है। इसके अन्तर्गत तीन प्रकार की खेती होती है- (क) भ्रमणकारी पशुचारण- इसमें चरवाहे भेड़, बकरी, ऊँट, याक आदि पशुओं को लेकर चारे की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते रहते हैं। इसके उदाहरण सहारा, पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका, पश्चिम व मध्य एशिया में मिलते हैं। (ख) स्थानांतरित कृषि- इस पद्धति में लोग वनों को साफ कर, जलाकर या काटकर खेती करते हैं। जमीन की उर्वरा शक्ति कम होने पर जगह बदल कर खेती करते हैं। भारत में इसे झुमिंग के नाम से पुकारते हैं। (ग) सघन कृषि- इस प्रकार की खेती में किसान छोटी जोतों में अच्छे किस्म के बीज, उर्वरक, उपयुक्त सिंचाई से प्रति हेक्टर अधिक उत्पादन करते हैं। वाणिज्यिक कृषि- इस कृषि का प्रमुख उद्देश्य उपजों को बाजार में बेचना होता है। इसमें दो प्रकार की कृषि होती है। (क) व्यापारिक खाद्यान्न प्रधान कृषि- इसमें उन फसलों को बोया जाता है जिन्हें बेचकर लाभ कमाया जा सके।

इस खेती में पूँजी की मात्रा कम लगती है तथा कुल उत्पादन अधिक होता है। कपास, गन्ना, तिलहन, गेहूँ, मक्का आदि ऐसी फसलें हैं। (ख) रोपण कृषि- यह कृषि मुख्यत: उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है। इसमें चाय, कॉफी, कोको, तेल, ताड़ और रबड़ उगाये जाते हैं। 3. (क) सहकारी कृषि सहकारिता के आधार पर की जाती है। इसमें किसानों की सहकारी समिति द्वारा कृषि कार्य होता है। कृषि उत्पादन का लाभांश श्रम तथा भूमि के अनुपात अनुसार वितरित किया जाता है। छोटे खेतों को मिलाकर बड़े खेत बनाकर सामूहिक रूप से खेती की जाती है। सामूहिक कृषि- एक स्वयंसेवी उत्पादक सहकारी संगठन है। जो उत्पादन और सामूहिक श्रम के सामाजिक स्वामित्व पर आधारित है यह मानव द्वारा मानव के शोषण को नियन्त्रित करती है। खेत का प्रबंधन एक समिति करती है। जिसकी देखरेख प्रबन्धक करता है। प्रबन्धक हर सदस्य द्वारा किए गए कार्य को जाँच कर उसी के आधार पर उसे परिश्रमिक देता है। पूर्व सोवियत संघ में इस प्रकार की कृषि का प्रचलन था। **(ग)** 1. व्यापारिक प्रकार 2. झूमिंग 3. पशु पालन 4. रेशम कीट पालन 5. मिश्रित कृषि **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. सत्य **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 16 खेती : मुख्य फसलें और स्थिति अध्ययन

(क) 1. विश्व में उगाई जाने वाली तीन प्रमुख रेशेदार फसलें जूट, कपास तथा नारियल हैं। 2. गन्ना एक उष्ण कटिबंधीय पौधा है। इसके लिए उष्ण और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके लिए 25° से. तापमान तथा 100 सेमी. वर्षा की आवश्यकता होती है। गन्ना उगाने के लिए गहरी दोमट और जल निकासी वाली उपजाऊ मिट्टी उपयुक्त होती है। भारत में गन्ना उत्पादक प्रमुख राज्य उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र हैं। इसके अतिरिक्त पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, कर्नाटक व आन्ध्रप्रदेश में भी गन्ना उगाया जाता है। 3. चाय की खेती के लिए उपोष्ण जलवायु 25° से. तापमान तथा 200 सेमी. वर्षा की आवश्यकता होती है। हल्का कोहरा तथा ओस इसके विकास के लिए उत्तम दशाएँ हैं। इसके लिए जीवांश तथा लोहांश युक्त उर्वर मिट्टी व ढालू धरातल की आवश्यकता होती है। चाय भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, चीन, जापान तथा इण्डोनेशिया में प्रमुख रूप से पैदा होती है। भारत में असम व दार्जिलिंग में चाय की खेती प्रमुख रूप से होती है। **हॉट प्रश्न –** 1. भारत में चावल की खेती मुख्य रुप से पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में होती है। 2. कॉफी का पाउडर बनाने के लिए कॉफी की फलियों को 99 सेल्सियस के तापमान पर भूना जाता है। **(ख)** 1. दो प्रमुख खाद्यान्न फसलें गेहूँ व चावल हैं। दोनों के लिए भिन्न जलवायु की आवश्यकता होती है। (क) गेहूँ- यह उष्ण कटिबंधीय भागों में उगाया जाता है। इसके लिए 20° से. औसत तापमान तथा 40 सेमी. से 75 सेमी. वर्षा व शीत ऋतु की आवश्यकता होती है। फसल पकने के समय आसमान साफ रहना चाहिए। यह रबी की फसल है। (ख) चावल- इसकी खेती के लिए 20° से. से अधिक तापमान तथा 100 सेमी. से 150 सेमी. वर्षा की आवश्यकता होती है। चावल की खेती अधिकतर नदी-घाटियों डेल्टाओं तथा तटीय मैदानों में की जाती है। यह खरीफ की फसल है। 2. हरित क्रान्ति- हरित क्रान्ति से खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि हुई है। खेती के लिए उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग किया गया। उर्वरक तथा कीटनाशकों के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई। देश अब खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गया है। खाद्यान्न उत्पादन में इस वृद्धि का कारण उन्नत किस्म के बीज, उर्वरक तथा सिंचाई की अच्छी व्यवस्था है। जिसे हरित क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। ये सुधार देश को खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार द्वारा किसानों की सहायता के रूप में हुए है। 3. भारत में कृषि महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है, जो देश की तीन चौथाई जनसंख्या के जीवन यापन का साधन है। यहाँ का भौगोलिक क्षेत्रफल का आधा भाग फसले उगाने के काम आता है। इसलिए इसे कृषि प्रधान देश कहते है। 4. भारत तथा अमेरिकी कृषि फार्मों की तुलना इस प्रकार हैं- (क) भारत- भारत में कृषि एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है जो देश की 75% जनता द्वारा किया जाता है। भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जो अपने भौगोलिक क्षेत्रफल के अधिकतम भू-भाग का उपयोग खेती के लिए करता है। यहाँ पर खेत छोटे होते है जिनमें पारंपरिक ढंग से खेती की जाती हे। कुछ बड़े किसान अपने फार्मों पर ट्रेक्टर, थ्रेसर, हार्वेस्चर आदि का भी प्रयोग करते हैं। यहाँ कृषि मुख्य रूप से खाद्यान्न के लिए है। अमेरिका- अमेरिका की कृषि मुख्यत: व्यावसायिक कृषि है और भारतीय कृषि से अत्यंत भिन्न है। वहाँ पर जनसंख्या कम और देश भारत के क्षेत्रफल से बहुत बड़ा है। वहाँ खेत बड़े होते हैं। एक फार्म का आकार लगभग 200 हैक्टेयर का होता है। वहाँ का किसान मिट्टी और जल को परख कर फिर फसल बोता है और सारा कार्य मशीनों के द्वारा सम्पन्न होता है। अमेरिकी किसान पूरी तरह व्यावसायिक है और कृषि कार्य में निपुण होने के साथ आय-व्यय के ब्यौरे ठीक-ठीक लेखा-जोखा रखते हैं। **(ग)** 1. व्यापारिक फसलें 2. शुष्क फसल 3. तीन चौथाई 75% 4. काली जलोढ़ 5. खरीफ की **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य **(ङ)** 1. जूट – सुनहरी तंतु 2. कपास – काली मिट्टी 3. गन्ना – चीनी, गुड़ 4. तिलहन – मूँगफली, सरसों, सोयाबीन 5. रागी – नाचमी 6. चाय – असम **परियोजना कार्य-** छात्र स्वंय करें।

अध्याय- 17 उद्योग

(क) 1. सिलाई मशीन बनाने का उद्योग उपभोक्ता उद्योग की श्रेणी में आता है क्योंकि इसके लिए लोहा आदि सामान दूसरों से लेना पड़ता है। 2. बड़े उद्योग की मुख्य आवश्यकता बड़ी पूँजी 1 करोड़ से अधिक की आवश्यकता होती है साथ ही कच्चा माल, विद्युत व परिवहन, श्रम की सुविधा होनी चाहिए। **हॉट प्रश्न –** 1. उद्योगों की स्थापना को प्रभावित करने वाले कारक है – (अ) कच्चे माल की उपलब्धता। (ब) विद्युत की उपलब्धता (स) अच्छी परिवहन प्रणाली। (द) बड़े बाजार तक पहुँच। (य) पूँजी की उपलब्धता। (र) अन्यः– समतल भूमि, औसत जलवायु, जल की उपलब्धता, सरकारी नियम आदि। 2. भारत में औद्योगिक क्षेत्र है – उत्तरी औद्योगिक क्षेत्र, उत्तरी पूर्वी औद्योगिक क्षेत्र, मुम्बई-पुणे क्षेत्र, बैंगलोर-चैन्नई क्षेत्र, कोल्लम-तिरुअनंतपुरम क्षेत्र। **(ख)** 1. उद्योग एक आर्थिक प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध वस्तुओं के उत्पादन, धातुओं के निष्कर्षण या सेवाओं के निष्पादन से है। उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाले कारण इस प्रकार हैं- (क) कच्चे माल की उपलब्धता (ख) विद्युत की उपलब्धता (ग) अच्छी परिवहन प्रणाली (घ) बड़े बाजारों तक तैयार माल की पहुँच (ङ) पूँजी की उपलब्धता (च) अन्य : समतल भूमि, औसत जलवायु, जल की उपलब्धता तथा सरकारी नियम आदि उद्योगों को प्रभावित करते हैं। 2. कच्चे माल को उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित करने वाली इकाईयाँ उद्योग कहलाती है। उद्योग एक आर्थिक प्रक्रिया है। हमारे देश में कई प्रकार के उद्योग प्रचलित हैं, लोहा और इस्पात (वस्तुओं का उत्पादन) कोयले, खनन उद्योग, पर्यटन उद्योग (सेवाएँ उपलब्ध कराना)। विनिर्माण उद्योगों का सम्बन्ध वस्तुओं के उत्पादन से है। औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप तेजी से उद्योगों की स्थापना हुई है। हमारे देश में उद्योग निजी तथा सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में स्थापित हैं। 3. उद्योगों को कच्चे माल तथा स्वामित्व के आधार पर निम्नवत् वर्गीकृत किया जा सकता है। कच्ची

सामग्री के स्त्रोत के आधार पर- (क) कृषि आधारित उद्योग जैसे – खाद्य उद्योग, सूती एवं जूट, वस्त्र उद्योग, वनस्पति तेल उद्योग। (ख) पशु आधारित उद्योग- दुग्ध और मांस उद्योग। (ग) समुद्र आधारित उद्योग- मत्स्य प्रसंस्करण उद्योग। (घ) वन आधारित उद्योग- कागज व फर्नीचर उद्योग (ङ) खनिज आधारित उद्योग- लोहा-इस्पात, सीमेन्ट, रासायनिक उद्योग आदि। स्वामित्व के आधार पर- (क) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग जो सरकार तथा उसके अभिकरणों द्वारा चलाए जाते हैं। जैसे- हवाई जहाज, रेल्वे इंजन आदि बनाने के उद्योग। (ख) निजी क्षेत्र के उद्योग जो व्यक्तिगत या व्यक्ति समूहों द्वारा चलाए जाते हैं। (ग) सहकारी क्षेत्र के उद्योग कच्ची सामग्री के उत्पादकों या आपूर्तिकर्ताओं या श्रमिकों सभी के द्वारा चलाए जाते हैं। 4. विद्युत व परिवहन साधन उद्योगों को बहुत प्रभावित करते हैं। विद्युत- यदि उद्योगों को पर्याप्त और सस्ती दर पर बिजली उपलब्ध नहीं होगी तो उत्पादन पर प्रभाव पड़ेगा तथा वस्तु के मूल्य में भी वृद्धि होगी। इसलिए उद्योगों को पर्याप्त मात्रा और सस्ती दर पर विद्युत उपलब्ध होनी चाहिए। परिवहन- यदि उद्योग क्षेत्र तक उचित परिवहन की व्यवस्था नहीं होगी तो कच्चे माल की उपलब्धता नहीं हो पायेगी साथ ही तैयार माल बाजार तक पहुँचने में भी कठिनाई होगी। उद्योग सदैव ऐसे स्थान पर स्थापित करना चाहिए जहाँ पर इन दोनों की सहज और पर्याप्त उपलब्धता हो। **(ग)** 1. मूल उद्योग 2. मध्यम या बड़े पैमाने 3. मत्स्य प्रसंस्करण 4. उपभोक्ता उद्योग **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 18 उद्योग : कुछ विषय अध्ययन

(क) 1. इस्पात उत्पादन के लिए लौह-अयस्क (कच्चा लोहा), कोयला, चूना-पत्थर तथा मैंगनीज की आवश्यकता होती है। 2. टिस्को को लोह-अयस्क की प्राप्ति झारखण्ड व उड़ीसा की खानों से होती है। 3. ओसाका जापान के वस्त्र उद्योग का एक महत्त्वपूर्ण औद्योगिक शहर है साथ ही राष्ट्र के एक बड़े बन्दरगाह के रूप में भी विकसित है। इसके चारों ओर विस्तृत मैदान सूती वस्त्र मिलों के लिए उपयुक्त है। इस कारण से इसे जापान का मैनचेस्टर कहा जाता है। 4. चीनी उद्योग गन्ना उत्पादक क्षेत्रों के आसपास इसलिए स्थापित किए जाते हैं जिससे उन्हें कच्चे माल की उपलब्धता आसानी से हो सके तथा परिवहन का खर्चा भी कम आए। 5. भारत में तेल शोधक कारखानें, मथुरा, मुंबई, ट्राम्बे, बरौनी, बोनाइगाँ, कोची, विशाखापत्तनम, जामनगर, चेन्नई, हल्दिया तथा नूनमाटि में स्थित हैं। डिम्बोई (असम) का तेल शोध्रक कारखाना सबसे पुराना है। **(ख)** 1. भारत में वस्त्र उद्योग बहुत ही पुराना उद्योग है। यहाँ पर सूती, रेशमी तथा ऊनी वस्त्रों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। सूती वस्त्र उद्योग एक महत्त्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग है। भारत में यह एक घरेलू उद्योग था। जुलाहे अपने घरों में ही कपड़ा बनाने का कार्य करते थे। भारत में सूती वस्त्र बनाने के कई कारखाने हैं। देश में कपास की उपलब्धता, सस्ता श्रम, ब्रिटेन निर्मित मशीनों की पहुँच तथा तटीय जलवायु सूती वस्त्र उद्योग के विकास में सहायक हैं। सूती वस्त्र उद्योग का केन्द्रीकरण मुम्बई तथा अहमदाबाद में है। क्योंकि महाराष्ट्र और गुजरात में सबसे अधिक कपास का उत्पादन होता है। अहमदाबाद भारत का मैनचेस्टर कहलाता है। 2. अहमदाबाद गुजरात में साबरमती नदी के किनारे स्थित है। यह मुम्बई से 440 किमी. दूर स्थित है। यहाँ 1859 में प्रथम कपड़ा मिल स्थापित हुई थी। अहमदाबाद सूती वस्त्र उद्योग के स्थानीय हो जाने के निम्न कारण हैं- (क) कपास उत्पादन क्षेत्र से घिरा होने के कारण इसे स्थानीय कच्चा माल हमेशा उपलब्ध रहता है। (ख) क्षेत्र की जलवायु नम है जो कताई-बुनाई मिलों के लिए लाभदायक है। (ग) गुजरात व महाराष्ट्र पश्चिमी भारत के अत्यंत घने बसे क्षेत्रों में से हैं। मिलों में काम करने के लिए कुशल व अकुशल श्रमिक सरलता से मिल जाते हैं। (घ) यह मुम्बई पत्तन की सहायता से गुणवत्तायुक्त कच्ची कपास दूसरे देशों से आयात व तैयार माल का निर्यात आसानी से कर लेता है। (ङ) शहर में देश के अतिरिक्त बाजार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। (च) व्यावसायिक बैंकों द्वारा कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। वर्तमान में शहर में 50 से अधिक मिलें है। अहमदाबाद की मिलें मुम्बई की मिलों से छोटी है फिर भी यह शहर अच्छी किस्म के सूती वस्त्रों के लिए विख्यात है। 3. उद्योगों की स्थिति पर कई भौगोलिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, मानवीय तथा राजनैतिक कारक प्रभाव डालते हैं। ये कारक किसी भी उद्योग की सफलता व अस्तित्व के लिए अत्यन्त आवश्यक होते है। ये कारण इस प्रकार हैं- (क) निरन्तर कच्चे माल की आपूर्ति होना। (ख) उचित वेतन पर श्रमिकों का उपलब्ध होना (ग) पर्याप्त मात्रा में जलापूर्ति होना (घ) मशीनों को चलाने के लिये और प्रकाश हेतु विद्युत का उपलब्ध होना। (ङ) तैयार माल को पहुँचाने व कच्चे माल को लाने के लिए परिवहन की उपलब्धता होना। (च) बाजारों की उपलब्धता होना। (छ) कारखाने को लगाने के लिए तथा आगे विस्तार हेतु बड़े स्थान का उपलब्ध होना। (झ) पूँजी- आधुनिक उद्योगों के लिए बड़े निवेश की जरूरत होती है। (ज) सरकारी नीतियाँ भी उद्योगों पर प्रभाव डालती हैं। इस प्रकार उपर्युक्त कारक उद्योग को प्रभावित करते हैं। 4. सिलिकॉन वैली पश्चिमी मध्य कैल्फिोर्निया में स्थित है। यह पश्चिम यू.एस.ए. का उच्च विकसित औद्योगिक क्षेत्र है। वर्तमान में यह विश्व के सबसे बड़े विज्ञान उद्योगों' में से एक है। जहाँ सैंकड़ों उच्च तकनीकी वाले सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग स्थापित है। यह यू.एस.ए. का महत्त्वपूर्ण सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र है। इण्टेल, विश्व में माइक्रो-प्रोसेसर (सूक्ष्म संसाधक) निर्माण में अग्रणी कम्प्यूटर बनाने वाली एपिल कम्प्यूटर्स, ह्यूलेट पैकार्ड तथा सन माइक्रो सिस्टम जैसी कुछ बड़ी कंपनियाँ सिलिकान वैली में स्थित हैं। धनी उद्यमी नई कंपनियाँ खोलने हेतु वहाँ आते रहते हैं। कमचारी और कुशल श्रमिक भी समान रूप से आते रहते हैं। देश के विकास में इसका बहुत महत्त्व है। सिलिकान वैली में बहुत से भारतीय और चीनी पहले से ही सांताक्लाज और सैन जॉस, सैन फ्रांसिस्को के निकट डेरा डाले हुए हैं जो सॉफ्टवेयरों के विकास में लगे हैं। **(ग)** 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय-19 मानव संसाधन

(क) 1. मानव संसाधन से हमारा तात्पर्य किसी भी देश की उस जनसंख्या से है जो आर्थिक क्रियाओं से सलंग्न होती हैं। मानव का विकास, उसकी शिक्षा, बुद्धि कौशल, कार्यक्षमता, स्वास्थ्य एवम् परिश्रम पर निर्भर होता है। 2. देश और व्यक्ति दोनों के विकास के लिए मान संसाधनों का बहुत अधिक महत्त्व है। क्योंकि किसी भी देश के पर्याप्त संख्या में उच्चशिक्षित एवम् प्रशिक्षित लोग अधिक कुशलता से दुर्लभ संसाधनों को बर्बाद किए बिना उत्पादन कार्य कर सकते तथा देश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ा सकते है। 3. वर्तमान में भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ के लगभग है। 4. जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का कारण अशिक्षा, मृत्युदर का कम होना तथा जन्म दर में वृद्धि है। जन्मदर की वृद्धि पर रोक लगाकर जनसंख्या वृद्धि को रोका जा सकता है। **हॉट प्रश्न** – 1. भारत में लिंग संगठन या लिंगानुपात से तात्पर्य 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंग अनुपात कहते है। भारत में लिंग अनुपात 933 है अर्थात् प्रति 1000 पुरुषों में स्त्रियों की जनसंख्या 933 है। 2. जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। **(ख)** 1. जनसंख्या के घनत्व से इस बात का पता लगता है कि किसी क्षेत्र विशेष में प्रतिवर्ग किलोमीटर में कितने व्यक्ति निवास करते हैं। जनसंख्या को

स्थान के क्षेत्रफल से विभाजित करने पर प्रतिवर्ग किलोमीटर जनसंख्या का पता लग जाता है। संसार में कहीं पर जनसंख्या का समान वितरण नहीं हैं, अधिकतर लोग उन क्षेत्रों में रहते है जहाँ पर सुगम, सुरक्षित और प्राकृतिक संसाधन सुलभ होते है। जनसंख्या के घनत्व के आधार पर संसार को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। (क) उच्च घनत्व का क्षेत्र (ख) औसत घनत्व का क्षेत्र (ग) निम्न घनत्व का क्षेत्र 2. जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं- (क) भूमि- भूमि की विशेषता जनसंख्या को प्रभावित करती है। पहाड़ों और रेगिस्तानों की तुलना में मैदानी भागों में जनसंख्या अधिक होती है। (ख) जलवायु- जलवायु का भी जनसंख्या पर अधिक प्रभाव पड़ता है। लोग ज्यादा गर्म या ज्यादा ठंडी जलवायु वाले स्थानों पर रहना पसंद नहीं करते हैं। (ग) मृदा- उर्वर मृदाओं वाले क्षेत्र में बंजर जमीन की तुलना में जनसंख्या अधिक होती है। (घ) प्राकृतिक वनस्पति- कई उष्ण और नम जलवायु वाले क्षेत्रों में सघन वन मिलते हैं, सघन और अपारगम्य वन जनसंख्या वृद्धि को रोकते हैं। (ङ) उद्योग- किसी क्षेत्र में उद्योग का विकास रोजगार का अवसर बढ़ाता है और उसी के अनुरुप ही लोगों को आसपास रहने को आकर्षित करता है। (च) परिवहन साधन- किसी क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि परिवहन के साधनों की मात्रा व गुणवत्ता से सीधे सम्बन्धित है। (छ) खनिज संसाधन- खनिजों से भरपूर प्रदेश लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते है जिससे उन प्रदेशों की जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है। (ज) सरकारी नीतियाँ- कभी-कभी सरकारी नीतियाँ लोगों को संसार के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने को विवश कर देती हैं। 3. जनसंख्या का आयु के अनुसार वितरण सरकार को अनेक विकास कार्यक्रमों को तैयार करने में सहायक करता है। आयु की दृष्टि से जनसंख्या को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है- (1) 15 वर्ष से कम (2) 15 से 65 वर्ष (3) 65 वर्ष से अधिक। देश- 0-15 वर्ष 15-65 वर्ष, 65 वर्ष से अधिक योग भारत- 35%, 60%, 5%, 100% । कार्यशील आयुवर्ग 15 से 65 वर्ष आयु वर्गों की तुलना में बड़ा रहा है। 4. लिंग अनुपात की प्रतिकूलता के कारण निम्नवत् हैं- 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंग संगठन या लिंगानुपात कहते है। यदि किसी देश का लिंगानुपात 1000 है इसका तात्पर्य देश में पुरुषों और स्त्रियों की संख्या समान है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में लिंग अनुपात 933 या अर्थात् 1000 पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की जनसंख्या 933 थी। इसे प्रतिकूल लिंगानुपात कहते हैं। इसका प्रमुख कारण महिलाओं में मृत्युदर अधिक होने तथा कन्या भ्रूण हत्या होना है। केरल तथा पांडिचेरी में पुरुषों की संख्या स्त्रियों से कम है। **(ग)** 1. केरल 2. 2001 की जनगणनानुसार 65% 3. 1.04 बिलियन थी 4. उर्वर 5. शहरों **(घ)** 1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. असत्य 5. सत्य **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 20 संविधान की भूमिका

(क) 1. लोगों ने अंग्रेज सरकार की लोक विरोधी नीतियों का प्रतिरोध करने के लिए हड़ताले की तथा गाँधीजी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया। 2. समाज की गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए नियमों का होना बहुत आवश्यक है। **(ख)** 1. दहेज प्रथा- इसे वह धन व सम्पत्ति कहा जा सकता है जो विवाह के समय लड़की के पिता लड़के को देता है। यह भारत में अब एक सामाजिक बुराई बन गयी है। दहेज के कारण तलाक हो जाते है तथा दहेज के लोभी बहुओं को जला तक डालते हैं। इस बुराई को दूर करने के लिए हमारी सरकार ने 1961 में एक अधिनियम पारित किया, परन्तु यह आजतक प्रभावपूर्ण ढंग से लागू नहीं हो सका। 1986 में इसमें पुनः सुधार किया गया। इस नियम के तहत यदि कोई व्यक्ति दहेज माँगता है तो उसे कम से कम 5 वर्ष का कारावास तथा 15 हजार रुपये जुर्माना हो सकता है। लोगों में जागरुकता बढ़ाने के लिए अखबारों और दूरदर्शन द्वारा भी पूर्ण प्रयास किया जा रहा है। 2. भारत में सर्वोच्च अदालत अर्थात् सुप्रीम कोर्ट की संविधान के सम्बन्ध में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यदि कोई सरकार अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति हेतु ऐसे नियम बनाती हैं जो देश व समाज के हित में नहीं हैं, तो जनता उच्चतम न्यायालय की शरण ले सकती है और न्यायालय के पास अधिकार है कि वह इन नियमों को अवैध घोषित कर सकता है। भारत की सर्वोच्च अदालत संविधान के सरंक्षक के रूप में कार्य करती है। **(ग)** 1. संविधान 2. 1930 3. 1961 4. 1956 5. दस्तावेज **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 21 भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ

(क) 1. प्रस्तावना का शाब्दिक अर्थ है 'कानूनी दस्तावेज का परिचय' प्रस्तावना हमारे संविधान का परिचय भी है और उसकी कुँजी भी है। इसमें संविधान के आदर्श और लक्ष्यों का उल्लेख मिलता है। 2. समाजवादी से हमारा तात्पर्य है कि संविधान की नजर में कोई छोटा या बड़ा न होकर सभी एक समान है। गरीब-अमीर सभी के साथ समान न्याय होगा। 3. धर्म निरपेक्षता का अर्थ है कि सरकार का कोई विशेष धर्म नहीं होगा। उसकी दृष्टि में सभी समान होंगे। धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा। 4. किसी भी देश के नागरिकों की उन्नति तथा व्यक्तित्व के विकास के लिए वहाँ की सरकार अपने नागरिकों को कुछ विशेष अधिकार प्रदान करती है, जिन्हें मूल अधिकार कहा जाता है। भारतीय संविधान ने अपने नागरिकों को छह मूल अधिकार प्रदान कर रखे हैं। संविधान के अनुच्छेद तीन में इनका वर्णन है। **(ख)** 1. मौलिक अधिकार- भारतीय संविधान ने अपने नागरिकों के व्यक्तित्व विकास व उन्नति हेतु उन्हें छह मौलिक अधिकार प्रदान कर रखे हैं। इनका वर्णन संविधान के अनुच्छेद तीन में मिलता है। ये मौलिक अधिकार इस प्रकार हैं- (क) समानता का अधिकार- कानूनी समानता, नागरिक समानता, सामाजिक समानता। (ख) स्वतन्त्रता का अधिकार- वाणी की स्वतन्त्रता, बिना हथियार सभा करना, संगठन बनाना, सम्पूर्ण भारत में बिना रोक-टोक यात्रा करना, कोई भी व्यवसाय या व्यापार करना, कहीं भी रहना और सम्पत्ति खरीदना सिर्फ जम्मू कश्मीर को छोड़कर। (ग) धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार- किसी भी धर्म को स्वीकार करना, उसका प्रचार-प्रसार। (घ) शोषण के विरुद्ध अधिकार- (ङ) सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार (च) संवैधानिक उपचारों का अधिकार। यह सबसे महत्त्वपूर्ण मौलिक अधिकार है। यदि किसी मौलिक अधिकार का हनन होता है तो उसकी सुरक्षा के लिए न्यायालय की शरण ली जा सकती है। मौलिक अधिकारों को न्यायालय द्वारा लागू किया जाता है इसलिए न्यायालयों को नागरिकों के अधिकारों का सरंक्षक माना जाता है। 2. कमजोर वर्गों को सुविधाएँ- हमारे संविधान के माध्यम से समाज के पिछड़े व निम्न वर्ग को ऊपर उठाने के लिए उन्हें कुछ सुविधाएँ प्रदान की गई हैं जो इस प्रकार हैं- (क) संविधान की धारा 17 के द्वारा अस्पृश्यता (छुआ-छूत) को निषिद्ध घोषित किया गया है अब यह एक दण्डनीय अपराध है। (ख) संविधान का अनुच्छेद 46 उपलब्ध कराता है, ''कमजोर वर्ग को शैक्षिक व आर्थिक सभी प्रकार के शोषण से बचाया जाएगा।'' (ग) निश्चित कार्य में अनुसूचित जाति 15%, अनुसूचित जनजाति 7.5% व अन्य पिछड़ा वर्ग हेतु 27% स्थान आरक्षित हैं। (घ) शैक्षिक संस्थानों और अन्य सरकारी सेवाओं में उनके लिए स्थान आरक्षित हैं। (च) लोक सभा व राज्य सभा तथा विधानसभा में कुछ

स्थान अनुसूचित जाति व जनजाति हेतु आरक्षित हैं। (छ) जनजातीय क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा प्रसार के लिए व्यावसायिक व शैक्षिक संस्थाएँ पहले ही खोली जा चुकी हैं। (ज) अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग व प्रशिक्षण आरक्षित है। 3. मौलिक कर्त्तव्यों का महत्त्व- अधिकार व कर्त्तव्य दोनों एक-दूसरे के पूरक है यदि हम कोई अधिकार चाहते हैं तो हमें अपने देश व समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को भी पूरा करना बहुत ही आवश्यक है। कर्त्तव्य पालन से हमारा लोकतंत्र मजबूत होगा। उदाहरण के लिए, यदि हमें धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार है तो हमारा यह मौलिक कर्त्तव्य होगा कि हम अन्य धर्म के मानने वालों का सम्मान करें, उनके धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप न करे और धार्मिक विचारों को ठेस न पहुँचाए। यदि हमें अधिकार चाहिए तो हमें अपने कर्त्तव्यों का अवश्य पालन करना होगा। यही मौलिक कर्त्तव्य का महत्त्व है। 4. हमारा संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया, इसी दिन से हमारा देश संपूर्ण प्रभुत्त्व सम्पन्न गणराज्य घोषित हुआ। हमारे देश की जनता की आवश्यकताओं ओर स्थितियों के अनुरुप अच्छे विचारों को धारण कर उन्हें संविधान का महत्त्वपूर्ण अंग बनाया गया है। यहीं कारण है कि हमारा संविधान संसार के सर्वश्रेष्ठ संविधानों की श्रेणी में आता है। यह विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। हमारे संविधान में लचीलापन है अर्थात् इसमें संशोधन किए जा सकते हैं। संशोधनों को संसद के दो सदनों द्वारा पारित किया जाता है और उसे राष्ट्रपति से स्वीकृत करना अनिवार्य है। इन विशेषताओं के कारण ही इसे विश्व का श्रेष्ठ संविधान माना जाता है। 5. मौलिक कर्त्तव्य- अधिकार और कर्त्तव्य दोनों का घनिष्ठ सम्बंध है। दोनों एक-दूसरे के लिए आवश्यक है। यदि जनता को कुछ जिम्मेदारी नहीं सौंपी जाएगी तो वे अपने अधिकारों का मूल्य न जान पाएगी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 42 वें संविधान संशोधन 1976 के अन्तर्गत नागरिकों को कुछ जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं जिन्हें मौलिक कर्त्तव्य कहा जाता है। ये कर्त्तव्य संख्या में 10 हैं- (क) राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना। (ख) राष्ट्र को सुरक्षित रखना। (ग) राष्ट्र के प्रति निष्ठावान होना। (घ) श्रेष्ठ आदर्शों का पालन करना। (ङ) सौहार्द्र को प्रोत्साहित करना। (च) राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आदर होना (छ) हमारे प्राकृतिक वातावरण का विकास एवं सरंक्षण करना (ज) अच्छे समाज का निर्माण करना (झ) सांस्कृतिक विरासत का सरंक्षण करना (ट) सामूहिक गतिविधियों में भाग लेना। **(ग)** 1. 42 वें 2. कानून 3. संवैधानिक उपचारों का अधिकार 4. संपत्ति 5. सामाजिक समानता **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. असत्य। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 22 सरकार का संसदीय रूप

(क) 1. संसद सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्न योग्ताएँ होनी चाहिए- (क) उसकी आयु 25 वर्ष (लोकसभा) या 30 वर्ष (राज्यसभा) होनी चाहिए। (ख) सरकार में किसी लाभदायक पद पर न हो। (ग) भारत का नागरिक हो तथा जिस राज्य का निवासी हो, वहाँ की मतदाता सूची में उसका नाम होना चाहिए। (घ) उसका मस्तिष्क संतुलित होना चाहिए। 2. राज्य सभा एक स्थायी सदन है, यह कभी भंग नहीं होता। इसके सदस्यों का चुनाव 6 वर्ष के लिए होता है। इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष बार रिटायर होते रहते हैं। 3. कभी-कभी एक नियम को तुरन्त लागू करना होता है, जब संसद का सत्र नहीं चल रहा होता है। इस स्थिति में राष्ट्रपति एक आदेश जारी कर सकता है जिसे अध्यादेश कहा जाता है। यह छोटी अवधि के लिए प्रभावी रह सकता है। 4. एक विधेयक नियम बनने से पहले तीन स्तरों से गुजरता है उसके बाद वह विधेयक पारित होकर नियम बनता है। ये प्रक्रिया इस प्रकार है- (क) प्रथम वाचन (ख) द्वितीय वाचन (ग) तृतीय वाचन। 5. संसद की शक्तियाँ इस प्रकार हैं - (क) विधि निर्माण सम्बन्धी (ख) वित्त नियन्त्रण सम्बन्धी (ग) मंत्रियों की समिति (घ) न्यायिक कार्य (ङ) चुनावी कार्य (च) संविधान में संशोधन करना (छ) आपातकाल की घोषणा करना। **हॉट प्रश्न –** 1. वह संस्था (अंग) जो इन कानूनों के आधार पर विवादों का निर्णय लेती है तथा न्याय की स्थापना करती है, उसे न्यायपालिका कहा जाता है। 2. राज्यसभा के सदस्यों की योग्यताएँ – (क) वह भारत का नागरिक हो। (ख) वह 30 वर्ष से कम आयु का न हो। (ग) वह अपराधि घोषित न किया गया हो। (घ) सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो। (ङ) वह जिस राज्य से चुनाव लड़ रहा है, उसकी मतदाता सूची में उसका नाम दर्ज हो। **(ख)** 1. एक सरकार सत्ता में तभी तक रह सकती है जब तक उसे सदन का समर्थन प्राप्त है। 2. लोकसभा का गठन- लोकसभा संसद का निम्न सदन है। यह जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों से बनती है। इसमें 550 तक सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 330 सदस्य राज्यों से तथा 200 सदस्य केन्द्रशासित प्रदेशों से जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। राष्ट्रपति ऐंग्लो इंडियन समुदाय के दो सदस्यों को नामांकित कर सकता है। इसका चुनाव गुप्त मतदान द्वारा जनता द्वारा किया जाता है। इसकी अवधि 5 वर्ष के लिए होती है। राष्ट्रपति द्वारा इसे समय से पूर्व भी भंग किया जा सकता है। आपातकाल में इसकी अवधि एक बार में 6 मास तक बढ़ाई जा सकती है। लेकिन यह अवधि तीन वर्ष से अधिक नहीं होगी। लोकसभा की सीटें राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों की जनसंख्या के आधार पर निश्चित होती हैं। 3. समवर्ती सूची- इसमें 47 विषय सम्मिलित हैं जिस पर केन्द्र तथा राज्य सरकारें दोनों नियम बना सकती हैं, किन्तु ऐसी स्थिति में केन्द्र सरकार (संसद) द्वारा निर्मित कानून राज्य सरकार से अधिक मान्य होगा। इसके प्रमुख विषय इस प्रकार हैं- विवाह, चिकित्सा, संयुक्त परिवार, अन्य व्यवसाय, पुस्तकें, समाचार पत्र, ट्रेड यूनियन, श्रम कल्याण, कारखानें, धार्मिक संस्थाएँ, दीवानी तथा फौजदारी प्रक्रियाएँ, विद्युत आदि। अन्य विषय इस सूची में नहीं है 'अवशिष्ट शक्तियाँ' कहलाती हैं। 4. संसद में लोकसभा अधिक शक्तिशाली है। इसका चुनाव जनता द्वारा किया जाता है इसलिए यह जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। संसदीय मामलों में लोकसभा को अधिक महत्त्व दिया जाता है। धन विधेयक केवल लोकसभा में ही प्रस्तुत किया जा सकता है राज्यसभा में नहीं। मंत्रियों की समिति तब तक सत्ता में रह सकती है जब तक उसे लोकसभा का विश्वास प्राप्त है। उपरोक्त कारणों से लोकसभा अधिक ताकतवर है। **(ग)** 1. 66 2. श्रीमती सुमित्रा महाजन 3. अधिकारिक 4. 30 वर्ष 5. राष्ट्रपति 6. 250 7. वक्ता **(घ)** 1. सत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य। **(ङ)** 1. न्यायपालिका- जो संस्था कानूनों के आधार पर विवादों पर निर्णय लेती है तथा न्याय की स्थापना करती है उसे न्यायपालिका कहा जाता है। सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा अन्य अधीनस्थ न्यायालय न्यायपालिका का गठन करते हैं। 2. कार्यपालिका- जो संस्था कानूनों को लागू करती है उसे कार्यपालिका कहते हैं। कार्यपालिका में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रिपरिषद के सदस्य सम्मिलित होते हैं, जो केन्द्र में कार्यपालिका का निर्माण करते हैं। राज्यों में राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद के सदस्य कार्यपालिका का निर्माण करते हैं। 3. संविधान में संशोधन- संविधान के किसी संशोधन के लिए संसद की सहमति होनी जरूरी है। संविधान के कुछ भाग संसद के दोनों सदनों से साधारण बहुमत से संशोधित किए जा सकते हैं तो कुछ अन्य संशोधनों के लिए दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होती है। 4.

धन विधेयक- राज्य के आय एवं व्यय से संबंधित विधेयक को धन विधेयक कहते हैं। इसे लोकसभा में दाखिल किया जा सकता है। लोकसभा में पारित होने के बाद इसे राज्य सभा में भेजा जाता है। अंत में इसे स्वीकृति के लिए राष्ट्रपति के पास भेजा जाता है। राष्ट्रपति इसे राज्य सभा के अनुमोदन न होने के बाद भी स्वीकृत कर सकता है। 5. राज्य सूची- इसमें 66 विषय सम्मिलित हैं जिन पर राज्य सरकारें कानून बनाती हैं प्रमुख विषय हैं, पुलिस, जेल, अधीनस्थ न्यायालय (उच्चन्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय के अतिरिक्त) अस्पताल, सफाई, मवेशियों का स्वास्थ्य, कृषि, सड़कें, वन, सिंचाई, मत्स्य, पशुपालन आदि। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 23 संघीय कार्यपालिका

(क) 1. केन्द्र सरकार का वास्तविक मुखिया (प्रधान) प्रधानमंत्री होता है। 2. जब किसी राज्य में संवैधानिक व्यवस्था समाप्त हो जाती है तो राष्ट्रपति, राज्यपाल की सलाह से राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर देता है। यह शुरु में 6 माह के लिए होता है। लेकिन विशेष परिस्थितियों में इसे दो वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। 3. भारतीय संघ का मुख्य कार्यकारी राष्ट्रपति होता है इसे संसद के दो सदनों तथा राज्य की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से एक संक्रमणीय मत पद्धति द्वारा (आनुपतिक प्रतिनिधित्व) के आधार पर गुप्त मतदान द्वारा चुना जाता है। **(ख)** 1. प्रधानमंत्री की प्रमुख शक्तियाँ व कार्य- राष्ट्रपति लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल के नेता को प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त करता है। यदि किसी दल को बहुमत नहीं मिलता है तब दो या अधिक दल मिलकर अपना नेता चुनते हैं। ऐसी सरकार को साझा या गठबंधन सरकार कहते हैं। इस प्रकार चुने गए नेता को ही प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाता है। प्रधानमंत्री और उसकी मंत्रिपरिपद संघीय सरकार का महत्त्व पूर्ण अंग है। प्रधानमंत्री सरकार का वास्तविक प्रधान होता है। वह सभी मंत्रियों को नियुक्त व पदच्युत करता है। संसद में राष्ट्रीय नीति के विषय में की जाने वाली सभी महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ प्रधानमंत्री ही करता है। सरकार की सफलता अथवा असफलता प्रधानमंत्री पर निर्भर करती है। कार्य व शक्तियाँ- सरकार के प्रधान के तौर पर प्रधानमंत्री देश के सभी बाह्य (विदेशी) और आन्तरिक मामलों की देखरेख करता है। (क) वह मंत्रिपरिषद के सदस्यों की सूची बनाकर उनके विभागों का आवंटन करता है। (ख) वह सभी मंत्रियों के कार्यों की देखभाल करता है। जरूरत पड़ने पर उन्हें सलाह देता है। विभिन्न मन्त्रालयों में तालमेल रखता है। (ग) वह राष्ट्रपति तथा मंत्रिपरिषद के बीच कड़ी का काम करता है। (घ) वह मंत्रिमंडल तथा मंत्रिपरिषद की अध्यक्षता करता है। (ङ) वह सरकार का प्रमुख प्रवक्ता व लोकसभा का नेता होता है। (च) वह राष्ट्रपति को लोकसभा का सत्र बुलाने, स्थगित या भंग करने की सलाह दे सकता है। इसीलिए उसकी स्थिति उपरोक्त कार्यों के कारण महत्त्वपूर्ण होती है। 2. राष्ट्रपति की शक्तियाँ- राष्ट्रपति भारतीय संघ का कार्यकारी प्रधान होता है। वह कार्यपालिका के उच्च अधिकारियों की नियुक्ति करता है। वह राज्य के राज्यपालों, केन्द्रशासित प्रदेशों के आयुक्तों, संघीय लोकसभा आयोग के चेयरमैन तथा सदस्यों, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश व उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति करता है। वह विदेशों में राजदूतों की नियुक्ति करता है। विदेशों से की गई सन्धियाँ उसी के द्वारा हस्ताक्षरित होती हैं। राष्ट्रपति को निम्न शक्तियाँ प्राप्त हैं- (क) विधायी शक्तियाँ (ब) न्याय सम्बन्धी शक्तियाँ, वित्तीय शक्तियाँ तथा आपातकालीन शक्तियाँ प्राप्त होती है। लेकिन यह वास्तव में प्रधानमंत्री की सलाह से कार्य करता है। उसमें निहित शक्तियों का प्रयोग प्रधानमंत्री तथा उसकी मंत्रिपरिषद ही करती है। **(ग)** 1. 35 वर्ष 2. 5 3. श्री प्रणव मुखर्जी 4. प्रधानमंत्री **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य।

अध्याय- 24 न्यायपालिका

(क) 1. सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। 2. संविधान का कानून संबंधी व मूलाधिकार सम्बन्धी भाग न्यायाधिकार से संबंध रखता है। 3. प्रथम लोक अदालत सर्वप्रथम दिल्ली में 1985 में लगाई गई। 4. लोक अदालत एक स्वैच्छिक संस्था है जिसकी अध्यक्षता अवकाश प्राप्त न्यायाधीश करते हैं। इनसे आम जनता को न्याय त्वरित एवं कम खर्चे में प्राप्त हो जाता है। वर्तमान में इनका चलन बढ़ा है। **(ख)** 1. सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख कार्य व न्यायाधिकार इस प्रकार से हैं- मूलभूत न्यायाधिकार- सर्वोच्च न्यायालय निम्न के मध्य उत्पन्न विवादों का निपटारा करता है-(क) भारत सरकार व राज्य सरकार। (ख) भारत सरकार व अन्य कोई राज्य सरकार जिसका किसी राज्य सरकार से विवाद हो। (ग) दो अथवा अधिक राज्य सरकारों के मध्य विवाद। याचकीय न्यायाधिकार- सर्वोच्च न्यायालय उच्च न्यायालयों के निम्न तीन प्रकार के मामलों में दिए गए निर्णयों से संबंधित याचिकाओं की सुनवाई करता है। (क) वैधानिक मामले (ख) अपराधिक मामले (ग) संविधान व्याख्या से संबंधित मामले। सलाहकारी एवं परामर्शदात्री न्यायाधिकार- राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय से कानून से संबंधित मामलों में सलाह ले सकता है। कार्य- (क) सर्वोच्च न्यायालय हमारे संविधान का सरंक्षक है। (ख) वह मूलाधिकारों की रक्षा करता है। वह ऐसे सरकारी कानूनों को अवैध घोषित कर सकता है जो भारतीय नागरिकों के अधिकारों का हनन करते हैं। (ग) सर्वोच्च न्यायालय अभिलेख न्यायालय भी है इसके निर्णयों की नजीरें वकीलों द्वारा अन्य अदालतों में प्रयुक्त की जाती है। (घ) सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालयों के कार्यों पर भी नियंत्रण रखता है। इसका क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण देश में विस्तृत है। 2. उच्च न्यायालय का न्यायाधिकार- राज्यों में उच्च न्यायालय ही सबसे बड़ा न्यायालय होता है इसका न्यायाधिकार इस प्रकार है- (क) मूलभूत न्यायाधिकार सीमित होता हे। लेकिन मूल अधिकारों, तलाक, वसीयत, विवाह से संबंधित कानून के मामले सीधे ही उच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए जा सकते हैं। (ख) उच्च न्यायालय के पास अधिकार होता है कि वह मूल अधिकारों को लागू करने के सम्बन्ध में लिखित आदेश (रिट) जारी करें। (ग) उच्च न्यायालयों के पास संविधान की व्याख्या करने का अधिकार होता है। इस अधिकार को न्यायिक पुनरावलोकन के अधिकार के रूप में भी जाना जाता है। याचकीय न्यायाधिकार- उच्च न्यायालय अपने अधीनस्थ न्यायालयों द्वारा दिए गए निर्णयों के विरुद्ध अपीलों (प्रार्थनाओं) की सुनवाई करता है, चाहें वे दीवानी की हों या फौजदारी की। यह राजस्व न्यायालयों की अपीलें भी सुनता है। 3. राजस्व न्यायालय- इस प्रकार के न्यायालय भूमि की लगान से संबंधित मामलों की सुनवाई करते हैं। जिला स्तर पर राजस्व समिति (बोर्ड ऑफ रेवन्यू) सर्वोच्च स्तर की प्राधिकृत संस्था होती है। इसका अध्यक्ष मंडलीय कमिश्नर होता है। उसके अन्तर्गत जो सहायक उप कमिश्नर होते हैं, उसके कार्य में सहायता करते हैं उनको राजस्व अधिकारी (कलेक्टर) कहते हैं। इसके साथ ही तहसीलदार, नायब तहसीलदार और पटवारी होते हैं जो मंडल, ब्लॉक और ग्राम स्तर पर कार्य करते हैं। **(ग)** 1. मूल अधिकारों 2. 33,000 3. 62 4. अवकाश प्राप्त 5. जिला 6. दीवानी **(घ)** 1. असत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. सत्य। **(ङ)** 1. सर्वोच्च न्यायालय पूरे देश में एक होता है जो उच्च न्यायालयों के निर्णयों के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करता है। उच्च न्यायालय राज्य में एक होता है ये अपनी अधीनस्थ अदालतों के निर्णयों के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करता है। 2. लोक अदालत एक स्वैच्छिक संस्था है जिसके

अध्यक्ष अवकाश प्राप्त न्यायाधीश होते है यह मुकदमों की त्वरित सुनवाई कर कम खर्च में न्याय प्रदान करती हैं। अधीनस्थ न्यायालय जिला स्तर पर होते है तथा ये दीवानी और फौजदारी संबंधी वादों को सुनकर उनका निस्तारण करते हैं। **परियोजना कार्य-** छात्र स्वयं करें।

अध्याय- 25 सामाजिक न्याय

(क) 1. वैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था को सुचारु ढंग से चलाने के लिए वर्ण व्यवस्था को जन्म दिया गया था। लेकिन उत्तर वैदिक काल तक आते-आते यह वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में बदल गई। व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेगा उसी के व्यवसाय को करेगा अन्य व्यवसाय नहीं कर सकता। जबकि पहले ऐसा नहीं था। वैदिक काल में व्यक्ति अपना वर्ण व कार्य बदल सकता था। 2. आधुनिक काल में लोगों की मानसिकता भी बदली है तथा यातायात व संचार के साधनों एवं शिक्षा के द्वारा अब जाति व्यवस्था में परिवर्तन होता जा रहा है। हमारे संविधान ने भी छुआ-छूत को दण्डनीय अपराध घोषित किया है। इसका भी समाज पर प्रभाव पड़ा है। 3. संविधान द्वारा अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था की है, जिससे उनकी स्थिति में सुधार हुआ है और आज ये लोग सरकारी सेवाओं में उच्चपदों पर आसीन है। **(ख)** 1. सामाजिक न्याय का अर्थ है कि सामाजिक दृष्टिकोण से नागरिकों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। सामाजिक न्याय समाज में तभी कायम रह सकता है, जब सभी लोगों को समान समझा जाता है तथा सभी मनुष्यों को अपने विकास के समान व पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं। धर्म, लिंग, रंग व जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। भारतीय समाज में अभी भी जाति, वर्ण, धर्म, भाषा, लिंग की बुराइयाँ व्याप्त हैं। यद्यपि सरकारी स्तर तथा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा व समाज सुधारकों के भरसक प्रयास से इसमें परिवर्तन तो आया है। लेकिन गाँवों में स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है। अभी सम्पूर्ण सामाजिक न्याय मिलना बाकी है। 2. भारतीय समाज में पूर्व की अपेक्षा स्त्रियों की स्थिति में बदलाव आया है लेकिन अभी इसे पूर्ण संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। आज स्त्रियाँ पढ़-लिखकर आगे बढ़ने लगी हैं। वे सेना व पुलिस में अधिकारी हैं, कार्यालयों, विद्यालयों में कार्यरत है। लेकिन अभी भी उनकी दशा में काफी सुधार की आवश्यकता है। सरकारी व्यवस्था द्वारा भी उनकी दशा को सुधारने का प्रयत्न किया जा रहा है। स्त्रियों की शिक्षा हेतु उन्हें निःशुल्क शिक्षा, पाठ्यपुस्तक तथा छात्रवृति की व्यवस्था की गई है। उन्हें पैत्रिक सम्पत्ति में कानून अधिकार दिया गया है। उनके अधिकारों के लिए समाज कल्याण के केन्द्रीय बोर्ड का गठन किया गया है। जिसका दायित्व उनको शिक्षा प्रदान कर सामाजिक स्वतन्त्रता प्रदान करना है। आज गाँवों में भी महिलाएँ सरपंच, पंच आदि बनी हैं। 3. भारतीय समाज में बच्चों की स्थिति कुछ अच्छी नहीं कही जा सकती है। जिन बच्चों को स्कूल जाना चाहिए, वे कचरे के ढेर से कबाड़ ढूढ़ते नजर आते हैं। उन्हें शिक्षा से वंचित रहना पड़ रहा है। बच्चों को कारखानों में बाल श्रमिक के रूप में काम करना पड़ता है। जहाँ उन्हें कम मजदूरी मिलती है और उनका शोषण होता है। सुधार के उपाय- यद्यपि हमारी सरकार ने बाल श्रम को अवैध घोषित कर रखा है। बच्चों के लिए सुधार गृह खोले गए हैं। सरकारी विद्यालयों में मुफ्त शिक्षा, पुस्तकें तथा दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई है। स्वयंसेवी संस्थाएँ भी इस दिशा में काम कर रही है। लेकिन बढ़ती जा रही महँगाई तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण बच्चों को अभी भी कार्य करना पड़ रहा है। यूनीसेफ तथा यूनेस्कों जैसी संस्थाएँ बच्चों के कल्याण हेतु सम्पूर्ण विश्व में कार्य कर रही हैं। **(ग)** 1. रुग्ण इकाइयों में 2. समाज कल्याण के केन्द्रीय बोर्ड 3. इंदिरा गाँधी **(घ)** 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. असत्य ।

अध्याय- 26 अस्पृश्यता : एक सामाजिक अभिशाप

(क) 1. सरकारी प्रयासों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के योगदान से अस्पृश्यता की कुप्रथा धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। वर्तमान में सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के लोग ट्रेनों, बसों में एक साथ यात्रा करते हैं तथा स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा भी प्राप्त कर रहे हैं। 2. अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए संचार साधनों तथा स्वैच्छिक संस्थाओं का काफी योगदान है। सभी लोग एक साथ बिना किसी भेदभाव के एक ही वाहन से यात्रा करते हैं। सिनेमा एक साथ देखते हैं। होटलों व पार्कों में जाते हैं। सरकार ने भी अस्पृश्यता को दण्डनीय अपराध घोषित किया है। **(ख)** 1. हमारी सरकार ने अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए नागरिक अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत 1955 से इसे दण्डनीय अपराध घोषित किया है। सार्वजनिक स्थानों पर कहीं किसी के साथ जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसी नीति अपनाता है तो उसके लिए दण्ड विधान निश्चित है। 2. अस्पृश्यता के निवारण हेतु गाँधीजी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। गाँधीजी ने अस्पृश्यों को 'हरिजन' अर्थात् (भगवान का आदमी) कहा। वे उनकी बस्ती में जाकर रहते थे, उनके साथ खाना खाते थे तथा सफाई आदि का कार्य भी स्वयं करते थे। उन्होंने हरिजनों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और स्वतन्त्रता आन्दोलन में समाहित करने का भी प्रयास किया। गाँधीजी के आश्रम में उनके सभी अनुयायी उनके विचारों की अनुपालना करते थे। गाँधीजी ने अस्पृश्यता समाप्त करने को अपना लक्ष्य बना लिया था। उन्होंने एक बार कहा था कि अस्पृश्यता हमारे समाज के लिए कैंसर से भयंकर रोग के समान है। यह आदमी और भगवान दोनों के विरुद्ध है। 3. पहले समाज में हरिजनों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था लेकिन अब समाज में जागरुकता आने तथा शिक्षा का प्रसार होने से अब हरिजनों की स्थिति में भी परिवर्तन आया है। वे सरकारी सेवाओं में भी जा रहे हैं। 'सुलभ' नामक स्वयंसेवी संस्था द्वार हरिजनों के विकास हेतु कई कार्यक्रम चलाए जा रहे है। इस समय हरिजनों की अवस्था पूर्व की तुलना में ठीक है। अब उनके साथ सामाजिक व्यवहार में भी परिवर्तन आया है। उनके बच्चे सवर्णों के बच्चों के साथ स्कूल में पढ़ते है। वे भी समान परिवहन का उपभोग करते हैं। **(ग)** 1. पाप 2. हरिजन 3. अलगाव 4. भगवान का आदमी।

अध्याय- 27 सरकार की आर्थिक स्थिति

(क) 1. कृषि क्षेत्र का विकास हमारे देश के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है। इससे हमारी भोजन की मौलिक आवश्यकता की पूर्ति होने के साथ-साथ कई उद्योगों के लिए कच्चे माल की भी आपूर्ति होती है। 2. संचार की सुविधा से ग्रामीणों को बहुत लाभ हुआ है। यातायात के साधन उपलब्ध होने से वे अपने उत्पादनों को शहर ले जाकर अच्छे लाभ पर बेच सकते हैं तथा शहर से अपने लिए अच्छे बीज, खाद, कीटनाशक आदि ला सकते हैं। लोगों के पास जनसंचार के रेडियो, टेलिविजन भी प्रत्येक गाँव में पहुँच चुके है तथा टेलीफोन एवं मोबाइल फोन की सुविधा भी आज उपलब्ध है। 3. सरकार ने 'निर्धनता उन्मूलन' के अन्तर्गत कई योजनाएँ शुरू की है। ये इस प्रकार हैं- (क) समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (ख) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (ग) प्रधानमंत्री रोजगार योजना (घ) जवाहर ग्राम समृद्धि योजना (ङ) रोजगार आश्वासन योजना (च) महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना आदि। 4. द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61) में आरम्भ की गई थी। इसमें भारी एवं मूल उद्योगों का विकास करना मूल लक्ष्य था। यद्यपि इसमें सभी लक्ष्यों को पूरा तो नहीं किया जा सका। लेकिन देश के समृद्धिशील होने की दिशा में यह योजना मील का पत्थर साबित हुई। **(ख)** 1. प्रथम

पंचवर्षीय योजना (1951-56) में शुरु की गई थी। देश को स्वतन्त्रता मिलने के साथ उसके सामने सबसे बड़ा संकट खाद्यान्न का था। इसलिए इस योजना में कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। इसके साथ सिंचाई व विद्युत परियोजनाएँ भी थी। इस योजना काल में भांखड़ा नागल बाँध परियोजना जो सतलुज नदी पर हिमालय की बादियों में पंजाब के रोपड़ जिले में प्रारम्भ की गई। इस योजना के बाद हमारा देश धीरे-धीरे खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर होने लगा। 2. एन. आर. ई. पी. (राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम)- इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष 4 करोड़ लोगों को रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है। इसका लक्ष्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि चक्रों के दौरान पनपने वाली बेराजगारी के समय ग्रामीणों के उत्पादक गतिविधियों में लगाना और उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना। छठी पंचवर्षीय योजना में इसके अन्तर्गत 1 करोड़ सत्तर लाख रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए गए। 3. बहु-उद्देशीय परियोजनाओं का विकास- भारत में नदियों के रूप में अपार जल संसाधन मौजूद है। जल विद्युत शक्ति के उत्पादन तथा जल को सिंचाई एवं अन्य कार्यों में प्रयुक्त करने के लिए प्रमुख नदियों पर अनेक नदी घाटी परियोजनाएँ स्थापित की गई। ये परियोजनाएँ उनके उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं, अतएव इन्हें बहु-उद्देशीय परियोजना कहा जाता है। ये बिजली पैदा करती हैं, सिंचाई के लिए जल प्रदान करती हैं, बाढ़ पर नियंत्रण करती है, मिट्टी के अपरदन को रोकती है, वनारोपण, नौ परिवहन, मत्स्योत्पादन तथा मनोरंजन के लिए सुविधाएँ प्रदान करती हैं। 4. बेरोजगारी दूर करने के उपाय- हमारे देश में सर्वव्यापी बेरोजगारी के अनेक कारण हैं। जनसंख्या में अनावश्यक वृद्धि तथा दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली इसके सबसे प्रमुख कारण रहे है। सरकार ने रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु अनेक विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित कर रखे हैं इनमें से कुछ प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित है- (क) ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी योजना (आर. एल. ई. जी. पी.) प्रारम्भ सन् 1985 में। (ख) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (एन. आर. ई. पी.) (ग) स्वयं रोजगार हेतु ग्रामीण युवा प्रशिक्षण कार्यक्रम सन् 1979 में प्रारम्भ किया गया। (घ) समन्वित ग्रामीण विकास (आइ. आर. डी. पी.) (ङ) ऑपरेशन फ्लड- द्वितीय डेरी विकास कार्यक्रम (छ) कार्य के बदले भोजन कार्यक्रम (एफ. डब्लू. पी.) (च) मछली पालक किसान विकास संस्थान (छ) शहरी शिक्षित बेरोजगार आत्मनिर्भरता योजना। **(ग)** 1. 1961-66 2. पाँचवी 3. कृषि उत्पादन 4. अल्प रोजगार वाले लोगों के लिए रोजगार।